2018-19

सतलुज धारा

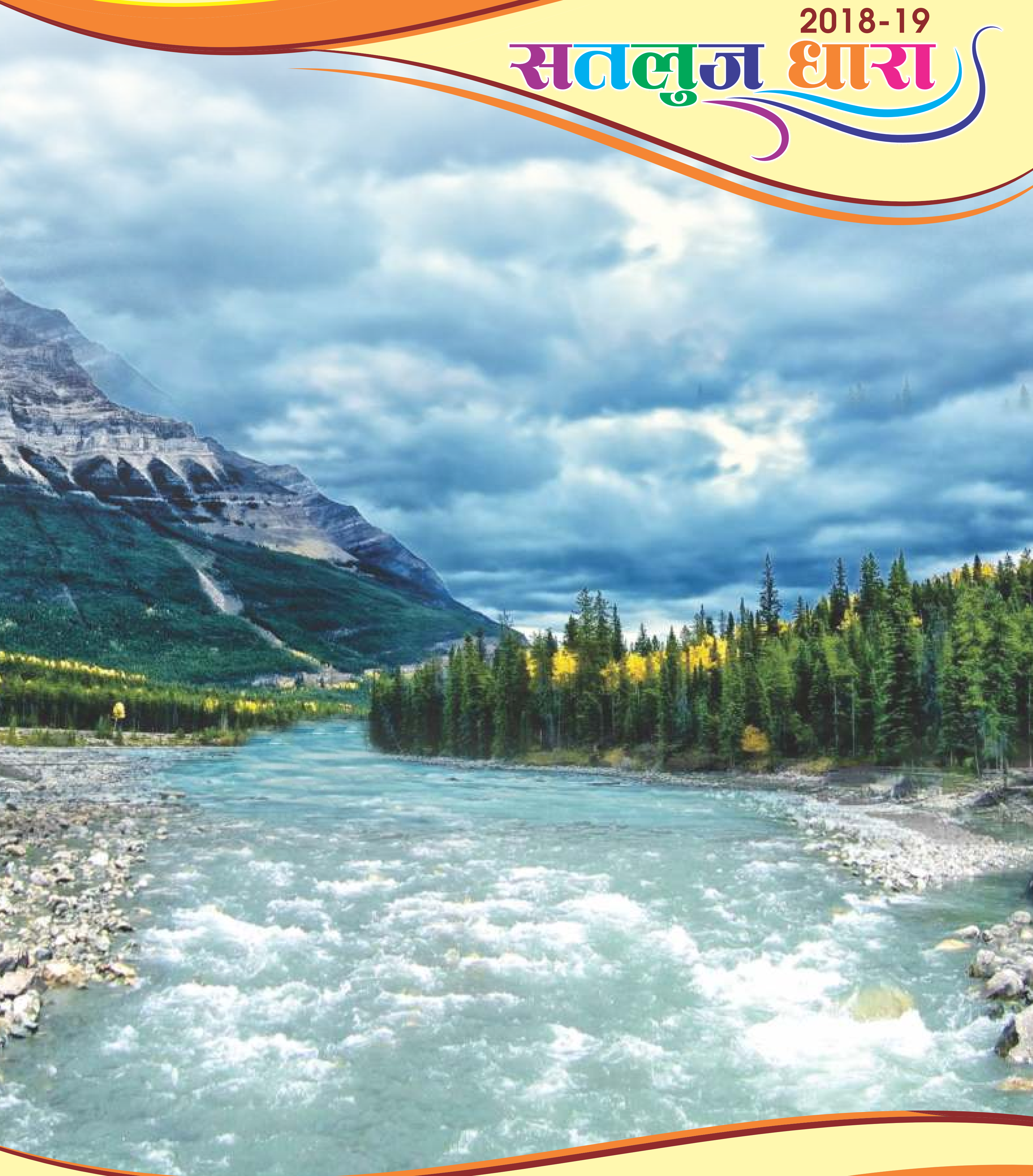

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब एवं चंडीगढ़

राजभाषा पुरस्कार

भुवनेश्वर, ओडिशा में आयोजित निगम में तैनात राजभाषा अधिकारियों के अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में माननीय महानिदेशक श्री राजकुमार जी के कर–कमलों से 'ख' क्षेत्र में वर्ष 2017–18 में राजभाषा हिन्दी में श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार ग्रहण करते हुए कार्यालय के अधिकारीगण।

अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.–1), चण्डीगढ़ एवं प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त श्रीमती मधु महाजन के कर–कमलों से उत्कृष्ट गृह पत्रिका के लिए 'सतलुज धारा' के अंक–2017 हेतु तृतीय पुरस्कार ग्रहण करते हुए क्षेत्रीय कार्यालय के अधिकारीगण।

2018-19
सतलुज धारा

क्षेत्रीय कार्यालय

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

पंचदीप भवन, प्लॉट सं.–03, सैक्टर–19ए
मध्य मार्ग, चंडीगढ़–160019

2018-19

सतलुज धारा

2019 सतलुज धारा

संरक्षक

सुनील तनेजा
क्षेत्रीय निदेशक

संपादक

राजेश शर्मा
सहायक निदेशक (राजभाषा)

संपादन सहयोग

अश्वनी कुमार, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक
कृष्णा कुमारी, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
तृप्ति दीक्षित, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। इनसे संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। लेखों/रचनाओं की मौलिकता के लिए लेखक/रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	रचनाकार/संदर्भ	पृष्ठ
1.	संदेश	प्रधान अधिकारी, मुख्यालय	i-iv
2.	संरक्षक की कलम से/संपादकीय	सुनील तनेजा / राजेश शर्मा	v-vi
3.	कर्मचारी राज्य बीमा योजना चंडीगढ़ एवं पंजाब क्षेत्र - एक नज़र	सुनील तनेजा	1-6
4.	हितलाभार्थियों के लिए उठाए गए विशेष कदम	डॉ. अमनदीप हस्तीर	6
5.	स्वास्थ्य पासबुक वितरण के साथ एम.आई.एम.पी. योजना का शुभारंभ	झलकियाँ	7
6.	निगम में प्रचलित प्रोत्साहन योजनाओं/प्रतियोगिताओं संबंधी आवश्यक बिन्दु	राजेश शर्मा	8-16
7.	निगम की सेवाओं को बेहतर बनाने के सुझाव	अमित बहादुर	17-18
8.	कविता परिचय	एक परिचय	19
9.	एक और परिवार चला आया है	सीमा तनेजा	20
10.	चमकता अँधेरा	वर्तिका पाण्डेय	21
11.	सरहदें	सविंदर सिंह भट्टी	21
12.	घर से दूर नौकरी करने वालों को समर्पित	तृप्ति दीक्षित	22
13.	पड़ाव	हरप्रीत कौर	23
14.	पिता	जगदीश चन्द सूर्यवंशी	23
15.	मेरा पार्क	दलबारा सिंह	24
16.	हास्य व्यंग्य	एक परिचय	25
17.	हँसगुल्ले	तृप्ति दीक्षित	26-27
18.	वजह	मनीषा	28
19.	विचार अमृत	एक परिचय	29
20.	जीने की राह	अश्वनी कुमार	30
21.	ख़ुशी क्या है? - एक विश्लेषण	प्रभात	31
22.	एक और एक ग्यारह.....	मुल्तान चन्द	32-33
23.	कैंटीन में लगी आग को बुझाने वाले कार्मिकों को विशेष सम्मान	झलकियाँ	34
24.	लेडी सहवाग : स्टार बल्लेबाज हरमनप्रीत कौर	सुभाष चन्द्र गुप्ता	35-36
25.	वीर शहीदों को सलाम	बिशम्बर दास	37
26.	मनुष्य की मानसिकता	निपेन्द्र सिंह	38
27.	सु-विचार	हरदयाल चन्द	38
28.	कहानी परिचय	एक परिचय	39
28.	संशय और अहंकार	वेद प्रकाश शर्मा	40
29.	अधिक लालच का फल	महेन्द्र धनिया	41
30.	ईश्वर जो भी करता है अच्छा ही करता है	सुनीता रानी	42
31.	हिन्दी दिवस	एक परिचय	43
32.	राजभाषा पखवाड़ा तथा हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन	विस्तृत रिपोर्ट	44-49
33.	यात्रा वृत्तान्त	एक परिचय	50
34.	रोज गार्डन, चंडीगढ़	चन्द्र भूषण	51
35.	ओडिशा-सूर्य, समुद्र और संस्कृति का समागम	श्याम कुमार	52-53
36.	पहाड़ चढ़ने का एक उसूल है कि झुक कर चलो, दौड़ो मत.....	साक्षी शर्मा	54-55
37.	स्वतंत्रता दिवस 2018 के अवसर पर आयोजित रंगोली प्रतियोगिता	झलकियाँ	56
38.	स्वतंत्रता दिवस 2018 का आयोजन	झलकियाँ	57
39.	नराकास (का.-1), चण्डीगढ़ के तत्वावधान में आयोजित कार्यशाला	झलकियाँ	58-59
40.	नौनिहालों की नज़र में गणतंत्र दिवस	बाल पेंटिंग	60
41.	कैमरे की नज़र से हमारे खिलाड़ी	गौरवपूर्ण झलकियाँ	61
42.	आपका ख़त मिला	प्रतिक्रियाएँ/शुभकामनाएँ	62-64

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
WEBSITE : www.esic.nic.in • www.esic.india.org

राज कुमार (भा.प्र.से.)
महानिदेशक

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब अपनी गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** का निरंतर प्रकाशन कर रहा है। निगम इकाइयों द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिकाओं में संपादन की दृष्टि से **'सतलुज धारा'** निःसंदेह अपना विशिष्ट स्थान रखती है तथा पाठकों को **'सतलुज धारा'** के आगामी अंक का बेसब्री से इंतजार रहता है। श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन एवं पत्रिका संपादन के क्षेत्र में क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चंडीगढ़ निरंतर पुरस्कार प्राप्त करता रहा है। मुझे बताया गया है कि दिनांक 9 फरवरी, 2018 को क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा श्रेष्ठ कार्यान्वयन के क्षेत्र में प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया है। इस बार भी श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु इस कार्यालय को मुख्यालय द्वारा प्रथम स्थान से पुरस्कृत किया गया है। गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** भी निगम मुख्यालय तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा पुरस्कृत होती रही है।

क्षेत्र में कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम के उपबंधों को बीमाकृत व्यक्ति तक पहुँचाने में राजभाषा हिंदी का विशेष योगदान है। राजभाषा हिंदी के माध्यम से ही हम जन–जन तक पहुँच सकते हैं। गृह पत्रिका केवल अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं बल्कि निगम की विभिन्न गतिविधियों एवं क्रियाकलापों को समेकित रूप से प्रस्तुत करने का एक सार्थक मंच भी है। मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका अपनी अनवरत यात्रा जारी रखेगी।

'सतलुज धारा' के इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी मंगल कामनाएं।

राजकुमार

(राज कुमार)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
WEBSITE : www.esic.nic.in • www.esic.india.org

संध्या शुक्ला (भा.ले.ले.से.)
वित्तीय आयुक्त

संदेश

यह उत्साहवर्धक सूचना है कि क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब अपनी गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** का निरंतर प्रकाशन कर रहा है। निगम इकाइयों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं में श्रेष्ठ संपादन की दृष्टि से **'सतलुज धारा'** की अपनी पहचान है। निश्चित ही यह चंडीगढ़ क्षेत्र में तैनात कार्मिकों के सहयोग एवं हिंदी के प्रति उनके प्रेम का परिचायक है। क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब के कार्मिकों का राजभाषा के प्रति यह लगाव न केवल सराहनीय है बल्कि उनकी मेहनत भी इसमें स्पष्ट परिलक्षित होती है। आशा है कि पहले की तरह यह अंक भी उद्देश्य को प्राप्त करेगा।

शुभकामनाओं सहित,

संध्या

(संध्या शुक्ला)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

Employees' State Insurance Corporation

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110 002

Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002

WEBSITE : www.esic.nic.in • www.esic.india.org

ए. के. सिन्हा

बीमा आयुक्त (राजभाषा)

संदेश

पंजाब क्षेत्र के कार्मिकों ने राजभाषा हिंदी के प्रति सदैव ही गंभीरता एवं निष्ठा दिखाई है जिसके लिए सभी अधिकारी एवं कर्मचारी प्रशंसा के पात्र हैं। महामहिम राज्यपाल, उत्तर प्रदेश श्री राम नाइक जी के कर–कमलों से 'ख' क्षेत्र में स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी में श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए फरवरी, 2018 में क्षेत्रीय कार्यालय, चण्डीगढ़ द्वारा प्रथम पुरस्कार प्राप्त करना तथा गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** को निगम मुख्यालय तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चंडीगढ़ द्वारा पुरस्कृत करना इस बात का जीवंत प्रमाण है।

पत्रिका प्रकाशन का कार्य स्वयं में ही चुनौतीपूर्ण है। गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** में प्रकाशित रचनाएँ पंजाब में तैनात कार्मिकों की सृजनशीलता एवं राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठा एवं समर्पण का बोध कराती हैं। मैं आशा करता हूँ कि पंजाब क्षेत्र के कार्मिक राजभाषा कार्यान्वयन तथा निगम की नीतियों के प्रति अपना समर्पण भाव बनाए रखेंगे तथा भविष्य में भी अपने उत्कृष्ट लेखों के द्वारा **'सतलुज धारा'** के प्रकाशन में निरंतर एवं सार्थक योगदान देते रहेंगे।

'सतलुज धारा' के आगामी अंक की सफलता की कामना के साथ,

(ए. के. सिन्हा)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
WEBSITE : www.esic.nic.in • www.esic.india.org

पी. बी. मणी
अपर आयुक्त (कार्मिक एवं प्रशासन)

संदेश

यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब अपनी गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** के अगले अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। मेरा विश्वास है कि यह पत्रिका क्षेत्रीय कार्यालय में तैनात कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में मूल लेखन और सृजनशीलता की ओर अग्रसर करेगी। गृह पत्रिका क्षेत्र में तैनात अधिकारियों और कर्मचारियों के भावों, क्षेत्रीय संस्कृति और कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों से पाठकों को अवगत कराती है। आशा है **'सतलुज धारा'** का यह अंक अपनी गरिमा के अनुकूल होगा तथा पाठकों की अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा।

'सतलुज धारा' के इस अंक के लिए संपादक मंडल और पंजाब क्षेत्र के कार्मिकों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

पी. बी. मणी

(पी.बी.मणी)

संरक्षक की कलम से...

बसंत दस्तक दे रहा है और फागुन की हवा एहसास दिला रही है कि होली निकट है। पंजाब में खेतों में पीली सरसों की चादर बिछी है। हम भी पंजाब कार्यालय से **'सतलुज धारा'** गृह पत्रिका का एक और अंक लेकर प्रस्तुत हैं।

पंजाब कार्यालय के कर्मचारी अपनी रचना धर्मिता की शान रखते हुए पत्रिका को श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर बनाने के प्रयास के साथ अपनी रचनाओं के साथ प्रस्तुत हैं।

राजभाषा में कार्य करना एक पावन कार्य भी है और हम 'ख' क्षेत्र में रहते हुए भी हिंदी में ही लगभग संपूर्ण कार्य निष्पादित कर रहे हैं तथा समय–समय पर हमें अनेक मंचों से इसके लिए पहचान मिलती रही है।

हिंदी में कार्य के साथ–साथ साहित्यिक रचना धर्मिता को संस्कृति के साथ बनाए हुए हम अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं। इसी रूप में **'सतलुज धारा'** का एक और अंक आपके समक्ष है। मैं सभी कर्मचारियों, अधिकारियों और राजभाषा शाखा के प्रयासों की सराहना करता हूँ। पत्रिका आपके समक्ष है–आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी, आपके सुझावों का स्वागत है।

सुनील तनेजा
क्षेत्रीय निदेशक

संपादक की कलम से...

किसी भी कार्यालय की गृह पत्रिका का मुख्य उद्देश्य कार्यालय विशेष के कार्मिकों के मन में पठन–पाठन तथा लेखन की अभिरुचि जागृत करना तो होता ही है, साथ ही पत्रिका से यह अपेक्षा भी रहती है कि वह कार्यालय विशेष की प्रमुख गतिविधियों को उजागर करे। **''सतलुज धारा''** इस दिशा में निरंतर गतिशील है। कार्मिकों के मन में हिन्दी के प्रयोग, प्रचार व प्रसार के प्रति अभिरुचि को बल देना भी **''सतलुज धारा''** का एक प्रमुख लक्ष्य है। क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ के समस्त अधिकारी व कर्मचारी राजभाषा नियमों/विनियमों के अनुपालन के प्रति बहुत ही सजग एवं गंभीर हैं। भुवनेश्वर में आयोजित निगम में तैनात अखिल भारतीय राजभाषा अधिकारी सम्मेलन में क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ को श्रेष्ठतम राजभाषा कार्यान्वयन के लिए मुख्यालय द्वारा प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इसके लिए क्षेत्रीय कार्यालय में तैनात सभी अधिकारी एवं कर्मचारी प्रशंसा के पात्र हैं।

जैसा कि विदित है कि भारत एक बहु–भाषी देश है। सभी की यही कामना है कि देश की सभी प्रादेशिक भाषाएँ फलें–फूलें और अपने–अपने प्रदेशों में सम्मानित होती रहें तथा हिन्दी इन सभी भाषाओं को जोड़ने वाली एक स्वर्णिम कड़ी की भूमिका निभाए। सभी का प्रयास यह है कि निगम के कामकाज के प्रति नियोजकों एवं बीमाकृत व्यक्तियों की निष्ठा एवं विश्वास को और अधिक सुदृढ़ और प्रभावी बनाया जाए तथा निगम की कार्यप्रणाली का व्यापक प्रचार व प्रसार कर निगम द्वारा देय हितलाभों तथा चिकित्सा प्रसुविधाओं के प्रति बीमाकृत व्यक्तियों को जागरुक किया जाए। यह पुनीत कार्य केवल और केवल जनमानस की सहज और सरल भाषा अर्थात् राजभाषा हिंदी का प्रयोग करते हुए ही प्रभावी ढंग से निष्पादित किया जा सकता है। वर्तमान में आवश्यकता इस बात की है कि हम आचार, विचार, व्यवहार, रहन–सहन तथा भाषा, सभी की दृष्टि से राजभाषा हिंदी को अपनाने का दृढ़ संकल्प लें और देश की अस्मिता, देश की सोच, देश के चिन्तन, देश की सभ्यता, देश की संस्कृति और स्वाभिमान के साथ गहराई से जुड़ें तथा राजभाषा के प्रति अपने नैतिक एवं वैधानिक दायित्व का निर्वाह करें। वैश्विक परिवेश में आज स्वयं एवं राष्ट्र के समग्र विकास के लिए यह समय की मांग भी है।

अंत में, मैं पत्रिका के संरक्षक, परामर्शदाता, मार्गदर्शक क्षेत्रीय निदेशक महोदय तथा उन सभी निगम कार्मिकों के प्रति भी अपना आभार प्रकट करना चाहूंगा जिनकी रचनात्मक अभिरुचि के फलस्वरूप ही **''सतलुज धारा''** निरंतर प्रवाहित हो रही है।

आपके तार्किक एवं मूल्यवान सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

मंगलकामनाओं सहित।

राजेश शर्मा
सहायक निदेशक
(राजभाषा)

भूमि, नभ, जल। सबकी सुरक्षा में अटल ।।
रात भले हो कितनी गहरी। डटे हुए हैं हम प्रहरी ।।

कर्मचारी राज्य बीमा योजना
चंडीगढ़ एवं पंजाब क्षेत्र – एक नज़र

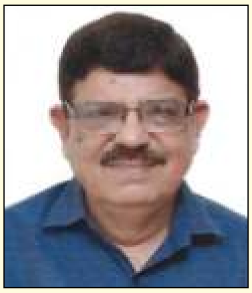

सुनील तनेजा
क्षेत्रीय निदेशक

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ संपूर्ण पंजाब प्रदेश एवं संघ शासित प्रदेश, चंडीगढ़ में कर्मचारी राज्य बीमा योजना के कार्यान्वयन के लिए उत्तरदायी है। तदनुसार योजना के कार्यान्वयन के लिए उपलब्ध सुविधाओं का विवरण निम्नानुसार है–

चंडीगढ़

दिनांक 31.03.2018 के आँकड़ों के अनुसार संघ शासित क्षेत्र, चंडीगढ़ में कर्मचारी राज्य बीमा योजना के अंतर्गत कुल 5210 नियोक्ता पंजीकृत हैं। तदनुसार चंडीगढ़ में कुल 2,16,700 कर्मचारी व 2,30,300 बीमाकृत व्यक्ति कर्मचारी राज्य बीमा योजना के अंतर्गत व्याप्त हैं। अतः चंडीगढ़ क्षेत्र में लगभग 9,20,000 व्यक्ति कर्मचारी राज्य बीमा योजना के अंतर्गत नकद एवं चिकित्सा हितलाभ प्राप्त कर रहे हैं।

क्र.सं.	मद	केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़
1.	व्याप्त जिले	01
2.	नियोक्ताओं की संख्या	5407
3.	शाखा कार्यालयों की संख्या	01
4.	कर्मचारियों की संख्या	216700
5.	बीमाकृत व्यक्तियों की संख्या	230300
6.	राजस्व (करोड़ रु)	100.06

बीमाकृत व्यक्तियों को निकटतम, सुलभ एवं बेहतरीन सुविधाएँ प्रदान करने के लिए चंडीगढ़ में एक शाखा कार्यालय एवं निदेशक, स्वास्थ्य सेवाएँ, चंडीगढ़ प्रशासन के सहयोग से दो औषधालय संचालित किए जा रहे हैं। इसके साथ–साथ द्वितीयक श्रेणी की स्वास्थ्य सेवाओं के लिए कर्मचारी राज्य बीमा निगम द्वारा स्वयं संचालित 70 बेड का कर्मचारी राज्य बीमा निगम अस्पताल, रामदरबार भी कार्य कर रहा है जिसका विवरण निम्नानुसार है–

क्र. सं.	अस्पताल का नाम	बिस्तरों की संख्या	औसत दैनिक ओ.पी.डी.	बिस्तर अधिभोग दर प्रतिशत	वर्ष 2017–18 के लिए औसत दैनिक व्यय (रु)
1.	कर्मचारी राज्य बीमा निगम आदर्श अस्पताल, रामदरबार, चण्डीगढ़	70	695	72%	4,96,009.64

निगम अस्पताल, रामदरबार में आयुष पद्धति से चिकित्सा की सुविधा भी उपलब्ध है।

इसके अतिरिक्त बीमाकृत व्यक्तियों को विशिष्ट व अति विशिष्ट चिकित्सा उपचार उपलब्ध करवाने के लिए विभिन्न विशिष्टताओं में 04 निजी अस्पतालों के साथ कैशलेस टाइ–अप भी किया गया है। उक्त अस्पतालों को आवश्यकतानुसार रेफरल व भुगतान कर्मचारी राज्य बीमा निगम अस्पताल, रामदरबार द्वारा स्वयं किया जाता है।

पंजाब

दिनांक 31.03.2018 के आंकड़ों के अनुसार पंजाब क्षेत्र में कर्मचारी राज्य बीमा योजना के अंतर्गत कुल 36,827 नियोक्ता पंजीकृत हैं। तदनुसार पंजाब में कुल 10,70,620 कर्मचारी व 11,66,450 बीमाकृत व्यक्ति कर्मचारी राज्य बीमा योजना के अंतर्गत व्याप्त हैं। अतः पंजाब क्षेत्र में लगभग 46,65,800 व्यक्ति कर्मचारी राज्य बीमा योजना के अंतर्गत नकद एवं चिकित्सा हितलाभ प्राप्त कर रहे हैं।

पंजाब राज्य में कुल 22 जिले हैं जिनमें से कर्मचारी राज्य बीमा योजना का विस्तार 21 जिलों तक है। वर्तमान में ये 21 जिले आंशिक रूप से व्याप्त हैं जबकि एक जिला अभी व्याप्त नहीं है। मुख्यालय के निदेशों के अनुरूप कर्मचारी राज्य बीमा योजना का विस्तार संपूर्ण पंजाब राज्य में करने के प्रयास किए जा रहे हैं तथा तत्संबंधी अधिसूचना शीघ्र ही जारी किए जाने की संभावना है। विस्तृत विवरण निम्नानुसार है–

क्र.सं.	मद	क्षे.का.,पंजाब	उ.क्षे.का.,लुधियाना	उ.क्षे.का.,जालंधर	कुल
1.	व्याप्त जिले	13	1	7	21
2.	नियोक्ताओं की संख्या	12173	15000	9654	36827
3.	शाखा कार्यालयों की संख्या	12	05	08	25
4.	कर्मचारियों की संख्या	464480	376880	229260	1070620
5.	बीमाकृत व्यक्तियों की संख्या	503050	415250	284150	1166450
6.	राजस्व (करोड़ रु)	331.69	237.73	152.28	721.7

बीमाकृत व्यक्तियों को निकटतम, सुलभ एवं बेहतरीन सुविधाएँ प्रदान करने के लिए पंजाब में क्षेत्रीय कार्यालय के अतिरिक्त दो उप क्षेत्रीय कार्यालय एवं 25 शाखा कार्यालय अपेक्षित सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं एवं निदेशक, स्वास्थ्य सेवाएँ, पंजाब के सहयोग से 69 औषधालय संचालित किए जा रहे हैं। द्वितीयक देखभाल के लिए निदेशक, स्वास्थ्य सेवाएँ, पंजाब के अंतर्गत 06 कर्मचारी राज्य बीमा योजना अस्पतालों का संचालन किया जा रहा है। इसके साथ–साथ कर्मचारी राज्य बीमा निगम द्वारा प्रत्यक्षतः एक निगम अस्पताल व दो औषधालय–सह–शाखा कार्यालयों का संचालन भी किया जा रहा है।

<table>
<tr><th>क्र.सं.</th><th colspan="2">स्थापना</th><th colspan="2">संख्या</th></tr>
<tr><td>1</td><td colspan="2">क्षेत्रीय कार्यालय</td><td colspan="2">01</td></tr>
<tr><td rowspan="2">2</td><td rowspan="2">उप क्षेत्रीय कार्यालय</td><td>लुधियाना</td><td rowspan="2">02</td><td>01</td></tr>
<tr><td>जालंधर</td><td>01</td></tr>
<tr><td>3</td><td colspan="2">शाखा कार्यालय</td><td colspan="2">25</td></tr>
<tr><td>4</td><td colspan="2">कर्मचारी राज्य बीमा योजना अस्पताल</td><td colspan="2">06</td></tr>
<tr><td>5</td><td colspan="2">कर्मचारी राज्य बीमा निगम अस्पताल, लुधियाना</td><td colspan="2">01</td></tr>
<tr><td>6</td><td colspan="2">कर्मचारी राज्य बीमा योजना औषधालय</td><td colspan="2">69</td></tr>
<tr><td rowspan="2">7</td><td rowspan="2">औषधालय–सह–शाखा कार्यालय</td><td>राजपुरा</td><td rowspan="2">02</td><td>01</td></tr>
<tr><td>बरनाला</td><td>01</td></tr>
</table>

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ व अधीनस्थ शाखा कार्यालयों के सभी प्रवीणता प्राप्त कर्मचारियों को दिनांक 16.04.2018 को व्यक्तिशः आदेश जारी किए गए।

कर्मचारी राज्य बीमा योजना अस्पतालों का विस्तृत विवरण निम्नानुसार है:–

क्र. सं.	अस्पताल का नाम	बिस्तरों की औसत संख्या	दैनिक ओ.पी.डी.	बिस्तर अधिभोग दर प्रतिशत	वर्ष 2017–18 के लिए प्रति बीमाकृत व्यक्ति व्यय (रु)
1	कर्मचारी राज्य बीमा योजना अस्पताल, अमृतसर	100	9282	27.39	758.31
2	कर्मचारी राज्य बीमा योजना अस्पताल, फगवाड़ा	30	3367	22.79	850.54
3.	कर्मचारी राज्य बीमा योजना अस्पताल, होशियारपुर	30	2980	32.43	485.19
4.	कर्मचारी राज्य बीमा योजना अस्पताल, जालंधर	125	9122	18.24	546.02
5.	कर्मचारी राज्य बीमा योजना अस्पताल, मंडी गोविन्दगढ़	30	3843	46.15	872.00
6	कर्मचारी राज्य बीमा योजना अस्पताल, मोहाली	30	3489	6.93	748.92

कर्मचारी राज्य बीमा निगम अस्पताल, लुधियाना का विस्तृत विवरण निम्नानुसार है:–

क्र.सं.	अस्पताल का नाम	बिस्तरों की संख्या	औसत दैनिक ओ.पी.डी.	बिस्तर अधिभोग दर प्रतिशत
1.	कर्मचारी राज्य बीमा निगम आदर्श अस्पताल, लुधियाना	262	1696.9	97%

चिकित्सा प्रतिपूर्ति दावे

लगभग पाँच वर्षों से लंबित चिकित्सा प्रतिपूर्ति बिलों के भुगतान के लिए सतत एवं अथक प्रयास किए गए। इस कार्य के लिए स्वयं अतिरिक्त प्रधान सचिव (स्वास्थ्य), पंजाब सरकार के साथ कई दौर की वार्ता की गई जिसके फलस्वरूप बीमाकृत व्यक्तियों के रु 41 करोड़ के लंबित चिकित्सा प्रतिपूर्ति बिलों का निपटान किया जा चुका है तथा तदनुरूप अनेक बीमाकृत व्यक्तियों को लाभ प्राप्त हुआ है एवं उनके वर्षों से लंबित प्रतिपूर्ति संबंधी दावों का निपटान किया गया है। उक्त बिलों के भुगतान के साथ ही बीमाकृत व्यक्तियों की अनेक शिकायतों एवं उनके द्वारा दायर किए गए मुकदमों का निवारण भी हो गया है व निगम के विरुद्ध नए मुकदमे दायर नहीं किए जा रहे हैं। चिकित्सा प्रतिपूर्ति के विवरण निम्नानुसार हैं–

मद	वित्त वर्ष 2017–18 में किया गया भुगतान	दिनांक 01.04.2018 से दिनांक 30.09.2018 तक किया गया भुगतान
चिकित्सा प्रतिपूर्ति बिल	26.95 करोड़	14.05 करोड़

बीमाकृत व्यक्तियों को निकटतम स्थानों पर त्वरित एवं बेहतरीन स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने के लिए किए गए विशेष प्रयासों के फलस्वरूप प्रथम चरण में निदेशक, स्वास्थ्य सेवाएँ, पंजाब द्वारा द्वितीयक देखभाल के लिए आठ प्रतिष्ठित निजी अस्पतालों के साथ कैशलेस सेवाओं के लिए अनुबंध किया जा चुका है तथा दूसरे चरण में लगभग 100 प्रतिष्ठित निजी अस्पतालों के साथ कैशलेस सेवाओं के लिए अनुबंध करने की प्रक्रिया अंतिम चरण में है। इसके पश्चात् बीमाकृत व्यक्तियों को विभिन्न प्रकार की चिकित्सा सुविधाएँ सरलता एवं सुगमता से एवं कैशलेस रूप में प्राप्त हो सकेंगी तथा परिणामस्वरूप भविष्य में चिकित्सा प्रतिपूर्ति के दावों में पर्याप्त कमी आएगी।

अति विशिष्ट चिकित्सा पर व्यय

बीमाकृत व्यक्तियों को अति विशिष्ट चिकित्सा सुविधाएँ प्रदान करने के लिए क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब द्वारा पंजाब क्षेत्र में 21 प्रतिष्ठित निजी अस्पतालों के साथ कैशलेस चिकित्सा सेवाओं के लिए अनुबंध किया गया है जिनके बिलों का भुगतान क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा ऑनलाइन प्रक्रिया के माध्यम से किया जाता है। कर्मचारी राज्य बीमा निगम आदर्श अस्पताल, लुधियाना द्वारा भी आठ प्रतिष्ठित निजी अस्पतालों के साथ कैशलेस चिकित्सा सेवाओं के लिए टाइअप किया गया है जिनको आवश्यकतानुसार रेफरल व भुगतान कर्मचारी राज्य बीमा निगम आदर्श अस्पताल, लुधियाना द्वारा स्वयं किया जाता है। इन विशिष्टताओं में मुख्यतः कार्डियोलोजी, नेफ्रोलोजी, प्लास्टिक सर्जरी, न्यूरोलोजी, न्यूरोसर्जरी, ओंकोलोजी, पी.ई.टी. स्कैन, गैस्ट्रोएंट्रोलोजी आदि सम्मिलित हैं।

अति विशिष्ट चिकित्सा व्यय के विवरण निम्नानुसार हैं:–

मद	वित्त वर्ष 2017–18 में किया गया भुगतान	दिनांक 01.04.2018 से दिनांक 28.02.2019 तक किया गया भुगतान
अति विशिष्ट चिकित्सा पर व्यय	₹13.72 करोड़	₹34.05 करोड़

उक्त प्रक्रिया पूर्णतः ऑनलाइन है एवं प्राप्त सभी बिलों की जाँच मुख्यालय द्वारा अनुबंधित एजेंसी के माध्यम से की जाती है व भुगतान क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा यथासमय किया जाता है। यह प्रक्रिया मुख्यालय द्वारा लागू किए जाने की तिथि से ही इस कार्यालय द्वारा अपना ली गई थी एवं संपूर्ण प्रक्रिया तत्समय से ही शत–प्रतिशत ऑनलाइन है।

वसूली

यह कार्यालय राजस्व वसूली के लक्ष्य के प्रति सदैव सतर्क एवं क्रियाशील रहा है। वर्ष 2017–18 में इस कार्यालय द्वारा राजस्व वसूली के लक्ष्य का 116.26% प्राप्त किया गया। वर्तमान वर्ष में 100 प्रतिशत वसूली लक्ष्य प्राप्त किया जा चुका है।

वार्षिक कार्यक्रम में "ख" क्षेत्र से "क" क्षेत्र के साथ **मूल पत्राचार का लक्ष्य 90 प्रतिशत** निर्धारित किया गया है।

सुविधा केन्द्र

कर्मचारी राज्य बीमा निगम की सेवाओं के संबंध में अथवा किसी अन्य प्रकार की पूछताछ के लिए समय–समय पर नियोजक अथवा बीमाकृत व्यक्ति संपर्क करते रहते हैं। इसके लिए क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ में एकीकृत सुविधा केंद्र स्थापित किया गया है। कार्यालय की टोल फ्री टेलीफोन सेवा भी सुविधा केंद्र के साथ ही समेकित की गई है। आगंतुकों तथा दूरभाष पर संपर्क करने वालों की समस्याओं एवं जिज्ञासाओं का यथासंभव निदान सुविधा केंद्र पर ही करने का प्रयास किया जाता है।

त्वरित शिकायत निवारण एवं निदान प्रणाली

भारत सरकार द्वारा स्थापित व संचालित किया गया सीपीग्राम पोर्टल और निगम द्वारा स्थापित किया हुआ अपना पीजी पोर्टल बीमाकृत व्यक्तियों की समस्याओं के निदान के लिए बेहद कारगर है। समय–समय पर सीपीग्राम अथवा पी.जी. पोर्टल पर विभिन्न शिकायतें प्राप्त होती हैं। इन शिकायतों का तत्परता से निपटान किया जाता है। इसकी गंभीरता को देखते हुए क्षेत्रीय कार्यालय में अलग कक्ष स्थापित किया गया है जहां पर शिकायत मिलने के साथ ही उसके निदान की कार्यवाही प्रारंभ कर दी जाती है और शिकायत का निपटान यथासंभव यथाशीघ्र किया जाता है। यही कारण है कि इस कार्यालय के पास लंबित शिकायतें नगण्य हैं।

यह कार्यालय बीमाकृत व्यक्तियों के विभिन्न दावों पर त्वरित कार्रवाई करने तथा निपटान करने के लिए प्रतिबद्ध है। विशेष तौर पर ऐसे मामलों पर प्राथमिकता के आधार पर कार्रवाई करने पर जोर दिया जा रहा है जो काफी समय से लंबित हैं।

उदाहरणार्थ श्री इकबाल सिंह, बीमा संख्या 1709730194 का दुर्घटना मामला लगभग आठ वर्ष से लंबित पाया गया। उक्त बीमाकृत व्यक्ति दिनांक 05.08.2010 को दुर्घटनाग्रस्त हुआ था और हितलाभों की जानकारी न होने के कारण तत्संबंधी दुर्घटना रिपोर्ट यथासमय निगम को प्रस्तुत नहीं की गई। दिनांक 22.03.2017 को छः वर्ष के विलम्ब से शाखा कार्यालय, चंडीगढ़ में दुर्घटना रिपोर्ट जमा की गई थी। अति विलंब को देखते हुए यह मामला मुख्यालय को अग्रेषित किया गया था तथा मुख्यालय के निदेशानुसार मामले में शाखा कार्यालय पुस्तिका के पैरा पी. 4.40 व पी.4.42 के अनुसार मामले की जांच की गई। तदनुसार गहन जांच/परामर्श के उपरान्त उक्त दुर्घटना मामले को 51–ई के अंतर्गत रोजगार चोट के रूप में स्वीकार किया गया। तत्पश्चात् मामले में चिकित्सा बोर्ड द्वारा उक्त दुर्घटना से हुई कार्यक्षमता की हानि 50 प्रतिशत निर्धारित की गई एवं संबंधित बीमाकृत व्यक्ति को स्थायी अपंगता हितलाभ के लिए एरिअर के रूप में रु 598054/– का भुगतान अविलंब किया गया। श्री इकबाल सिंह द्वारा इस संबंध में आभार व्यक्त किया गया।

राजभाषा

यह कार्यालय भारत सरकार की राजभाषा नीति के अक्षरशः अनुपालन के प्रति समर्पित है। पंजाब राज्य में भी अधिकांश कामगार पंजाब राज्य अथवा आसपास के राज्यों के हैं। हिंदी उनके लिए सरलतम एवं सुगमतम भाषा है। अतः 'ख' क्षेत्र में होने के बाद भी इस कार्यालय का अधिकतम कामकाज राजभाषा हिन्दी में ही निष्पादित किया जाता है। इसी का परिणाम है कि इस कार्यालय को राजभाषा में उत्कृष्ट कार्यान्वयन में न सिर्फ मुख्यालय, क.रा.बी. निगम द्वारा निरंतर पुरस्कृत किया जा रहा है अपितु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चंड़ीगढ़ व राजभाषा विभाग द्वारा भी सम्मानित किया गया है। मुख्यालय द्वारा अगस्त 2018 में भुवनेश्वर, ओडिशा में सम्पन्न अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में इस कार्यालय को वर्ष 2017–18 में 'ख' क्षेत्र में राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए महानिदेशक महोदय द्वारा प्रथम पुरस्कार के रूप में शील्ड प्रदान की गई है। साथ ही वर्ष 2016–17 में 'ख' क्षेत्र में राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा भी वाराणसी में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में **'राजभाषा शील्ड'** प्रदान की गई है। उक्त पुरस्कार माननीय राज्यपाल, उत्तर प्रदेश श्री राम नाइक के कर–कमलों से क्षेत्रीय निदेशक द्वारा ग्रहण किया गया।

स्वच्छ भारत अभियान

यह कार्यालय भारत सरकार के स्वच्छ भारत मिशन के लिए मुख्यालय के मार्गदर्शन के अनुरूप क्षेत्रीय कार्यालय एवं अधीनस्थ कार्यालयों में संपूर्ण स्वच्छता के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयासरत है। इसके लिए कुर्सियों की मरम्मत, अपेक्षित मदों की ड्राइक्लीन, शौचालयों की सफाई, कूड़े–कचरे के यथानिर्देश निपटान आदि के प्रति सजगता एवं तत्परता से कार्य किया जा रहा है। तदनुसार स्वच्छ देश, स्वच्छ वातावरण और स्वस्थ कामगार की जिस भावना के साथ यह देश कार्य कर रहा है, क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ व संपूर्ण पंजाब उसमें अपना भरपूर योगदान दे रहा है।

*****

हितलाभार्थियों के लिए उठाए गए विशेष कदम

डॉ. अमनदीप हस्तीर
राज्य चिकित्सा अधिकारी

पंजाब के हितलाभार्थियों की द्वितीयक स्वास्थ्य देखरेख सेवाओं के लिए 104 निजी अस्पतालों को अनुबंधित किया गया है जिसके फलस्वरूप पंजाब क्षेत्र में कर्मचारी राज्य बीमा निगम के हितलाभार्थियों के लिए स्वास्थ्य देख–रेख सेवाएँ बेहतर हुई हैं। वर्तमान में कर्मचारी राज्य बीमा निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब द्वारा 54 ठेका आधारित चिकित्सकों की भर्ती प्रक्रिया प्राथमिकता के आधार पर पूर्ण कर ली गई है। शीघ्र ही चयनित चिकित्सकों को नियुक्ति पत्र भेजे जाएंगे। चिकित्सकों के रिक्त पदों को भरने से हितलाभार्थियों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ प्राप्त करने का लाभ मिल सकेगा। कर्मचारी राज्य बीमा अस्पतालों व भवनों की विशेष मरम्मत एवं रखरखाव का काम प्रगति पर है। पंजाब में 14 स्थानों पर इस कार्य को पूर्ण करने के लिए रु 178.86 लाख दिए जा चुके हैं। विशेष मरम्मत एवं रखरखाव का कार्य कुछ स्थानों पर पूर्ण हो चुका है तथा कुछ स्थानों पर यह कार्य प्रगति पर है।

वर्ष 2018–19 में दिनांक 28.2.2019 तक अतिविशिष्ट चिकित्सा के 12916 बिलों पर आवश्यक कार्रवाई की गई तथा अभी तक रु 34.05 करोड़ का भुगतान संबंधित बीमाकृत व्यक्तियों को किया जा चुका है। हमारे हितलाभार्थियों को तत्काल उपचार सुनिश्चित करने के लिए अनुबंधित अस्पतालों को समय पर भुगतान किया जा रहा है। क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब के अधिकारियों द्वारा पंजाब के नए कार्यान्वित क्षेत्रों में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों व उप मंडलीय सामान्य अस्पतालों में मैपिंग करने में सक्रिय भूमिका निभाई गई है जिससे नए कार्यान्वित क्षेत्रों में चिकित्सा की पक्की गारंटी प्रदान करने में सहायता मिली है तथा प्रस्ताव कर्मचारी राज्य बीमा निगम मुख्यालय को अधिसूचित करने के लिए भेजा जा चुका है जिससे शीघ्र ही कर्मचारी राज्य बीमा योजना को पूरे पंजाब में लागू किया जा सकेगा। कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने कर्मचारी राज्य बीमा योजना में राज्य सरकार के 1/8वें भाग को छोड़ दिया है जिससे कर्मचारी राज्य बीमा योजना में सुगम व्यय में आ रही बाधाओं का निराकरण हो सकेगा।

वार्षिक कार्यक्रम में "ख" क्षेत्र से "ख" क्षेत्र के साथ मूल पत्राचार का लक्ष्य 90 प्रतिशत निर्धारित किया गया है।

पंजाब के डेराबस्सी में दिनांक: 06 मार्च 2019 को स्वास्थ्य पासबुक वितरण के साथ आशोधित बीमा चिकित्सा व्यवसायी (MIMP) योजना का शुभारम्भ

निगम में प्रचलित प्रोत्साहन योजनाओं/प्रतियोगिताओं के सुगम आयोजन में सहायक आवश्यक बिन्दु

राजेश शर्मा
सहायक निदेशक
(राजभाषा)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए सदैव सजग एवं प्रयत्नशील रहा है। निगम के अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा हिन्दी में कार्य करने के लिए निरंतर प्रोत्साहित करने एवं हिन्दी में किए गए कार्य के लिए सम्मानित करने हेतु निगम द्वारा अनेक प्रोत्साहन योजनाओं/प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। उक्त योजनाओं एवं प्रतियोगिताओं के लिए निगम द्वारा स्पष्ट मानदंड, निर्देश एवं प्रक्रिया निर्धारित की गई है। तथापि उक्त के कार्यान्वयन के दौरान कुछ व्यावहारिक कठिनाइयाँ देखने में आती हैं। अतः इस लेख के माध्यम से उक्त व्यावहारिक कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए निगम में प्रचलित प्रोत्साहन योजनाओं एवं प्रतियोगिताओं के मुख्य बिंदुओं की ओर ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया गया है:—

कर्मचारी राज्य बीमा निगम-हिन्दी प्रयोग प्रोत्साहन योजना

1. यह एक वार्षिक प्रोत्साहन योजना है।
2. इस योजना का आयोजन कैलेंडर वर्ष के आधार पर किया जाता है।
3. योजना के अंतर्गत प्रत्येक वर्ष 01 जनवरी से 31 दिसंबर के दौरान निर्धारित प्रतिशतता में हिन्दी में किए गए कार्य के आधार पर पात्र अधिकारियों/कर्मचारियों का चयन किया जाता है।

प्रोत्साहन राशि : रु600/— प्रत्येक

प्रोत्साहन पुरस्कारों की संख्या: कोई सीमा नहीं........

प्रतिभागिता —

- अवर श्रेणी लिपिक व उच्चतर स्तर के सभी कर्मचारी व अधिकारी।
- चिकित्सा/परा—चिकित्सा/तकनीकी स्टाफ—यदि वे पूरा वर्ष यथा निर्धारित प्रतिशतता में हिंदी टिप्पण/आलेखन का कार्य करने पर इस आशय का प्रमाण पत्र देते हैं और पुरस्कार की अन्य शर्तें पूरी करते हैं।
- यथा निर्धारित प्रतिशता में हिंदी टिप्पण/आलेखन कार्य करने पर ही बहुकार्य स्टाफ व निजी स्टाफ को पुरस्कार के लिए पात्र समझा जाए।
- राजभाषा अधिकारी एवं हिन्दी अनुवादक इस योजना में भाग नहीं ले सकते।
- कैलेंडर अवधि के बीच में (वर्ष आरंभ हो चुकने के बाद) कार्यग्रहण करने वाले नवनियुक्त कार्मिक उक्त वर्ष की योजना में आवेदन के पात्र नहीं होंगे।
- शाखा कार्यालयों में तैनात कार्मिक भी संबंधित नियंत्रक कार्यालय में आवेदन भेजकर उपर्युक्त योजना में भाग ले सकते हैं बशर्ते वे उक्त निर्धारित प्रतिशतता में हिंदी में टिप्पण/आलेखन का कार्य करते हों।

पात्रता—

- 'क' क्षेत्र—पूरा वर्ष 100 प्रतिशत तक कार्यालयी कार्य हिन्दी में करने वाले कर्मचारी व अधिकारी
- 'ख' क्षेत्र—पूरा वर्ष 75 प्रतिशत तक/से अधिक कार्यालयी कार्य हिन्दी में करने वाले कर्मचारी व अधिकारी
- 'ग' क्षेत्र—पूरा वर्ष 50 प्रतिशत तक/से अधिक कार्यालयी कार्य हिन्दी में करने वाले कर्मचारी व अधिकारी

आवेदन की विधि —

- मुख्यालय द्वारा नियत एवं राजभाषा शाखा द्वारा परिचालित प्रपत्र में आवेदन।
- आवेदन नियंत्रक अधिकारी से अनिवार्यतः प्रति हस्ताक्षरित हो।
- आवेदन में कार्य की अवधि पूरे कैलेंडर वर्ष (1 जनवरी से 31 दिसंबर) को पूर्ण करे।
- यदि आवेदक ने इस अवधि में एक से अधिक शाखाओं/कार्यालयों में कार्य किया है तो उक्त शाखाओं/कार्यालयों से प्राप्त आवेदनों से संयुक्त रूप से पूरी कैलेंडर अवधि की गणना की जाए।
- कर्मचारी/अधिकारी के किसी भी प्रकार की सवैतनिक छुट्टी के कारण आवेदक के दावे पर किसी प्रकार की आपत्ति नहीं होगी।

वार्षिक कार्यक्रम में "ख" क्षेत्र से "ग" क्षेत्र के साथ मूल पत्राचार का लक्ष्य 55 प्रतिशत निर्धारित किया गया है।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम–हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन योजना के लिए प्रविष्टि प्रपत्र

अधिकारी/कर्मचारी का नाम और पदनाम :
शाखा (वीओआईपी संख्या सहित) :
अवधि: 01 जनवरी 20... से 31 दिसंबर 20... तक

अधिकारी/कर्मचारी (आवदेक) द्वारा घोषणा

प्रमाणित किया जाता है कि वर्ष..................के दौरान मैंने टिप्पण/आलेखन में निर्धारित प्रतिशतता (100, 75 तथा 50 प्रतिशत) .... तक/से अधिक कार्यालयी कार्य हिंदी में किया है। इस अवधि में मैंने न तो केवल टंकण/डायरी–डिस्पैच का कार्य किया है और न ही मैं राजभाषा शाखा में तैनात था।

दिनांक: आवेदक के हस्ताक्षर

नियंत्रक अधिकारी के प्रति हस्ताक्षर

योजना के अंतर्गत पात्र कार्मिकों के चयन की विधि –

- निगम के विभिन्न कार्यालय/अस्पताल प्रतिभागी कार्मिकों को देय पुरस्कार का निर्णय पूर्व निर्धारित प्रतिशतता के परिपेक्ष्य में अपने स्तर पर करेंगे।
- निर्णय लेने के लिए प्रशासन अधिकारी, लेखा अधिकारी एवं राजभाषा अधिकारी (राजभाषा अधिकारी न होने पर कार्यालय अध्यक्ष द्वारा नामित अन्य कोई अधिकारी) की मूल्यांकन समिति का गठन किया जाएगा।
- समिति प्राप्त आवेदनों के मूल्यांकन के उपरांत अपनी अनुशंसा देगी।
- कार्यालय अध्यक्ष द्वारा पुरस्कार की स्वीकृति मूल्यांकन समिति की अनुशंसा पर सहमति के पश्चात् ही की जाए।
- पुरस्कार का निर्णय प्रत्येक वर्ष मार्च के अंत तक कर लिया जाए तथा पुरस्कार स्वीकृति के पश्चात् पुरस्कृत कार्मिकों की सूची मुख्यालय को भेजें।
- पुरस्कार राशि को प्रशासनिक व्यय (402) अन्य खर्च (40203) – विविध (4020322) लेखा मद 402032200000002–विविध व्यय में बुक जाए।
-

संदर्भ/स्रोत

1. ए–49/14/1/87–हिंदी दिनांक 27.03.1987
2. ए–49/16(1)/2002–रा.भा. दिनांक 18.12.2002
3. ए–49/16/1/2010–रा.भा. खण्ड फा.–1 दिनांक 26.12.2011
4. ए–49/12/02/2012–रा.भा. दिनांक 04.01.2013
5. ए–49/16/1/2013–रा.भा. दिनांक 28.05.2014
6. ए–49/16/1/2017–रा.भा. दिनांक 19.07.2017

मूल हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन योजना

1. यह एक वार्षिक प्रोत्साहन योजना है।
2. इस प्रोत्साहन योजना का आयोजन वित्त वर्ष के आधार पर किया जाता है।
3. प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत प्रत्येक वित्त वर्ष (01 अप्रैल से 31 मार्च) के दौरान हिन्दी में किए गए कार्य के आधार पर पात्र अधिकारियों/कर्मचारियों का चयन किया जाता है।

पुरस्कार राशि व पुरस्कारों की संख्या

क्र.सं.	पुरस्कार	पुरस्कारों की संख्या	पुरस्कार राशि	कुल पुरस्कार राशि
1	प्रथम	02	रु 5000/- प्रत्येक	रु 10,000/-
2	द्वितीय	03	रु 3000/- प्रत्येक	रु 9,000/-
3	तृतीय	05	रु 2000/- प्रत्येक	रु 10,000/-
कुल		**10**		**रु 29,000/-**

प्रतिभागिता –

- टिप्पण–आलेखन का कार्य करने वाले अवर श्रेणी लिपिक व उच्चतर स्तर के सभी कर्मचारी व अधिकारी।
- बहुकार्य स्टाफ/चिकित्सा/परा–चिकित्सा/तकनीकी स्टाफ–यदि उन्होंने अपेक्षित न्यूनतम टिप्पण–आलेखन कार्य किया हो।
- राजभाषा अधिकारी एवं हिंदी अनुवादक इस योजना में भाग नहीं ले सकते।
- आशुलिपिक/टाइपिस्ट जो सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने संबंधी किसी अन्य योजना के अंतर्गत आते हैं, इस योजना में भाग लेने के पात्र नहीं होंगे।
- शाखा कार्यालयों में तैनात कार्मिक भी संबंधित नियंत्रक कार्यालय में आवेदन भेजकर उपर्युक्त योजना में भाग ले सकते हैं बशर्ते वे अपेक्षित न्यूनतम हिंदी टिप्पण/आलेखन का कार्य करते हों।
- पूर्णतया अस्थायी तथा तदर्थ आधार पर नियुक्त कर्मचारी भी पुरस्कार के हकदार होंगे यदि उन्होंने मूल हिंदी टिप्पण/आलेखन में योजना अवधि के दौरान अपेक्षित न्यूनतम हिन्दी कार्य किया हो।

पात्रता

- 'क' क्षेत्र –– वर्षभर में न्यूनतम 20,000 शब्द हिन्दी में लिखने वाले कर्मचारी व अधिकारी
- 'ख' क्षेत्र –– वर्षभर में न्यूनतम 20,000 शब्द हिन्दी में लिखने वाले कर्मचारी व अधिकारी
- 'ग' क्षेत्र –– वर्षभर में न्यूनतम 10,000 शब्द हिन्दी में लिखने वाले कर्मचारी व अधिकारी

  * शब्दों की गणना में मूल टिप्पण व प्रारूप के अलावा हिंदी में किए गए अन्य कार्य, जिनका सत्यापन किया जा सके, जैसे रजिस्टर में इन्दराज, सूची तैयार करना, लेखा का काम आदि भी शामिल किए जाएंगे।

आवेदन की विधि :

- इच्छुक प्रतिभागियों को राजभाषा विभाग/मुख्यालय द्वारा नियत एवं राजभाषा शाखा द्वारा परिचालित प्रपत्र में हिन्दी में किए गए कार्य का रिकॉर्ड रखना होगा।
- प्रपत्र में दर्ज प्रविष्टियाँ (सप्ताह में एक बार) नियंत्रण अधिकारी से प्रति हस्ताक्षरित होनी चाहिएँ।
- यदि आवेदक ने इस अवधि में एक से अधिक शाखाओं/कार्यालयों में कार्य किया है तो उक्त शाखाओं/कार्यालयों से प्राप्त संयुक्त रिकॉर्ड के आधार पर आंकड़ों की गणना की जाएगी।

श्री/श्रीमती/कुमारी .... पदनाम .... द्वारा माह .... के दौरान हिंदी में किए गए कार्य का विवरण।

क्र. सं.	तिथि	हिंदी में किए गए कार्य की फाइल एवं रजिस्टर संख्या	हिंदी में लिखे गए टिप्पण/आलेखन के शब्दों की संख्या	हिंदी में किए गए अन्य कार्य		नियंत्रण अधिकारी के हस्ताक्षर (सप्ताह में एक बार)
				विवरण	शब्दों की संख्या	
1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.

योजना के अंतर्गत पात्र कार्मिकों के चयन की विधि –

- निर्णय लेने के लिए प्रशासन अधिकारी, लेखा अधिकारी एवं राजभाषा/प्रभारी राजभाषा अधिकारी की मूल्यांकन समिति का गठन किया जाएगा।
- मूल्यांकन करने के लिए कुल 100 अंक रखे जाएंगे। इनमें से 70 अंक हिंदी में किए गए काम की मात्रा के लिए तथा 30 अंक विचारों की स्पष्टता के लिए होंगे।

वार्षिक कार्यक्रम में "ख" क्षेत्र से "क" क्षेत्र व "ख" क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालयों/व्यक्तियों के साथ **मूल पत्राचार का लक्ष्य 90 प्रतिशत** निर्धारित किया गया है।

- जिन प्रतिभागियों की मातृभाषा तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, बंगाली, उड़िया या असमिया हो उन्हें 20 प्रतिशत तक अतिरिक्त अंकों का लाभ दिया जाएगा। वास्तविक अंकों के लाभ का निर्धारण मूल्यांकन समिति द्वारा किया जाएगा।
- प्राप्त आवेदनों की समीक्षा तथा सत्यता आदि की जांच के उपरांत समिति सभी पुरस्कारों के लिए प्राप्तांकों के आधार पर अपनी अनुशंसा देगी।
- कार्यालयाध्यक्ष की स्वीकृति के उपरांत सभी अनुशंसित अधिकारियों/ कर्मचारियों को प्रथम/द्वितीय/तृतीय पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।
- पुरस्कार जीतने के बारे में संबंधित अधिकारी/कर्मचारी की सेवा विवरणी में भी समुचित उल्लेख कर दिया जाएगा।

संदर्भ/स्रोत

1.	11/12013/3/87–रा.भा. (क–2) दिनांक 16.02.1988	2.	ए–49/11/6/99–हिंदी दिनांक 08.07.1999
3.	11/12013/18(93)–रा.भा. दिनांक 03.01.2003	4.	ए–49/11(6)99 दिनांक 20.01.2006
5.	11/12013/01/2011–रा.भा. (नीति/के.अनु.ब्यूरो) दिनांक 30.10.2012	6.	ए–49/16/3/2016–रा.भा. दिनांक 02.04.2018

अधिकारियों के लिए हिन्दी श्रुतलेखन (डिक्टेशन) प्रोत्साहन योजना

1. यह एक वार्षिक प्रोत्साहन योजना है।
2. इस प्रोत्साहन योजना का आयोजन वित्त वर्ष के आधार पर किया जाता है।
3. प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत प्रत्येक वित्त वर्ष में अर्थात् 01 अप्रैल से 31 मार्च के दौरान हिन्दी में दिए गए श्रुतलेखन के आधार पर पात्र अधिकारी का चयन किया जाता है।

पुरस्कार राशि– हिंदी व हिन्दीतर भाषी वर्ग के लिए रु 5000/– प्रत्येक

पुरस्कारों की संख्या–

1) अखिल भारतीय स्तर पर (कार्यालयाध्यक्षों के लिए) – एक हिंदीतर व एक हिन्दी भाषी
2) प्रत्येक कार्यालय स्तर पर (शेष अधिकारियों के लिए) – एक हिंदीतर व एक हिन्दी भाषी

प्रतिभागिता–

- सहायक निदेशक व उच्चतर स्तर के सभी अधिकारी।
- चिकित्सा/परा–चिकित्सा/तकनीकी अधिकारी – यदि उन्होंने अनुसचिवीय कार्य करते हुए अपेक्षित संख्या में श्रुतलेखन दिया हो।
- राजभाषा अधिकारी इस योजना में भाग नहीं ले सकते।
- इस प्रोत्साहन योजना मे अन्य अधिकारियों के साथ–साथ बीमा आयुक्त, राष्ट्रीय प्रशिक्षण अकादमी/ क्षेत्रीय निदेशक/निदेशक (चिकि.)/निदेशक/प्रभारी संयुक्त निदेशक/चिकित्सा अधीक्षक आदि कार्यालय प्रमुख भी भाग ले सकते हैं।
- हिंदी भाषी श्रेणी से तात्पर्य उन अधिकारियों से है जिनका घोषित निवास स्थान 'क' तथा 'ख' क्षेत्र के अंतर्गत हो, और हिन्दीतर भाषी श्रेणी से तात्पर्य उन अधिकारियों से है जिनका घोषित निवास स्थान 'ग' क्षेत्र में हो।

पात्रता–

- प्रतियोगिता अवधि में न्यूनतम 100 श्रुतलेखन दिए गए हों।
- आशुलिपिक आदि संबद्ध न होने की स्थिति में हाथ से लिखी हुई पंक्तियाँ भी डिक्टेशन मानी जाएंगी। 10 पंक्तियों से कम के डिक्टेशन की गणना नहीं की जाएगी।

- कंप्यूटर पर बोलकर लिखवाया गया पत्र भी श्रुतलेख माना जाएगा।

आवेदन की विधि:

- इच्छुक प्रतिभागी अधिकारियों को राजभाषा विभाग/मुख्यालय द्वारा नियत एवं राजभाषा शाखा द्वारा परिचालित प्रपत्र में हिन्दी में दिए गए श्रुतलेख का रिकॉर्ड रखना होगा।
- आवेदक को अपनी मातृभाषा का उल्लेख करते हुए उक्त रिकॉर्ड श्रुतलेख के न्यूनतम 10 नमूनों (अनिवार्य) के साथ राजभाषा शाखा को भेजना होगा।
- यदि आवेदक ने इस अवधि में एक से अधिक शाखाओं/कार्यालयों में कार्य किया है तो उक्त सभी शाखाओं/कार्यालयों में दिए गए श्रुतलेखन के आंकड़ों की गणना की जाएगी।
- कार्यालय प्रमुखों को अपना तत्संबंधी रिकॉर्ड मुख्यालय भेजना होता है और मुख्यालय में इस प्रयोजन के लिए गठित समिति की सिफारिशों पर बीमा आयुक्त द्वारा मंजूरी दी जाती है।
- शेष अधिकारियों के लिए यह योजना मुख्यालय एवं प्रत्येक क्षेत्रीय/उप क्षेत्रीय/प्रभागीय कार्यालय/राष्ट्रीय प्रशिक्षण अकादमी/अस्पताल/निदेशालय (चिकित्सा) में कार्यालय स्तर पर स्वतंत्र रूप से आयोजित की जाती है तथा डिक्टेशन रिकॉर्ड की जांच संबंधित कार्यालय स्तर पर की जानी अपेक्षित है।

क्र.सं.	दिनांक	डिक्टेशन में लिखी गई पंक्तियों की संख्या	फाइल संख्या	अभ्युक्ति

योजना के अंतर्गत पात्र अधिकारियों के चयन की विधि –

- निर्णय लेने के लिए प्रशासन अधिकारी, वित्त अधिकारी एवं राजभाषा/प्रभारी राजभाषा अधिकारी की समिति का गठन किया जाएगा।
- प्राप्त आवेदनों की समीक्षा तथा सत्यता आदि की जांच के उपरांत समिति अपनी अनुशंसा देगी।
- कार्यालयाध्यक्ष की स्वीकृति के उपरांत अनुशंसित अधिकारी/ अधिकारियों को पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।
- पुरस्कृत अधिकारियों की सूची मुख्यालय भिजवाई जाए।

संदर्भ/स्रोत

1. 11/12013/1/89–रा.भा. (क.–2) दिनांक 06.03.1989
2. ए–49/14/16/89–हि. दिनांक 26.11.2001
3. ए–49/16/4/99–हिंदी दिनांक 25.04.2012
4. ए–49/16/4/99–रा.भा. दिनांक 17.01.2013
5. ए–49/16/5/2013–रा.भा. दिनांक 17.04.2014
6. ए–49/16/5/2013–रा.भा. दिनांक 02.04.2018

अंग्रेजी टंककों द्वारा हिन्दी में टंकण करने के लिए प्रोत्साहन योजना

1. यह एक मासिक प्रोत्साहन योजना है।
2. योजना के अंतर्गत प्रत्येक कैलेंडर माह के दौरान अंग्रेजी के साथ–साथ हिन्दी में अपेक्षित टंकण करने वाले टंककों, अवर/प्रवर श्रेणी लिपिकों को प्रोत्साहन राशि दी जाती है।

प्रोत्साहन राशि: रु160/– प्रतिमाह

- यह विशेष भत्ता वेतन नहीं माना जाएगा और इस राशि पर महंगाई भत्ता, मकान किराया भत्ता, नगर प्रतिकर भत्ता और अन्य कोई भत्ता देय नहीं होगा।
- वह योजना जिसके अंतर्गत हिंदी टंकण का प्रशिक्षण सफलतापूर्वक प्राप्त करने पर वैयक्तिक वेतन के रूप में अग्रिम वेतन वृद्धियाँ दी जाती हैं, जारी रहेगी। परंतु जब इस योजना के अंतर्गत लाभ मिलने लगेगा, तब से अग्रिम वेतन वृद्धियों का लाभ समाप्त कर दिया जाएगा।

प्रोत्साहन पुरस्कारों की संख्या : कोई सीमा नहीं........

प्रतिभागिता –

- अंग्रेजी टंकक।
- टंकक की परिभाषा के अंतर्गत निगम कार्यालयों में तैनात अवर श्रेणी लिपिक एवं प्रवर श्रेणी लिपिक दोनों आते हैं।
- शाखा कार्यालयों में तैनात कार्मिक भी संबंधित नियंत्रक कार्यालय में आवेदन भेजकर उपर्युक्त योजना में भाग ले सकते हैं बशर्ते वे उक्त निर्धारित मात्रा में हिंदी टिप्पण/आलेखन का कार्य करते हों।

पात्रता–

- औसतन पाँच टिप्पणियाँ/प्रारूप/पत्र प्रतिदिन अथवा 300 टिप्पणियाँ/प्रारूप/पत्र प्रति तिमाही हिंदी में टंकित करने वाले अंग्रेजी टंकक, अवर श्रेणी लिपिक व प्रवर श्रेणी लिपिक।
- केवल एक या दो पंक्तियों के प्रारूप/टिप्पणियाँ इसमें शामिल नहीं होंगे।

आवेदन की विधि –

- मुख्यालय द्वारा नियत एवं राजभाषा शाखा द्वारा परिचालित प्रमाण–पत्र के साथ आवेदन।
- प्रमाण–पत्र नियंत्रण अधिकारी द्वारा हस्ताक्षरित होना चाहिए।
- संबंधित अंग्रेजी टंकक दोनों भाषाओं में कार्य शुरू करने से प्रारंभिक 6 महीनों के लिए अपेक्षित प्रमाण–पत्र प्रतिमाह, उसके पश्चात् प्रत्येक 3 माह में एक बार राजभाषा शाखा को भेजेंगे।

हिंदी प्रोत्साहन भत्ता पाने के लिए अपेक्षित प्रमाण–पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/कुमारी .... पदनाम .... शाखा .... ने .... से .... तक की अवधि में अपने काम का कुछ भाग हिंदी टंकण में किया। हिंदी में किए गए काम की मात्रा, उपर्युक्त मास में औसतन 5 टिप्पणियों/प्रारूप/पत्र प्रतिदिन/उपर्युक्त तिमाही में लगभग 300 टिप्पणियों/प्रारूप/पत्र से कम नहीं थी।

हस्ताक्षर

नियंत्रण अधिकारी

योजना के अंतर्गत पात्र कार्मिकों के चयन की विधि –

- राजभाषा शाखा आवेदकों के दावों की पुष्टि करके कार्यालयाध्यक्ष को अपनी अनुशंसा देगी।
- कार्यालयाध्यक्ष की स्वीकृति से सभी अनुशंसित टंककों/लिपिकों को प्रोत्साहन राशि का भुगतान किया जाएगा।

अंग्रेजी आशुलिपिकों द्वारा हिन्दी में आशुलिपि कार्य करने के लिए प्रोत्साहन योजना

1. यह एक मासिक प्रोत्साहन योजना है।
2. योजना के अंतर्गत प्रत्येक कैलेंडर माह के दौरान अंग्रेजी के साथ–साथ हिन्दी में अपेक्षित आशुलिपि कार्य करने वाले आशुलिपिकों को प्रोत्साहन राशि दी जाती है।

प्रोत्साहन राशि : रु240/– प्रतिमाह

- यह विशेष भत्ता वेतन नहीं माना जाएगा और इस राशि पर महंगाई भत्ता, मकान किराया भत्ता, नगर

प्रतिकर भत्ता और अन्य कोई भत्ता देय नहीं होगा।

- वह योजना जिसके अंतर्गत हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण सफलतापूर्वक प्राप्त करने पर वैयक्तिक वेतन के रूप में अग्रिम वेतन वृद्धियाँ दी जाती हैं, जारी रहेगी। परंतु जब इस योजना के अंतर्गत लाभ मिलने लगेगा, तब से अग्रिम वेतन वृद्धियों का लाभ समाप्त कर दिया जाएगा।

प्रोत्साहन पुरस्कारों की संख्या : कोई सीमा नहीं.........

प्रतिभागिता –

- सभी अंग्रेजी आशुलिपिक

पात्रता

- औसतन पाँच टिप्पणियाँ/प्रारूप/पत्र प्रतिदिन अथवा 300 टिप्पणियाँ/प्रारूप/पत्र प्रति तिमाही हिंदी में टंकित करने वाले आशुलिपिक।
- केवल एक या दो पंक्तियों के प्रारूप/टिप्पणियाँ इसमें शामिल नहीं होंगे।

आवेदन की विधि –

- मुख्यालय द्वारा नियत एवं राजभाषा शाखा द्वारा परिचालित प्रमाण–पत्र के साथ आवेदन
- प्रमाण–पत्र नियंत्रण अधिकारी से हस्ताक्षरित होना चाहिए।
- संबंधित अंग्रेजी आशुलिपिक दोनों भाषाओं में कार्य शुरू करने से प्रारंभिक 6 महीनों के लिए अपेक्षित प्रमाण–पत्र प्रतिमाह, उसके पश्चात् प्रत्येक 3 माह में एक बार राजभाषा शाखा को भेजेंगे।

हिंदी प्रोत्साहन भत्ता पाने के लिए अपेक्षित प्रमाण–पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/कुमारी .... पदनाम .... शाखा .... ने .... से .... तक की अवधि में अपने काम का कुछ भाग हिंदी आशुलिपि/हिंदी टंकण में किया। हिंदी में किए गए काम की मात्रा, उपर्युक्त मास में औसतन 5 टिप्पणियों/प्रारूप/पत्र प्रतिदिन/उपर्युक्त तिमाही में लगभग 300 टिप्पणियों/प्रारूप/पत्र से कम नहीं थी।

हस्ताक्षर

नियंत्रण अधिकारी

योजना के अंतर्गत पात्र कार्मिकों के चयन की विधि –

- राजभाषा शाखा आवेदकों के दावे की पुष्टि करके कार्यालयाध्यक्ष को अपनी अनुशंसा देगी।
- कार्यालयाध्यक्ष की स्वीकृति से सभी अनुशंसित आशुलिपिकों को प्रोत्साहन राशि का भुगतान किया जाएगा।

संदर्भ/स्रोत

1. एफ.14012/55/76–रा.भा. (ग) दिनांक 12.08.1983
2. 13017/4/90–रा.भा. (नी.स.) दिनांक 28.07.1998
3. ए–49/16(6)/93–हि. दिनांक 27.10.1998
4. ए–49/16/3/2003–रा.भा. दिनांक 13.07.2011
5. ए–49/16/4/2012–रा.भा. दिनांक 14.12.2012
6. 13034/12/2009–रा.भा. (नीति) दिनांक 06.05.2014
7. ए–49/16/4/2012–रा.भा. दिनांक 02.04.2018

राजभाषा पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताएँ

- आयोजन की अवधि : प्रत्येक वर्ष राजभाषा पखवाड़े (01 सितंबर से 15 सितंबर) के दौरान
- आदर्शतः प्रतियोगिताओं का आयोजन एक ही दिन करने की बजाय अलग–अलग दिन इस प्रकार किया जाए कि

हिंदी दिवस समारोह (14 सितंबर) तक सभी प्रतियोगिताएँ पूर्ण करके उक्त समारोह में विजेताओं को सम्मानित किया जा सके।

प्रोत्साहन राशि व पुरस्कारों की संख्या –

क्र. सं.	प्रतियोगिता का नाम	लिखित/मौखिक	पुरस्कार का स्तर	प्रतियोगिता की श्रेणी			
				हिन्दी भाषी		हिंदीतर भाषी	
				पुरस्कारों की संख्या	पुरस्कार राशि (रु)	पुरस्कारों की संख्या	पुरस्कार राशि (रु)
1	हिन्दी निबंध प्रतियोगिता	लिखित	प्रथम	01	1800/-	01	1800/-
			द्वितीय	01	1500/-	01	1500/-
			तृतीय	01	1200/-	01	1200/-
			प्रोत्साहन	02	500/- प्रत्येक	02	500/- प्रत्येक
2	हिन्दी टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता	प्रश्न पत्र पर आधारित	प्रथम	01	1800/-	01	1800/-
			द्वितीय	01	1500/-	01	1500/-
			तृतीय	01	1200/-	01	1200/-
			प्रोत्साहन	02	500/- प्रत्येक	02	500/- प्रत्येक
3	राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता	लिखित रूप में संक्षिप्त प्रश्नोत्तर	प्रथम	01	1800/-	01	1800/-
			द्वितीय	01	1500/-	01	1500/-
			तृतीय	01	1200/-	01	1200/-
			प्रोत्साहन	02	500/- प्रत्येक	02	500/- प्रत्येक
4	हिन्दी वाक् प्रतियोगिता	मौखिक	प्रथम	01	1800/-	01	1800/-
			द्वितीय	01	1500/-	01	1500/-
			तृतीय	01	1200/-	01	1200/-
			प्रोत्साहन	02	500/- प्रत्येक	02	500/- प्रत्येक

प्रतिभागिता

- राजभाषा शाखा/राजभाषा संवर्ग के अधिकारियों/कर्मचारियों को छोड़कर इन प्रतियोगिताओं में अन्य सभी संवर्ग के नियमित अधिकारी/चिकित्सा/परा–चिकित्सा/तकनीकी स्टाफ/एम.टी.एस. आदि भाग ले सकते हैं।

प्रतिभागिता की श्रेणीः

- हिन्दी तथा हिंदीतर भाषी प्रतिभागियों के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन अलग–अलग श्रेणियों में किया जाएगा।
- प्रतियोगियों के हिंदी भाषी अथवा हिंदीतर भाषी का वर्गीकरण मातृभाषा के आधार पर ही किया जाएगा। श्रेणी वर्गीकरण करते समय प्रतियोगी विशेष की हिंदी की शैक्षिणिक योग्यता का ध्यान नहीं रखा जाएगा।
- प्रतियोगिताओं का आयोजन अलग–अलग दिन किया जाना श्रेयष्कर होगा।
- सभी प्रतियोगिताओं में किसी भी भाषा वर्ग में भाग लेने के लिए न्यूनतम निर्धारित प्रतिभागी संख्या (कोरम) की बाध्यता नहीं होगी।
- प्रत्येक प्रतियोगिता में पुरस्कार हेतु न्यूनतम 33 प्रतिशत उत्तीर्णांक आवश्यक होंगे।
- उपर्युक्त पुरस्कार निगम कार्यालयों में संबंधित प्रशासनिक प्रधान/कार्यालय अध्यक्ष द्वारा विधिवत् स्वीकृत किए जाएंगे।
- हिंदी भाषी वर्ग में 'क' एवं 'ख' क्षेत्र के भाषा भाषी (मातृभाषा) तथा हिंदीतर भाषी वर्ग में 'ग' क्षेत्र के भाषा भाषी (मातृभाषा) सम्मिलित होंगे।
- हिन्दी भाषी प्रतिभागियों का मूल्यांकन हिन्दी भाषी के साथ व हिंदीतर भाषी का मूल्यांकन हिंदीतर भाषी के साथ ही किया जाएगा।

संदर्भ / स्रोत	
1. ए–49 / 16(2) / 92–हि. दिनांक 30.10.2007	2. ए–49 / 16 / 3 / 2012–रा.भा. दिनांक 27.07.2012
3. ए–49 / 16 / 1 / 2013–रा.भा. दिनांक 14.06.2013	4. 11034 / 15 / 2015–रा.भा. (नीति) दिनांक 01.09.2015
5. ए–49 / 17 / 3 / 2015–रा.भा. / खंड दिनांक 18.12.2015	6. 11034 / 15 / 2015–रा.भा. (नीति) दिनांक 26.02.2016

राजभाषा कार्यान्नवयन सुझाव पुरस्कार योजना

1. यह एक वार्षिक पुरस्कार योजना है।
2. इस योजना का आयोजन वित्त वर्ष (01 अप्रैल से 31 मार्च तक) के आधार पर किया जाता है
3. योजना अवधि में प्राप्त ऐसे चयनित सुझावों पर नकद पुरस्कार व प्रशस्ति–पत्र देने की व्यवस्था है जिन्हें निगम में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से उपयोगी पाया गया हो।

पुरस्कार राशि व पुरस्कारों की संख्याः

अधिकतम : रु 3000 / –
न्यूनतम : रु 600 / –
कुल पुरस्कार राशि : रु 12000 / –

प्रतिभागिता

1. सभी अधिकारी तथा सभी कर्मचारी।
2. चिकित्सा / परा–चिकित्सा / गैर–चिकित्सा / तकनीकी / गैर–तकनीकी / एम.टी.एस. आदि सभी अधिकारी / कर्मचारी।
3. निगम कार्यालयों मे तैनात हिंदी कार्मिक इस पुरस्कार योजना में भाग नहीं ले सकेंगे।

पात्रता

योजना अवधि में मुख्यालय को प्राप्त ऐसे सभी सुझाव जो निगम में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से उपयोगी हों।

आवेदन की विधिः

सुझाव देने वाले कार्मिक अपने सुझाव, अपने संबंधित अधिकारियों के माध्यम से अथवा सीधे ही मुख्यालय की राजभाषा शाखा को भेजेंगे।

पात्र सुझाव का चयन

1. प्रत्येक वित्तीय वर्ष के दौरान प्राप्त सुझावों पर मुख्यालय में गठित मूल्यांकन समिति विचार करेगी।
2. समिति की सिफारिशों पर पुरस्कारों का निर्धारण किया जाएगा।
3. उपयोगी / पुरस्कृत सुझावों का पुरस्कार पाने वाले कर्मचारी के नाम का उल्लेख करते हुए उचित प्रचार भी किया जाएगा।

संदर्भ / स्रोत	
1. ए–49 / 16 / 11 / 94–हि. दिनांक 18.01.2006	2. ए–49 / 11 / 3 / 2007–रा.भा. दिनांक 17.04.2014
3. ए–49 / 16 / 3 / 2007–रा.भा. दिनांक 02.04.2018	

- यद्यपि प्रत्येक योजना / प्रतियोगिता के अंत में महत्वपूर्ण पत्रों का सदर्भ भी दिया गया है तथापि किसी भी संशय की स्थिति में अथवा अतिरिक्त जानकारी के लिए राजभाषा विभाग / मुख्यालय, क.रा.बी. निगम द्वारा समय–समय पर जारी निदेशों / आदेशों का संज्ञान लें एवं मुख्यालय से संपर्क करें।
- आशा है कि उपर्युक्त बिंदु निगम में प्रचलित प्रोत्साहन योजनाओं / प्रतियोगिताओं के आयोजन में सहायक होंगे।

"निगम की सेवाओं को बेहतर बनाने के सुझाव"

अमित बहादुर
सहायक

कर्मचारी राज्य बीमा निगम एक स्वायत्त संगठन है जो कि वर्ष 1952 से अस्तित्व में है। क.रा.बी. निगम का मूल उद्देश्य संगठित क्षेत्रों के व्याप्ति योग्य कर्मचारियों को समाजिक सुरक्षा प्रदान करना है। इस संगठन द्वारा व्याप्त कर्मचारियों को चिकित्सा हितलाभ, बीमारी हितलाभ, प्रसूति हितलाभ, अस्थायी एवं स्थायी अपंगता पेंशन आदि हितलाभ प्रदान किए जाते हैं। समय–समय पर क.रा.बी. योजना में हितलाभों में संशोधन किया गया है। आज के दौर में जहाँ सूचना प्रौद्योगिकी को बढ़–चढ़ कर हर क्षेत्र में इस्तेमाल किया जा रहा है, वहीं क.रा.बी. निगम ने भी इस बदलाव को स्वीकार किया व वर्ष 2011 से ऑनलाइन प्रणाली से जुड़ गया। बदलते समय में तकनीक के साथ हाथ मिलाकर क.रा.बी. निगम अपने मूल उद्देश्य को प्राप्त करने हेतु अग्रसर है तथापि कुछ और सुधार होने अपेक्षित हैं जिनका विवरण इस प्रकार है :–

ऑनलाइन डाक प्रणाली:–

कार्यालय चाहे कोई भी हो–क्षेत्रीय कार्यालय, उप क्षेत्रीय कार्यालय, चिकित्सालय, औषधालय अथवा शाखा कार्यालय, सभी में डाक प्राप्त की जाती हैं, चाहे वे पत्र के रूप में हों या फिर बिल, मांग पत्र, परिपत्र आदि के रूप में। चूंकि अभी भी कार्यालयों में डाक ऑफलाइन ली जाती है तो कहीं न कहीं इसमें कोताही के आसार हैं। निगम को ऑनलाइन डाक प्राप्ति व रसीद संख्या जारी करनी चाहिए जो कि डाक देने वाले व्यक्ति/कार्यालय को दी जानी चाहिए। ऑनलाइन डाक प्राप्ति की मदद से कोई भी व्यक्ति उसे ट्रेक कर सकता है कि डाक कब प्राप्त की गई, कब उस पर किस कर्मचारी व अधिकारी ने कार्रवाई की और अब डाक कहाँ पर लम्बित है।

राज्य सरकार द्वारा चलाए जा रहे सभी क.रा.बी. चिकित्सालयों/औषधालयों को स्वयं संचालन में लेना :–

निगम के गठन के समय चूंकि इस योजना को पूरे देश भर में लागू करना था जो बिना राज्य सरकारों की मदद के संभव नहीं था इसलिए उक्त स्कीम को संगठित क्षेत्रों की पहुँच तक लाने के लिए राज्य सरकारों को यह कार्यभार दिया गया था। आज भी राज्यों में निगम के अधिकांश औषधालयों, चिकित्सालयों का संचालन

राज्य सरकारें कर रही हैं व वहाँ राज्य के सरकारी कर्मचारी कार्यरत हैं। चूंकि उक्त राज्य सरकार के कर्मचारी केवल राज्य सरकार को जवाबदेह हैं इसलिए निगम (केंद्र) उन पर सीधे नज़र नहीं रख सकता। प्रायः यह देखा गया है कि राज्य सरकार द्वारा संचालित चिकित्सालयों/औषधालयों से कर्मचारी/मैडिकल स्टॉफ/पैरामैडिकल स्टॉफ नदारद रहता है। सर्विस मुहैया करवाने में कोताही बरती जाती है व औषधि उपलब्ध नहीं होती है। उक्त औषधालयों/चिकित्सालयों की जन शिकायतें भी क.रा.बी. निगम आदर्श अस्पतालों/औषधालयों की अपेक्षा बहुत अधिक हैं। अतः आज के समय को देखते हुए, जब क.रा.बी. योजना पूरे भारत में लगभग फैल चुकी है, यह आवश्यक है कि राज्य सरकारों की भूमिका को समाप्त करते हुए निगम सभी राज्य सरकारों द्वारा संचालित सभी चिकित्सालयों/ औषधालयों को अपने संचालन में ले जिससे कि हर बीमाकृत व्यक्ति को निगम स्वयं रुचि लेते हुए बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवा सके।

सामाजिक सुरक्षा अधिकारियों की कार्यसूची में साप्ताहिक जागरुकता कैम्पेन को शामिल करना :–

भले ही क.रा.बी. योजना पूरे भारत में कार्य कर रही है परन्तु अभी भी बहुत से नियोजक व कर्मचारी योजना से अछूते हैं व अनजान हैं। निगम के सामाजिक सुरक्षा अधिकारी जो कि फील्ड में रहते हैं, उनके कार्यों की सूची में फैक्ट्री जांच के अतिरिक्त साप्ताहिक जागरुकता कैम्पेन को भी शामिल किया जाना चाहिए। यह सामाजिक सुरक्षा अधिकारी का दायित्व होगा कि प्रत्येक सप्ताह के किसी एक दिन योग्य नियोजक/कर्मचारी अथवा चूककर्ता नियोजकों को क.रा.बी. योजना का महत्व आदि समझाए व अपने कार्यालय में इसकी रिपोर्ट प्रस्तुत करे। इस जागरुकता कैम्पेन से जहाँ पात्र कर्मचारियों को फायदा होगा वहीं निगम में चूककर्ताओं की संख्या में कमी आएगी व नए नियोजक भी इस योजना से जुड़ेंगे।

मांग (क्लेम) बिल/दुर्घटना सूचना को घर बैठे ऑनलाइन प्रस्तुत करना व शाखा कार्यालयों/औषधालयों से ऑनलाइन मिलने का समय प्राप्त करना :–

सूचना प्रौद्योगिकी का बेहतर इस्तेमाल करते हुए निगम को आवश्यकता है कि ऑनलाइन पोर्टल पर सभी प्रकार के बिल व दुर्घटना की सूचना रिपोर्ट को प्रेषित करने का अधिकार नियोजक को दे दिया जाए। नियोजक अपने अधीन कार्य कर रहे कर्मचारियों के हर प्रकार के बिलों के दस्तावेजों को व किसी कर्मचारी के दुर्घटनाग्रस्त होने की रिपोर्ट को ऑनलाइन अपलोड करेगा व निगम के शाखा कार्यालयों व औषधालयों में किसी एक कर्मचारी/अधिकारी को उक्त ऑनलाइन रिपोर्ट देखने हेतु नामित किया जाएगा जो कि यह ध्यान रखेगा कि बिल/सूचना में किसी दस्तावेज़ आदि की कोई कमी तो नहीं है। यदि किसी अन्य दस्तावेज़ की आवश्यकता है तो वह कर्मचारी/अधिकारी नियोजक को ई–मेल/वेब पोर्टल से उसकी मांग करेगा। दस्तावेज़ पूर्ण होने की स्थिति में पासपोर्ट कार्यालयों की भाँति उक्त कर्मचारी नियोजक को संबंधित बीमाकृत कर्मचारी को कार्यालय में मिलने/बुलाने हेतु ऑनलाइन मिलने का समय उपलब्ध करवाएगा। इस तरह संबंधित बीमाकृत व्यक्ति को व्यर्थ ही निगम के कार्यालयों के चक्कर नहीं काटने पड़ेंगे व कार्यालयों में भी भीड़ कम रहेगी।

इन सभी उपायों को आज के समय में प्रयोग करने से निश्चित ही निगम की योजना व सेवाओं को बेहतर बनाने में सफलता प्राप्त हो सकती है।

राजभाषा नियम 10 (4) के अंतर्गत अधिसूचित कार्यालय की न्यूनतम 40 प्रतिशत शाखाएँ शत प्रतिशत कार्य हिंदी में करने के लिए विनिर्दिष्ट की जानी अपेक्षित हैं।

कविता
परिचय

आज फिर किसी को रोते देखा .... कविता फूट पड़ी
आज फिर किसी को हँसते देखा .... कविता फूट पड़ी
आज फिर मौसम बदला – मैं कुछ गुनगुना उठा
आज एक बच्चे को मुस्काते देखा – मैं कुछ गा उठा

जीवन में सुख–दु:ख, हँसना–रोना, उत्सव–पर्व,
त्यौहार, प्रकृति सब जगह एक कविता है।
एक कवि हृदय चाहिए जो इसे देख सके,
समझ सके और कह सके, रच सके, गा सके।
जीवन के इस गीत में, प्रेम भरी प्रीत में, बसंत की सुगन्ध में, होली की उमंग में
हमारे निगम के कर्मियों ने भी कविता की कल्पना को साकार किया है।
आइए देखें कुछ कवि हृदयों को.....

एक और परिवार चला आया है

श्रीमती सीमा तनेजा
पत्नी श्री सुनील तनेजा
क्षेत्रीय निदेशक

अपने गाँव की देहरी को एक झटके में लांघ कर,
उथली हो गयी नदी के पाट बाँध कर,
मटियाले पेड़ों की छाया का आराम छोड़ कर,
अपनी कच्ची मड़ैया की टूटी खपरैल,
और गोबर से गंधाती दीवारें छोड़कर,
बच्चों की ताल के मटमैले पानी में छलांगे समेट कर,
उन्मुक्त किलकारियाँ, खिलखिलाते चेहरों की हँसी
एक फटी गठरी में मज़बूती से कैद कर,
क्योंकि सूखी बंजर ज़मीन पे सपने नहीं उगते,
खाली हवा से पेट नहीं भरा करते,
उपलों की आँच में उधार का दानव भस्म नहीं होता,
और गाँव के टीले की चढ़ाई से एवरेस्ट फतह नहीं होता,

तो आज फिर एक परिवार शहर चला आया है।

घरघराती हुई बस की छत पे सपने लादे,
पेट में आग और दिल में सिर्फ़ चंद अरमान छुपाए,
गाँव के पड़ोसी चाचा के दोस्त का नाम
चुन्नू की कॉपी के एक पर्चे में मज़बूती से लपेटे,
और आखिरी कुछ सौ के नोट अंटी में समेटे,
बड़े से शॉपिंग मॉल की झिलमिलाती रंगीन बत्तियों से परे
है 7X8 फ़ीट की गुफाओं की लम्बी कतार,
यही है इन पनियाई आँखों के सपनों की पनाह,
पास की सोसाइटी के चंद घर बने माँ की कर्मगाह,
लम्बी चमचमाती गाड़ियों में दिखती है पापा की मेहनत की फसल,
बहन की धोती में सिमटी टांगों को ढक लिया है
शोरूम की नीली पैंट–शर्ट वाली वर्दी ने
और पप्पू के स्कूल के बैग को साहब के ब्रीफकेस ने,
अटपटायी गंवई जुबां पे अब जगह ले ली है वेलकम, सॉरी और थैंक यू ने,

आज फ़िर एक शहरी चश्मे ने गाँव को रंगीन आँखें दे दी हैं।

गाँव का मछली वाला ताल, टीले वाली पहाड़ी, कच्ची पगडण्डी,
लहलहाती मटर की छीमी, अमरूद और आम का पेड़ नहीं तो न सही,
जंगली फूलों पे मंडराती तितलियाँ, सरपट भागती मुर्गियाँ,
बारिश में भीगे मोर के नीले पंख और चहचहाती चिड़ियाँ नहीं तो न सही,
पेट की आग बुझाने को भरपूर खाना और तन ढकने को साबुत कपड़े तो हैं,
गाँव की चौपाल और बतियाने को टाइम नहीं तो क्या, हाथ में एक मोबाइल तो है,
कमरे में खिड़की नहीं तो क्या, साहूकार के तकाज़ों की लटकी तलवार तो नहीं,
ज़मीन अपनी नहीं तो क्या, सपनों की उड़ान के लिए मुक्त आकाश तो है!

बस गम है तो सिर्फ यही, गाँव में शहर और शहर में गाँव नहीं होता।

वार्षिक कार्यक्रमानुसार न्यूनतम 25 प्रतिशत शाखाओं का राजभाषायी निरीक्षण किया जाना अनिवार्य है।

वर्तिका पाण्डेय
बहुकार्य स्टाफ

चमकता अँधेरा

चमकती चीज़ जो दिखी बाजार में मैंने उठा लिया,
दाम न पूछा उससे मैंने बस अपना बटुआ थमा दिया।
लाई जो मैं उसे घर सोचा कि हर मुश्किल हल होगी।
इस घर के अँधरे कोने में भी जुगनूं–सी रोशनी होगी।
था मालूम न मुझे कि कोनों का अँधेरा जरूरी है।
इस शख्सियत की हर नाकामियाँ भी रोशनी में होंगी।
अब रो रही मैं अपनी नाकामियों को उजाले में देख।
नहीं कह सकती अब खुद को फक्र से बंदा नेक,
अब लगता वो कोने अँधेरे ही अच्छे थे।
हम नाकामियों से छिप कर मुश्किल में ही अच्छे थे।

सरहदें

सविंदर सिंह भट्टी
रेड़ियोग्राफर

रिश्ता मोहब्बत का अब बहुत ही जलील हो चुका है,
क्योंकि दिलों में फासला अब गज नहीं, मील हो चुका है।

तुम भी बेखौफ हो कर दे सकते हो दर्द मुझे,
पहले जिगर झरना था मेरा, अब झील हो चुका है।

सारी दलीलें जज को ही देनी पड़ रही हैं अदालतों में,
क्योंकि वकील जज और जज वकील हो चुका है।

माँ की पेंशन, बाप की जायदाद का कितना खयाल रखता है,
आज का बेटा कितना विद्वान, कितना सुशील हो चुका है।

लोग अब घरों में ही ''सरहदें'' बना कर बैठे हैं भट्टी,
एक घर अब कई घरों में तब्दील हो चुका है।

रिश्ता मोहब्बत का अब बहुत ही जलील हो चुका है,
क्योंकि दिलों में फासला अब गज नहीं, मील हो चुका है।

घर से दूर नौकरी करने वालों को समर्पित

तृप्ति दीक्षित
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

घर जाती हूँ तो मेरा ही बैग मुझे चिढ़ाता है,
मेहमान हूँ अब ये पल-पल मुझे बताता है...........
माँ कहती है सामान बैग में फौरन डालो,
हर बार तुम्हारा कुछ न कुछ छूट जाता है............
घर पहुँचने से पहले ही लौटने का टिकट,
वक्त परिंदे सा उड़ता जाता है..........
उंगलियों पर लेकर जाती हूँ गिनती के दिन,
फिसलते हुए जाने का दिन वापस आ जाता है...........
अब कब होगा आना सबका पूछना,
ये उदास सवाल भीतर तक बिखराता है..............
घर के दरवाजे से निकलने तक,
बैग में कुछ न कुछ भरती जाती हूँ................
जिस घर की सीढ़ियां भी मुझे पहचानती थीं,
घर के कमरे के चप्पे-चप्पे में बसती थी मैं
लाइट्स, फैन के स्विच भूल डगमगाती हूँ ....
पास-पड़ोस जहाँ था बच्चा भी वाकिफ,
बड़े-बुज़ुर्ग बेटी कब आई पूछने चले आते हैं............
कब तक रहोगे पूछ अनजाने में वो,
घाव एक और गहरा कर जाते हैं..................
ट्रेन में माँ के हाथों की बनी रोटियां,
रोती हुई आँखों में धुंधला जाता है...........
लौटते वक्त वजनी हुआ बैग,
सीट के नीचे पड़ा खुद उदास हो जाता है..........
तू एक मेहमान है, अब ये पल मुझे बताता है......
आज भी मेरा घर मुझे वाकई बहुत याद आता है............

''पड़ाव''

हरप्रीत कौर
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

बचपन में रिमझिम सावन
किलकारियां–अठखेलियां लाता मनभावन।
किसी से बैर नहीं सब थे अपने,
शीघ्र बढ़ने के मन लेता था सपने।

ताँकना–झाँकना, ताड़ना–झेंपना,
मित्रों संग बतियाना खेलना।
यौवन का हर अंदाज नया था,
निद्रा–फिक्र जाने कहाँ गया था।

प्रौढ़ हुआ तो चिंता सताए,
पत्नी सौ–सौ काम बताए।
बच्चों के करते सपने पूरे,
अपने ख्वाब रह गए अधूरे।

वृद्ध होकर हुआ निढाल,
अपमान–तिरस्कार करे बेहाल।
साथी गया सब हुए पराए,
जाने क्यूँ कुछ न मन भाए।

पिता

जगदीश चन्द सूर्यवंशी
सहायक

माँ घर का गौरव, तो पिता घर का अस्तित्व होता है,
माँ के पास अश्रुधारा, तो पिता के पास संयम होता है,
दोनों वक्त का भोजन माँ बनाती है, तो पिता भोजन का व्यवस्थापक है,
ऐसे पिता को हम सहज ही क्यूं भूल जाते हैं,
कभी लगी जो ठोकर या चोट तो,
ओ माँ! ही मुँह से निकलता है, लेकिन,
सड़क पर कोई बस या ट्रक पास आकर ब्रेक
लगाए तो बाप रे! ही मुँह से निकलता है,
क्योंकि छोटे–छोटे संकटों के लिए माँ है, लेकिन
बड़े संकटों में पिता ही याद आते हैं,
पिता नीम के पेड़ जैसा होता है, जिसके
पत्ते भले ही कड़वे हों पर शीतल छाँव में
सम्पूर्ण परिवार सुख से रहता है, इसलिए
संघर्ष पिता से सीखें, संस्कार माँ से सीखें
बाकी सब कुछ दुनिया सिखा देगी।

मेरा पार्क

दलबारा सिंह
सहायक निदेशक
(सेवानिवृत्त)

सुबह–शाम यहाँ मेला लगता
सभी का मन वहाँ पर लगता
दुआ–सलाम सभी हैं करते
दोस्ती का दायरा और है बढ़ता
कुछ तो सैर करने को आएं
कसरत करके सेहत बनाएं
बातचीत से मन बहलाएं
बच्चे खेल और झूले लेकर खुश हो जाएं,
महिलाएँ मिलकर भजन भी गाएं
राम देव के चेले आएं
कुछ लोगों को योग सिखाएं
ब्रह्मकुमारी बहनें आकर
सब लोगों को प्रवचन सुनाएं
पार्क हमारे लिए वरदान
कुछ बीमारियों का यहां समाधान
खुश दिखें सभी इन्सान
सभी के लिए यह स्थान महान
बच्चे, बूढ़े सब मिल आएं
स्वच्छ भारत मिशन बढाएं
सभी एक–एक पौधा लगाएं
बढ़ाएं पार्क की और शान
सभी के लिए यह स्थान महान

वार्षिक लक्ष्य के अनुसार न्यूनतम 25 प्रतिशत अधीनस्थ कार्यालयों का राजभाषायी निरीक्षण अनिवार्य है।

हास्य व्यंग्य

जिन्दगी में इतने दु:ख दिए हैं यारों कि हँसना भूल गया हूँ
और जब-जब हँसने की कोशिश की है मैं फिर-फिर रो पड़ा हूँ

जीवन के तनाव, उधेड़बुन, समस्याएँ, दु:ख इतना बढ़ गया है कि मानव हँसना भूल गया है। आज की भागती-दौड़ती जिन्दगी, रोटी का जुगाड़, भविष्य की चिन्ताएं, सब मनुष्य को मार रही हैं। ऐसे में हास्य जीवन के लिए बहुत आवश्यक है।

हास्य से व्यक्ति स्वस्थ ही नहीं रहता, तनाव कम रहता है।

ऐसे ही कुछ प्रयास हमारे निगम कर्मियों ने भी किए हैं-

आइए थोड़ा पढ़ लें, जरा हँस लें।

हँसगुल्ले

तृप्ति दीक्षित
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

पत्नी : सुनो.. मेरा भी फेसबुक अकाउंट बना दो।
पति : तुम्हें फेसबुक चलानी आती है?
पत्नी : आप चलाना, मैं पीछे बैठ जाऊंगी।

एक चिड़ियाघर में एक तोते के पिंजरे के बाहर लिखा था-
''इंग्लिश, हिंदी और पंजाबी बोलने वाला तोता''
एक आदमी ने इस बात को टेस्ट करने के लिए तोते से पहले इंग्लिश में पूछा -
हू आर यू?
तोता - आई एम पैरेट।
आदमी (हिंदी में) - तुम कौन हो?
तोता - मैं एक तोता हूँ।
आदमी (इस बार पंजाबी में) - तुसी कौण हो जी?
तोता गुस्से में-तुहाडा प्यो, एको गल चार बार पुछदा पया है?
तुसी लत खा के ही मनना।

बहू:- पापा की परी हूँ मैं.....
सास:- हमारे यहाँ पापा की
परियों के पंख रिपेयर किए जाते हैं।

एक सजी-धजी महिला अपने पति के साथ डॉक्टर के पास गई।
महिला- एक दांत निकलवाना है, पर सिर्फ 5 मिनट में। कोई बेहोशी का इंजेक्शन या पेन किलर देने की जरूरत नहीं है। थोड़ा बहुत दर्द होता है, तो होने दो। पर जरा जल्दी करना, मुझे एक पार्टी में जाना है।
डॉक्टर- कमाल है! आप तो बहुत बहादुर महिला हैं। आइए! कुर्सी पर बैठिए।
महिला- (अपने पति से) जाओ बैठो, बता दो कौन सा दांत है।

हँसगुल्ले

पत्नी- मैं मायके तभी जाऊँगी जब आप मुझे छोड़ने जाओगे।
पति- मंजूर है, पर वादा करो कि घर भी तुम तभी आओगी जब मैं तुम्हें लेने आऊँगा।

बैंक लूटने के बाद...
डाकू- तुमने मुझे देखा?
क्लर्क - हाँ।
डाकू ने क्लर्क को गोली मारकर एक आदमी से पूछा- तुमने मुझे देखा...?
आदमी- नहीं, पर मेरी पत्नी ने देखा है, साथ में कह रही है कि पुलिस को भी बताऊँगी।

पत्नी- सुनो ! मेरे मुँह में मच्छर चला गया, अब क्या करूं......?
पति- पगली ऑल आउट पी ले, 6 सेकंड में काम शुरू।

वजह

मनीषा
प्रवर श्रेणी लिपिक

चलो फिर से हँसने की, हम कोई वजह ढूंढते हैं,
जिधर न हो कोई गम, वो जगह ढूंढते हैं।

क्या नुमाइश करना, माथे पर शिकन की,
हम अकसर मुस्कुरा कर, इन्हें मिटा दिया करते हैं।
जिन्हें गुस्सा आता है, वो लोग सच्चे होते हैं,
हम अकसर झूठों को, मुस्कुराते हुए देखते हैं।
गिरना भी अच्छा है, औकात बता देते हैं।
बढ़ते हैं जब हाथ उठाने को, अपने पता चलते हैं।

चलो फिर से हँसने की, हम कोई वजह ढूंढते हैं,
जिधर न हो कोई गम, वो जगह ढूंढते हैं।

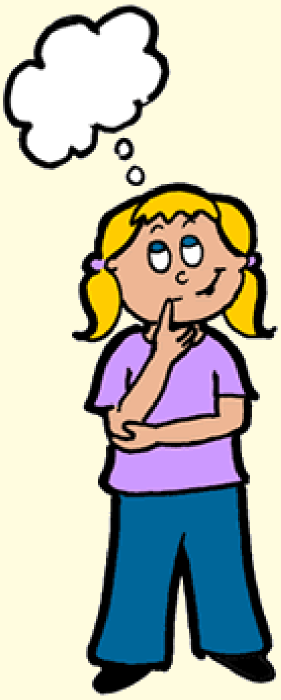

रिश्ते बस रिश्ते होते हैं,
कुछ एक पल के, कुछ दो पल के होते हैं।
छूटा साथ जिंदगी में, बहुत से अपनों का,
उन्हें खुश रहने की, हम दिल से दुआ देते हैं।
ढूंढ लेते हैं, अँधेरों में भी रोशनी,
जुगनू कभी रोशनी के, मोहताज नहीं होते हैं।

चलो फिर से हँसने की, हम कोई वजह ढूंढते हैं,
जिधर न हो कोई गम, वो जगह ढूंढते हैं।

मिल जाएगी मंजिल, एक दिन चलते–चलते,
गुमराह तो घर से, निकलते ही नहीं।
बहुत उड़ लिए, ऊँचे आसमानों में,
अब जमीं पर कहीं, हम सतह ढूंढते हैं।
बहुत वक्त गुजरा है, भटकते हुए अँधेरों में,
उन अँधेरी रातों में, चलो हम अब सुबह ढूंढते हैं।

चलो फिर से हँसने की, हम कोई वजह ढूंढते हैं,
जिधर न हो कोई गम, वो जगह ढूंढते हैं।

वर्ष 2017–18 में क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ के 13 कार्मिकों को टंकण प्रशिक्षण दिलवाया गया।

विचार अमृत

विचार जीवन दर्शन का सारामृत होते हैं जो इस संसार के समस्त चराचर का मूल भी हैं। विचार ही किसी कृति का आधार बनते हैं, विचार ही मनुष्य मात्र के जीवन को दिशा देने का आधार होते हैं, महा मनीषियों के विचारामृत ही समाज के पथ प्रदर्शक होते हैं, जिन्हें आत्मसात कर एक साधारण से साधारण आदमी भी अपने जीवन को धन्य बना लेता है। वास्तव में विचार ही वह शक्ति है जो सर्वप्रथम मस्तिष्क में आते हैं और तत्पश्चात् वे विचार किसी वस्तु, रचना या कृति आदि के रूप में साकार रूप ले लेते हैं।

क.रा.बी. निगम के हमारे कर्मियों ने भी अपनी लेखनी से विचार उकेरे हैं .. आइए देखें, किस सीपी से कैसा मोती निकलता है....

जीने की राह

अश्वनी कुमार,
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:ख भाग्भवेत्।

उपर्युक्त श्लोक में हमारे मनीषियों द्वारा प्राणी मात्र के लिए यह मंगल कामना की गई है कि सभी सुखी रहें, सब निरोगी हों, सभी का जीवन मंगलमय बने और किसी को कोई दु:ख ना हो। अगर गौर से देखें तो इस एक श्लोक में ही प्राणीमात्र के लिए ऐसी कामना कर दी गई है मानो कि कुछ और भगवान से मांगने के लिए बचा ही ना हो। काश! हर किसी की एक–दूसरे के प्रति ऐसी ही सोच विकसित हो और यह जग स्वर्ग से भी सुंदर बन जाए। एक–दूसरे के सहयोग की कामना से ही मनुष्य ने समाज बनाया तथा अपने–अपने सामर्थ्य के अनुसार सेवा भाव से एक–दूसरे की सेवा में लीन हो गए। कालांतर में धन अर्जन तथा एक–दूसरे से स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने की प्रवृत्ति ने जीवन का नजरिया ही बदल कर रख दिया और इसका परिणाम हुआ समाज में चारों ओर दिखावा, गरीबी, भुखमरी और नि:सहाय लोगों की हा–हाकार और दु:खों की चीत्कार। विकास की इस गति ने मानवता के परोपकारी रूप को कब रौंद दिया, कुछ पता ही नहीं चला। भविष्य में बच्चों को श्रेष्ठ बनाने के लिए गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने के नाम पर आज स्कूली शिक्षा किस दौर में पहुँच गई है, हम सब इससे परिचित ही हैं। अच्छी शिक्षा और चिकित्सा प्राप्त करना हर नागरिक का मौलिक अधिकार है परन्तु गरीबों के बच्चों के लिए तो ये ऐसे अमरफल हैं जिनका सेवन वो कभी नहीं कर सकते। सच तो यह है कि आज शिक्षा के लिए ड्रा तथा इलाज के लिए मैडिकल पॉलिसी अहम् रोल अदा करते दिखाई दे रहे हैं। जब कोई बीमार व्यक्ति इलाज के लिए किसी प्रतिष्ठित अस्पताल में पहुँचता है तो दुर्भाग्य देखिए कि डॉक्टर रोगी से रोग के लक्षण बाद में पूछता है पहले बड़े प्यार से पूछता है कि क्या आप के पास कोई मैडिकल पॉलिसी है। फिर पूछेगा कि कितने की है। आपके इन दोनों उत्तरों पर ही आपकी बीमारी की गम्भीरता और इलाज का पैमाना तय कर दिया जाता है। मौलिक अधिकारों की मौलिकता समझ से बाहर है। किसी प्रतिष्ठित स्कूल में दाखिला ड्रा पर निर्भर करता है न कि स्कूल से घर की दूरी पर। मासूम बच्चों को घर के समीप स्कूल होने पर भी सर्दी और बारिश के मौसम में रिक्शा या स्कूल बस द्वारा कई किलोमीटर का सफर तय करने पर मजबूर होना पड़ता है क्योंकि नजदीक के प्रतिष्ठित स्कूल के ड्रा में उनका नाम नहीं आया।

शिक्षा के नाम पर प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा दाखिले और फीस के मामले में की जा रही मनमानी से हम सब अवगत हैं। स्कूल स्तर की शिक्षा ही इतनी मंहगी हो गई है कि आम आदमी तो इन स्कूलों में अपने बच्चों को पढ़ाने की कल्पना भी नहीं कर सकता। हर वर्ष अप्रैल माह में समाचार पत्रों में अभिभावकों का दर्द देखने को मिल ही जाता है। फीस के नाम पर मोटी रकम वसूली जाती है परन्तु शिक्षा के नाम पर बच्चों से अधिक अभिभावकों को ही पढ़ाया जाता है। इन स्कूलों में बच्चे को कुछ शिक्षा मिले या ना मिले पर शायद ही कोई ऐसी मम्मी होगी जिसे वर्ष के अंत तक पूरा पाठ्यक्रम बच्चे के प्रोजेक्टों सहित अच्छे से याद ना हो जाता हो। आशय स्पष्ट है–प्रतिष्ठित स्कूलों का उद्देश्य है कि बच्चों और अभिभावकों को वर्षभर शिक्षा के नाम पर इतना तनाव में रखो कि उनको कुछ और सोचने का मौका ही ना मिले। ऐसे में अभिभावक बच्चों को कूट–पीटकर पढ़ाई तो तनाव में स्वयं ही करवा लेते हैं। इन स्कूलों द्वारा अध्यापकों को भी इस यज्ञ में आहुति देने और अभिभावकों का मूड खराब कर मासूम बच्चों की प्रतिदिन पिटाई करवाने का जुगाड़ डायरी के रूप में प्रदान कर दिया गया है। अच्छा मजाक है–पैसा भी ले लिया और बच्चा भी उलटा अभिभावकों के ही हवाले। यह सब अपने आप में हास्यास्पद भी लगता है। पर क्या करें? समाज के साथ कदमताल कर सभी को चलना पड़ता है। बच्चा किस स्कूल में पढ़ रहा है आखिर यह भी प्रतिष्ठा का सवाल बन चुका है। वरना आइ.ए.एस. तो गांव के सरकारी स्कूलों में पढ़े हुए बच्चों को भी बनते देखा है। खैर अभी हमारे समाज के जागरुक लोग मंदिर, मस्जिद, धर्म और जाति जैसे गंभीर मुद्दों को सुलझाने में लगे हुए हैं। मैं पूर्णरूप से आश्वस्त हूँ कि इन गंभीर मुद्दों को सुलझाने के बाद वो शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में हो रही मनमानी की ओर भी अपना ध्यान देंगे और वे प्रतिष्ठित निजी शिक्षण संस्थानों एवं अस्पतालों के विरुद्ध मिलकर अपनी आवाज उठाएंगे और सरकार से मांग करेंगे कि इन निजी संस्थानों को अनुदान प्रदान कर सरकारी दरों पर ही हर नागरिक को अपनी सेवाएँ प्रदान करने के लिए बाध्य करे और इनकी मनमानी पर लगाम लगाए ताकि 'सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय' का संकल्प लेकर समाज सेवा के क्षेत्र में ये अहम् भूमिका निभा सकें। ऐसे में सही मायने में हर नागरिक को उसके मौलिक अधिकार मिल सकेंगे और जीवन की राह आसान हो सकेगी।

खुशी क्या है?–एक विश्लेषण

प्रभात
प्रवर श्रेणी लिपिक

खुशी क्या है? इसका कोई सीधा जवाब नहीं है, क्योंकि इस सवाल का अर्थ स्पष्ट नहीं है। साधारणतया खुशी एक ऐसी भावना है जिसकी जड़ें निजी धारणा से उत्पन्न होती हैं। खुशी की तलाश करना हमारी प्राकृतिक वृत्ति का एक हिस्सा है। खुशी कई प्रकार के रूप ले सकती है, लेकिन यह हमारे अधिकांश निर्णयों में अंतर्निहित प्रेरक है। इस भावना को पाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति के पास अलग–अलग धारणाएं और विश्वास होते हैं जिन्हें उन्हें पूरा करना होता है। अधिकांश लोग बाहर खुशी की तलाश करते हैं। उनका मानना है कि अगर उनके पास कुछ चीजें हों या कुछ लोगों का साथ हो या अपने पेशे में ऊँचाई तक पहुँच जाएँ तो वे खुश रह सकते हैं। यह उन्हें बचपन से सिखाया जाता है। सभी उल्लेखनीय चीजें एक अच्छी जिंदगी के लिए जरूरी हैं लेकिन जरूरी नहीं कि वे खुशी भी ला सकें। हमें यह समझना होगा कि स्थायी खुशी बाहर से नहीं बल्कि अंदर से आती है और जो केवल आप ही अपने लिए ला सकते हैं।

"खुशियों का कोई रास्ता नहीं होता,
खुश रहना ही रास्ता है।"

छोटी से छोटी बात में भी खुशी ढूंकी जा सकती है। जैसा हम सोचते हैं, देखने का नजरिया रखते हैं, वही हमें मिलता है। खुश रहने के लिए हमें किसी वजह की तलाश नहीं करनी चाहिए। अगर किसी वजह से खुश हैं तो आप खतरे में हैं क्योंकि वो वजह आपसे कभी भी छिन सकती है। हमें यह समझने की जरूरत है कि खुशी मूलतः मन की अवस्था है। सच्ची खुशी पाने के लिए खुद के अंदर झाँकना महत्वपूर्ण है लेकिन सकारात्मक लोगों के साथ रहना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। मूल रूप से हमारे विचार ही हैं जो हमारी भावनाओं को बनाते हैं। अतः हमें सकारात्मक विचारों और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के निर्माण पर काम करने की जरूरत है और अंत में यही खुशी का कारण बनेगी। किसी संत ने सही कहा है कि –

"क्या लेकर के आया जग में, क्या लेकर के जाएगा,
मुट्ठी बांधे आया जग में, हाथ पसारे जाएगा।"

एक और एक ग्यारह.....

मुल्तान चन्द्र
सहायक

यह लेख एक सच्ची घटना पर आधारित है। शुक्रवार 29 जून 2018 को क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ में बहुत सुहाना दिन था। माह का अंतिम कार्य दिवस और वेतन दिवस था। सभी कर्मचारी अपने–अपने कार्यों में व्यस्त थे। लगभग ग्यारह बजे मुझे कुछ खाने की इच्छा हुई और मैं लेखा शाखा में श्री संदीप वालिया (सहायक) के पास गया। हम दोनों उनकी शाखा से जैसे ही बाहर निकले, कर्मचारियों का शोर सुनाई दिया। कर्मचारी कैंटीन की ओर के रास्ते से मुख्य भवन ब्लॉक–1 की तरफ भाग रहे थे। एक कर्मचारी भागते हुए आ रहा था। हमने उससे पूछा, ''क्या हुआ? इतनी अफरा–तफरी क्यों है?'' उन्होंने उत्तर दिया कि कैंटीन के सिलेंडर में आग लगी है। सिलेंडर में लगी आग की बात सुनते ही श्री संदीप वालिया और मैं स्थिति देखने के लिए कैंटीन की ओर भागे।

हमने देखा कि कैंटीन से मुख्य भवन ब्लॉक–1 के रास्ते से सभी लोग भागे चले आ रहे हैं और वहाँ उस ओर धुआँ ही धुआँ होने लगा है। मेरी नज़र श्रीमती शालु (कांट्रैक्ट स्टॉफ) पर पड़ी और मैंने उनसे पूछा कि आग लगे कितनी देर हो गई है। उन्होंने कहा कि बहुत देर हो चुकी है। उसी समय श्री भारत भूषण वालिया (प्र.श्रे.लिपिक) ने श्री जयंक अहुजा (राष्ट्रीय स्तर के बैडमिंटन खिलाड़ी) को आवाज लगाई, ''जयंक जल्दी जाओ और पैंशनर्स को क्लब से हटाओ।'' आवाज सुनते ही श्री जयंक अहुजा ने जाकर पैंशनर्स को वहाँ से हटाया। हम दोनों भी खुली हुई खिड़की से बाहर निकलकर कैंटीन के सामने गैलरी की खिड़की से अंदर गए। वहाँ बहुत धुआँ हो चुका था। श्री सागर कंठ (सहायक), श्री भारत भूषण वालिया के साथ वहाँ आग बुझाने का प्रयास कर रहे थे परंतु आग भयंकर रूप लेती जा रही थी। प्लास्टिक पिघल कर नीचे गिर रहा था। आस–पास गर्मी बढ़ती जा रही थी। ऊपर सीलिंग में लगी लाइटें फट रही थी। इसलिए अंदर जाना खतरे से खाली नहीं था।

आग की गर्मी का एहसास बाहर गैलरी तक होने लगा था। इतने में बाहर से किसी की आवाज़ आई, ''फायर ब्रिगेड को फोन कर दिया है, वहाँ से हट जाओ।'' मगर श्री सागर ने हम दोनों से कहा, ''नहीं यार, आग बुझाते हैं।'' श्री सागर की बात सुनकर और उसकी हिम्मत देखकर हम दोनों ने भी वहाँ रहकर आग बुझाने का फैसला किया। उसी समय श्री सागर व भारत भूषण वालिया भागकर अग्निशामक सिलेंडर लेकर आए। एक खिड़की से श्री संदीप वालिया और दूसरी खिड़की से मैंने अग्निशामक सिलेंडर से आग पर ज़ोरदार स्प्रे किया और थोड़ी ही देर में अग्नि शामक सिलेंडर समाप्त हो गए। उसी समय श्री राजू, एम.टी.एस. ने गैलरी के साथ कैंटीन के बाहर पार्क वाली तरफ रखी पानी की पाइप आग बुझाने के लिए अंदर पकड़ाई। तब तक चारों तरफ आग का धुआँ फैल चुका था। अंदर कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था जिससे कैंटीन के बाहर गैलरी में भी धुआँ और घुटन होने लगी थी। घुटन और धुएँ से बचने के लिए गैलरी की खिड़कियों के शीशे जो कि पूरी तरह से बंद थे, तोड़ने पड़े। शीशे टूटते ही धुआँ छँटने लगा और आग वाले स्थान पर कुछ–कुछ दिखाई देने लगा।

शीशा तोड़ते समय मेरी दो अंगुलियाँ कट गई, खून बहने लगा और मुझे वहाँ से जाना पड़ा। मैं पार्किंग में पहुँचा। वहाँ लगभग सारा स्टॉफ खड़ा था और फॉयर ब्रिगेड के आने का इंतजार कर रहा था। मेरी अंगुलियों से खून निकलते देख श्री हरविंदर सिंह (सहायक) ने जल्दी से अपना रुमाल निकालकर अंगुलियों पर लपेट दिया और मुझे अपनी बाइक पर प्राथमिक चिकित्सा केंद्र, सैक्टर–19 में ले गए। खून बंद न होते देख डिस्पैंसरी–19 ने सैक्टर–16 चिकित्सालय में रेफर कर दिया। श्री हरविंदर सिंह जी मुझे वहाँ ले गए और वहाँ मेरी अंगुलियों पर टांके लगवाए जिससे खून बहना बंद हो गया। कार्यालय में वापस लौटते ही क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने मुझे बुलवाया और श्री

वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार कार्यालय की वेबसाइट पूर्णतः द्विभाषी होनी चाहिए।

अमित बहादुर (सहायक) तथा श्री सोमनाथ (ड्राइवर) के साथ क.रा.बी. निगम आदर्श अस्पताल, रामदबार, चंडीगढ़ जाकर पुनः चेकअप करवाकर उन्हें सूचित करने को कहा। वहाँ पहुँचते ही क्षेत्रीय निदेशक महोदय की व्यक्तिगत रुचि के कारण मेरा तुंरत चेकअप हुआ और मैं दवाइयाँ आदि आवश्यक सेवाएँ प्राप्त करने के बाद क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ लौट आया।

उसी दौरान दूसरी ओर अन्य कर्मचारी श्री अजय शर्मा (सहायक), श्री रोहित कुमार (प्र.श्रे.लिपिक) वहाँ पहुँच गए। बाद में कुछ अन्य कर्मचारी भी सहायतार्थ वहाँ पहुँचे व आग बुझाने का यथासंभव प्रयास करने लगे। कुछ कर्मचारी कैंटीन के बाहर बने हुए पार्क से इस घटना की वीडियो रिकार्डिंग करने लगे। घटना स्थल पर धुआँ कम होते ही श्री संदीप वालिया ने बिना अपनी परवाह किए कैंटीन के अंदर जाकर स्थिति का जायज़ा लिया और सिलेंडर पर स्प्रे के दौरान गिरे पाउडर को हटाकर गैस रेगुलेटर से गैस सप्लाई बंद कर दी जिससे आग पर काबू पाया जा सका। आग बुझते ही उन्होंने गैलरी में जाकर चिल्लाते हुए सबको सूचित कर दिया और अफरा–तफरी का माहौल कुछ शांत हो गया। पुलिस तथा फॉयर ब्रिगेड के वहाँ पहुँचने से पहले ही निगम के सजग और साहसी कर्मचारियों के श्रम से आग बुझाई जा चुकी थी। सूचना मिलते ही क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने मौके पर पहुँचकर स्थिति का जायज़ा लिया और कर्मचारियों द्वारा किए गए साहसिक कार्य की सराहना की।

दो जुलाई 2018, सोमवार को मैं कैंटीन संचालक अंकल और आंटी से मिला। उन्होंने मेरा हाल–चाल पूछा और मुझे बताया कि आग लगते ही वहाँ उन्हें कुछ नहीं सूझा और उनके हाथ–पाँव फूल गए थे। इसी दौरान वहाँ से गुजर रहे श्री सागर कंठ ने तीव्रता से उन्हें बाहर निकाला और कैंटीन के बाहर टंगे अग्निशामक सिलेंडर उठाकर आग पर स्प्रे करना शुरू कर दिया। कुछ समय में हम दोनों भी वहाँ पहुँच चुके थे।

इस घटना से मुझे एक लघु कथा याद आ गई। एक नन्हीं चिड़िया जंगल में लगी आग को बुझाने के लिए सागर से अपनी चोंच में पानी भर–भर कर जंगल की आग पर डालती है। उसके साथी उससे कहते हैं, ''तेरी चोंच के पानी से आग नहीं बुझेगी। तेरी चोंच बहुत छोटी है और आग की लपटें बहुत बड़ी।'' नन्हीं चिड़िया ने कहा, ''मुझे मालूम है, मगर मैं प्रयास करना नहीं छोड़ सकती।'' उसके प्रयासों को देखकर जंगल के अन्य जानवर भी सहयोग करने लगे और मिलकर आग को बुझा दिया।

मैं समझता हूँ कि श्री सागर कंठ ने अपने प्राणों की परवाह किए बिना जो पहल की थी, वह उस नन्हीं चिड़िया की तरह प्रेरणा व साहस की एक मिसाल है। कुछ वर्ष पहले सत्रह जुलाई 2009 को एक अन्य कर्मचारी श्री आर.एस.रावत (सा.सु.अधि.) द्वारा भी इसी प्रकार की मिसाल पेश की गई थी जिसका विवरण क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ के प्रांगण में लगे प्रेरणा पटलों पर पढ़ा जा सकता है जोकि प्रेरणा का एक स्रोत है।

आग की इस घटना से सबक लेकर क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कर्मियों को अग्निशामक यंत्रों के प्रयोग का विशेष प्रशिक्षण दिया गया है।

गैस सिलेंडर में लगी आग की घटना से बचने के कुछ उपाय :–

1. गैस सिलेंडर के रेगुलेटर व पाइप की नियमित जाँच करवाएँ। 2. गैस रिसाव को नज़र अंदाज़ न करें। खिड़कियाँ आदि खोलकर फैली हुई गैस को बाहर जाने का रास्ता दें। 3. अग्निशामक सिलेंडर आस–पास ही लगवाएँ तथा नियमित रिफिल करवाएँ। 4. एक्सपायर अग्निशामक सिलेंडर को रिफिल करवाने से पहले सिखाने/अभ्यास हेतु प्रयोग में लाया जा सकता है। 5. आग लगने पर घबराएँ नहीं, आने–जाने का रास्ता खाली करें तथा फायर ब्रिगेड को सूचित करें। 6. फायर बिग्रेड के आने तक औरतों, बच्चों तथा वृद्धों को आग के स्थान से तुरंत हटाएँ। 7. मदद के लिए तुरंत पुकारें व आग वाले स्थान से आग पकड़ने वाले सामान को हटाएँ ताकि आग न फैले तथा बिजली का कनेक्शन बंद कर दें।

कैंटीन में लगी आग को बुझाने वाले कार्मिकों को विशेष सम्मान

नियमानुसार विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष में चार बैठकें आयोजित की जानी अनिवार्य हैं।

लेडी सहवाग : स्टार बल्लेबाज हरमनप्रीत कौर

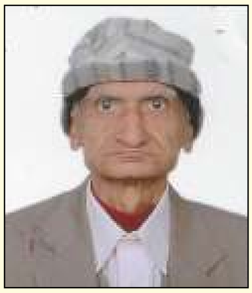

सुभाष चन्द्र गुप्ता
उप निदेशक (सेवानिवृत्त)

हम जब भारतीय खेल–जगत के इतिहास पर नजर डालते हैं, तो भारतीय हॉकी और क्रिकेट की उपलब्धियों पर गर्व होता है। भारतीय क्रिकेट जगत में जहाँ सुनील गावस्कर, क्रिकेट के भगवान सचिन और स्टार बल्लेबाज सहवाग की प्रशंसा होती है, तो यह प्रशंसा सौरभ गांगुली, एम. एस. धोनी और विराट कोहली तक चली जाती है, वहीं महिला क्रिकेट जगत में स्टार बल्लेबाज लेडी सहवाग हरमनप्रीत कौर को याद रखना होगा। इन्होंने महिला क्रिकेट जगत में कई कीर्तिमान स्थापित किए हैं। उनके कीर्तिमानों और उपलब्धियों का एक लम्बा सफर है।

पंजाब प्रांत में एक छोटा सा शहर है – मोगा। यहाँ हरमिन्दर भुल्लर रहते थे। उन्हें बास्केट बॉल का बहुत शौक था। बचपन में वे स्कूल टीम में खेला करते थे, मगर खेल को वे कैरियर नहीं बना सके। खेल को कैरियर बनाने की तमन्ना अधूरी रह गई व काम की तलाश में वे इधर–उधर भटकते रहे। आखिर एक दिन उन्हें एक बड़े वकील के यहाँ मुंशी की नौकरी मिल गई। नौकरी मिलने के कुछ दिन बाद ही मोगा में रहने वाली सतविन्दर के साथ उनकी शादी हो गई। उनका परिवार बस गया और वे घर–गृहस्थी में रम गए। जिन्दगी ने रफ्तार पकड़ी। जिन्दगी चल पड़ी। घर–गृहस्थी की जिम्मेदारियों के साथ बास्केट बॉल का बुखार अब उतर चुका था। अब यह साफ हो गया था कि वे अब खिलाड़ी नहीं बन सकते। घर–गृहस्थी की गाड़ी अब पटरी पर आ गई थी। सतविन्दर अब माँ बनने की तैयारी करने लगी। 8 मार्च 1989 को सतविन्दर ने एक बेटी को जन्म दिया। बाप ने बच्ची का नाम हरमनप्रीत रखा। बेटी के जन्म पर कोई बधाई देने नहीं आया। उस समय में बेटी के जन्म पर खुशियाँ नहीं मनायी जाती थी। कोई जश्न नहीं मनाया जाता था, जबकि बेटे के जन्म पर पूरा मोहल्ला उमड़ पड़ता था। यह सब देखकर हरमिन्दर का दिल अवसाद से भर गया, मगर वह चुप रहे।

बेटी अब बड़ी होने लगी, स्कूल जाने लगी। स्कूल और घर में उसे क्रिकेट खेलने में बहुत दिलचस्पी थी। उसे क्रिकेट खेलना बहुत अच्छा लगता था। पिता उसे हॉकी का खिलाड़ी बनाना चाहते थे, मगर उसे किक्रेट खेलना पसंद था। क्रिकेट खेलने में उसे काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता था। लड़कियों का क्रिकेट खेलना अच्छा नहीं समझा जाता था। साथ खेलने के लिए लड़कियाँ नहीं मिल पाती थी, उन्हें मनाना पड़ता था। जब लड़कियाँ खेलने को नहीं मिलती थी तो लड़कों के साथ खेलना पड़ता था। इस तरह उन्होंने पास–पड़ोस के लड़कों के साथ खेलना शुरू किया। लड़कों के साथ खेलने में काफी परेशानी होती थी। लड़कियों का खेलना नई बात थी। पड़ोसियों को अजीब लगता था, जब वह लड़कों की तरह कपड़े पहनकर बैट लेकर निकलती थी। कई बार हरमन पापा के साथ खेल के मैदान में पहुँचती थी तो लड़के बड़े अक्खड़ अन्दाज में एक दूसरे से गाली–गलौच की भाषा में बातें करते थे। इसके अलावा उल्टी–सीधी बातें, गलत कमेंट्स आदि सब रहता था। कई बार मन में आता था कि वह लड़कों को जमकर फटकार लगाए। उसे यह भी पता था कि ऐसा करने से कुछ होने वाला नहीं है। साथ में डर भी लगता था कि ज्यादा

विवाद होने पर कहीं बात बिगड़ न जाए।

क्रिकेट खेलने में उसके पापा ने उसका पूरा साथ दिया। उसे क्रिकेट खेलते देखकर उसके पापा को बहुत सुकून मिलता था। उन्हें लगता था कि उनका खेलने का शौक अधूरा नहीं रहा, वह पूरा हो रहा है। हरमन अपने पापा के साथ टीवी पर पूरा मैच देखती थी और खेल के बारे में डिस्कस करती थी।

दसवीं कक्षा पास करने के बाद हरमनप्रीत ज्ञान सागर स्कूल पढ़ने गई। हरमिन्दर ने अब यह तय कर लिया था कि वह अपनी बेटी को क्रिकेट की ट्रेनिंग दिलवाएंगे। कोच कुलदीप सिंह सोठी के नेतृत्व में ट्रेनिंग शुरू हुई। हरमन ने पूरे मनोयोग से क्रिकेट की ट्रेनिंग लेनी शुरू की। कुछ ही दिनों में कोच ने यह भविष्यवाणी कर दी कि हरमन बहुत बड़ी क्रिकेटर बनेगी। अब मोहल्ले के लोग उसे 'हेरी' कहकर पुकारने लगे। हेरी ने मन ही मन तय कर लिया कि एक दिन ऐसा खेलेगी कि लड़के मेरे लिए तालियाँ बजाने के लिए मज़बूर हो जाएंगे।

इसी दौरान पंजाब क्रिकेट की तरफ से उसे जिला फिरोजपुर टीम के लिए खेलने का मौका मिला। शुरूआत में उन्होंने ऑलराउन्डर के तौर पर खेलना शुरू किया। मोगा में लड़कियों का क्रिकेट खेलना अजीब सा समझा जाता था, पर हरमिन्दर ने हिम्मत दिखाई। वह हिम्मत के साथ हरमनप्रीत को आगे बढाते रहे। पापा हरमिन्दर ने कहा, ''कभी सोचा नहीं था कि मेरी बेटी इतनी बड़ी क्रिकेटर बन जाएगी।''

राज्य क्रिकेट टीम की शानदार पारी के बाद 2009 में उन्हें पहला वन डे मैच खेलने का मौका मिला। यह साल उनका सबसे अधिक यादगार साल रहा। सन् 2013 में इंग्लैन्ड के विरुद्ध वर्ल्ड कप मैच में शतक जड़कर वह सुर्खियों में आ गई। महिला क्रिकेट में यह शानदार कामयाबी थी। इसके बाद वह अपना खेल बराबर निखारती रही। सन् 2016 से आस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेलते हुए भारतीय टीम ने टी–20 में शानदार और सबसे बड़ी जीत दर्ज की। हरमन ने उस मैच में 31 गेदों पर 46 रन बनाकर जीत में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी साल उन्हें मिताली राज की जगह भारतीय महिला टी–20 टीम की बागडोर सौंप दी गई। इस जिम्मेदारी को उन्होंने बड़े सही ढंग से निभाया। हरमनप्रीत कौर स्टार ओपनर वीरेन्द्र सहवाग को अपना रोल मॉडल मानती हैं और सहवाग की तरह ही ताबड़–तोड़ बल्लेबाजी करती हैं।

हरमन की उपलब्धियों का इतिहास इस प्रकार है – हरमन महिला विश्व लीग में खेलने वाली पहली भारतीय महिला खिलाड़ी है। हरमनप्रीत कौर बास्केट बॉल और वॉलीवाल की भी अच्छी खिलाड़ी है। सन् 2014 में हरमन क्रिकेट के लिए मुम्बई चली गई, जहाँ वह रेलवे में काम करने लगी। वे मुंबई के पश्चिमी रेलवे के मुख्य कार्यालय में अधीक्षक के पद पर तैनात थी। विश्व कप में उनके शानदार प्रदर्शन को देखते हुए रेल मंत्रालय ने उन्हें समय से पहले पदोन्नति देकर पश्चिमी रेलवे ग्रुप 'बी' के अधिकारी के तौर पर ओ. एस. डी. (खेल) नियुक्त कर दिया। भारतीय महिला टी–20 क्रिकेट टीम की कप्तान हरमनकौर एक मार्च, 2018 को पंजाब पुलिस में पुलिस उप अधीक्षक (डी. एस. पी.) के पद पर तैनात हो गई। भारतीय रेलवे ने मोगा निवासी हरमनप्रीत कौर को उनके पद से मुक्त कर दिया है क्योंकि वह पंजाब पुलिस से जुड़ना चाहती थी। भारतीय टी–20 क्रिकेट टीम कप्तान हरमनप्रीत कौर दिनांक 1/3/2018 गुरूवार को पंजाब पुलिस से जुड़ गई। पंजाब के मुख्यमंत्री और पुलिस महानिदेशक ने उनकी वर्दी पर स्टार लगाए। डी. जी. पी. सुरेश अरोड़ा ने कहा कि युवा क्रिकेटर हरमनप्रीत की यूनीफार्म पर स्टार लगाकर मैं गर्व महसूस कर रहा हूँ।

चक्सट में पाँच मैचों की टी–20 सीरीज में भारतीय टीम का नेतृत्व हरमनप्रीत कौर ने किया। आई.सी.सी. महिला कप 2017 में इन्डियन महिला क्रिकेट टीम उप विजेता रही। आस्ट्रेलिया के खिलाफ सेमीफाइनल में हरमनप्रीत कौर ने 115 गेंदों पर 20 चौके और 7 छक्के लगाकर नाबाद 171 रनों की धुआँधार पारी खेली। इस शानदार पारी के बाद पंजाब स्थित उनके गृह नगर मोगा में खुशी की लहर दौड़ गई। मोगा में उनके घर में दोस्तों और शुभचिन्तकों का बधाई देने के लिए तांता लग गया।

सहवाग ने हरमन को बधाई देते हुए कहा, ''हरमनप्रीत कौर की यादगार पारी! क्या शानदार क्लीन हिटिंग रही, यह एक विश्वसनीय पारी है''।

वीर शहीदों को सलाम

बिशम्बर दास
सहायक

आज जब भी मैं टेलीविजन या अखबार आदि में जवानों की शहादत के बारे में पढ़ता हूँ तो मेरा शीश उनके प्रति श्रद्धाभाव से मन ही मन झुक जाता है। आज हम और हमारा देश इन जैसे वीर जवानों के कारण ही सुरक्षित है। हमारे बहादुर सिपाही कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी दिन–रात हमारी और देश की सुरक्षा हेतु सदा समर्पित रहते हैं और देश के मान–सम्मान हेतु अपनी जान की बाजी भी लगा देते हैं। ऐसे वीर शहीदों को मैं नमन करता हूँ ।

मेरे एक दोस्त श्री लीलाधर शर्मा जी हैं। वे एक पत्रकार हैं और बहुत सी धार्मिक संस्थाओं और सामाजिक संगठनों से जुड़े हुए हैं। सेना के प्रति उनके सेवा भाव और आसफवाला स्थित शहीद सिपाहियों की याद में करवाए जाने वाले कार्यक्रमों में, सहयोग आदि देने के लिए उन्हें सेना के बड़े अफसरों द्वारा सम्मानित भी किया गया है।

उन्हीं से प्रेरणा पाकर मेरे मन में खयाल आया कि हमारे देश के शहीद जवानों के बारे में, जिन्होंने फाजिल्का के बार्डर पर अपना बलिदान दिया है, थोड़ा–बहुत लिखूं।

मेरा पैतृक स्थान फाज़िल्का नगर है जो कि भारत–पाक सरहद से महज 10–12 किलोमीटर दूर पड़ता है। इस बार्डर का नाम सुलेमानकी (सादकी) है। यहाँ पर हर रोज़ सेरेमनी परेड भी होती है जिसे देखने के लिए अन्य राज्यों से भी बहुत से लोग फाजिल्का नगर के इस बार्डर पर आते हैं। फाजिल्का के इस बार्डर से 6–7 किलोमीटर दूर आसफवाला गाँव में उन शहीदों की समाधि है जो कि 1965 व 1971 की लड़ाई में शहीद हुए थे जिसे 1973 में बनाया गया था। इसका उद्घाटन पंजाब के भूतपूर्व मुख्यमंत्री ज्ञानी जैल सिंह जी द्वारा किया गया था जो बाद में भारत के राष्ट्रपति बने।

यह समाधि उन वीर जवानों की याद में बनाई गई थी जो 1971 की भारत–पाक लड़ाई में शहीद हुए थे। इस बार्डर पर शहीद हुए सभी जवानों को एक संयुक्त चिता में अग्नि भेंट की गई थी। उनकी याद में यहाँ पर एक सुंदर समाधि स्थल का निर्माण किया गया था।

मुझे याद है कि जब 1971 में भारत–पाक में जंग हुई थी उस समय मैं ग्यारह वर्ष का था और हमारा परिवार भी मेरे नाना के घर जैतों आ गया था। मेरे स्व. पिता जी उस समय जंग के दौरान भी फाजिल्का में ही रहे थे। हमारे और अन्य घरों में भी सेना के जवानों ने अपना ठिकाना बनाया हुआ था और हमारे घरों के आस–पास भी सेना ने कच्चे मोर्चे व खाइयाँ बना रखी थी।

मेरे पिता जी बताते थे कि बार्डर पर बहुत भीषण लड़ाई हुई थी। यहाँ के बेरीवाला पुल पर भी दोनों सेनाओं में जबरदस्त लड़ाई हुई थी। हरियाणा के इन वीर रणबांकुरों ने अपनी वीरता के जौहर पाकिस्तानी सेना को दिखाए थे और देश की रक्षा करते हुए बहुत से वीर जवानों ने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया था।

देश पर मर मिटने वाले इन वीर जवानों को मेरा शत-शत प्रणाम।

मनुष्य की मानसिकता

निपेन्द्र सिंह
प्रवर श्रेणी लिपिक

मनुष्य सारी जिन्दगी घमंड में जीता रहता है कि मेरे पास बहुत बड़ा मकान है, दुकान है, खेती की ज़मीन है और मेरे पास बहुत बड़ी कार है। मेरे बच्चे बहुत सुन्दर हैं। मैं भी बहुत सुन्दर और बलवान हूँ। हम सब एक ही भगवान के बंदे हैं। भगवान एक ही है। भगवान को किसी भी नाम से याद करो–अल्लाह ताला, ईश्वर, गोड या वाहे गुरू–भगवान का कोई रंग या रूप नहीं है। वह सब जगह विद्यमान है। भगवान किसी मन्दिर में नहीं है। मनुष्य को अपने कर्मों का फल मिलता है। अगर हम इस जन्म में अच्छा करेंगे तो अगले जन्म में हमें अच्छा मिलेगा। मनुष्य एक दिन इस संसार में सब कुछ छोड़ कर चला जाता है। परिवार वालों का कितना भी प्यारा हो उसको घर में एक दिन भी नहीं रख सकते हैं। फिर भी मनुष्य गलत कार्य करता है तथा माया को गलत तरीके से कमाने में लगा रहता है। मनुष्य को पता होना चाहिए कि मकान या माया मेरे साथ कुछ नहीं जाएगा। मैं इस संसार में जब पैदा हुआ तब कुछ नहीं लाया, मरने के बाद कुछ अपने साथ नहीं ले जाऊँगा। फिर भी मनुष्य को रात–दिन पैसा कमाने की चिन्ता रहती है। तन, मन, धन केवल व्यवहार के लिए हैं। माया प्यार के लिए नहीं और परमात्मा केवल प्यार के लिए है। तन, मन, धन सब निरंकार का है। फिर भी जीव तन, मन, धन को अपना और अपने लिए ही मानता रहता है।

सु–विचार

हरदयाल चन्द
अधीक्षक

जीतने का मजा तभी आता है,
जब सभी आपके हारने का इंतजार कर रहे हों।
अपने बीते हुए कल को, अपना आज का समय, ज्यादा ना लेने दें।
दूसरों की बुराई देखना और सुनना ही, बुरा बनने की शुरुआत है।
यदि पहला बटन गलत लगे, तो बाकी भी गलत लगते हैं।
ईश्वर चित्र में नहीं, चरित्र में बसता है, अपनी आत्मा को मंदिर बनाओ।
जिन्दगी तो हल्की–फुल्की सी है, बोझ तो बस ख्वाहिशों का है।
गलती करना बुरा नहीं है, गलती से सीख ना लेना बुरा है।
शब्द से खुशी, शब्द से गम, शब्द से पीड़ा, शब्द ही मरहम।
अच्छी बसंत के पैरों तले पतझड़ का होना जरूरी है।
जो गिरने से डरते हैं, वो कभी उड़ान नहीं भर सकते।
हमेशा याद रखो, आप अपनी मुश्किलों से कई गुना बड़े हो।

तिमाही बैठक का आयोजन पावर प्वाइंट के माध्यम से पेपरलेस किया जाता है।

कहानी
परिचय

सच्चाई हो या किसी ने बनाई हो,
माँ ने कही हो या नानी ने सुनाई हो,
अच्छी लगती है, वो कल्पना अनजानी
बार-बार रात को बचपन भरा दिल कहता है,
माँ कह एक कहानी ....

मानव जीवन में कहानी उसके जीवन के साथ-साथ चलती है। सुख-दुःख, राजा-रानी, परियां, जादू-टोना, भूत-प्रेत, राक्षस-चुड़ैल, उलझनें-तनाव, रहस्य, हास्य-सब जगह कहानी घर बसा लेती है। कहानी की इस विशाल परम्परा में हमारे निगम के कर्मचारियों ने भी कुछ कहानियाँ रची हैं। आइए देखें इनकी बनावट और बुनावट को.....

संशय और अहंकार

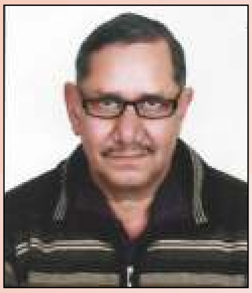

वेद प्रकाश शर्मा
अधीक्षक

एक बार की बात है भगवान बुद्ध धर्म का प्रचार करते हुए काशी की ओर जा रहे थे। रास्ते में जो भी उनके सत्संग के लिए आता, उसे वह बुराइयाँ त्याग कर अच्छा बनने का उपदेश देते। उसी दौरान उन्हें उपक नाम का एक गृहत्यागी मिला। वह गृहस्थ को सांसारिक प्रपंच मानता था और किसी मार्गदर्शक की खोज में था। भगवान बुद्ध के तेजस्वी और निश्छल मुख को देखते ही वह मंत्रमुग्ध होकर खड़ा हो गया। उसे लगा कि पहली बार किसी का चेहरा देख कर उसे अनूठी शांति मिली है। उसने अत्यंत विनम्रता से पूछा, ''मुझे आभास हो रहा है कि आपने पूर्णता को प्राप्त कर लिया है।''

बुद्ध ने कहा, **''हाँ, यह सच है, मैंने निर्वाणिक अवस्था प्राप्त कर ली है।''**

उपक यह सुन कर और प्रभावित हुआ। उसने पूछा, **''आपका मार्गदर्शक गुरू कौन है?''**

बुद्ध ने कहा, **''मैंने किसी को गुरू नहीं बनाया, मुक्ति का सही मार्ग मैंने स्वयं खोजा है।''**

''क्या आपने बिना गुरू के तृष्णा का क्षय कर लिया है?''

बुद्ध ने कहा, **''हाँ, मैं तमाम प्रकार के पापों के कारणों से पूरी तरह मुक्त होकर सम्यक बुद्ध हो गया हूँ।''**

उपक को लगा कि बुद्ध अहंकारवश ऐसा दावा कर रहे हैं। कुछ ही दिनों में उसका मन भटकने लगा। एक शिकारी की युवा पुत्री पर मुग्ध होकर उसने विवाह कर लिया। फिर लगने लगा कि अपने माता–पिता और परिवार का त्याग कर उनसे एक प्रकार का विश्वासघात किया है। वह फिर बुद्ध के पास पहुँचा। संशय ने पूर्ण विश्वास व श्रद्धा का स्थान ले लिया था। वह बुद्ध की सेवा–सत्संग करके स्वयं भी मुक्ति पथ का पथिक बन गया। उक्त कथा का आशय यह है कि संशय और अहंकार मनुष्य के दो प्रमुख शत्रु हैं जो भविष्य में मनुष्य के अपमान और पतन का कारण बनते हैं।

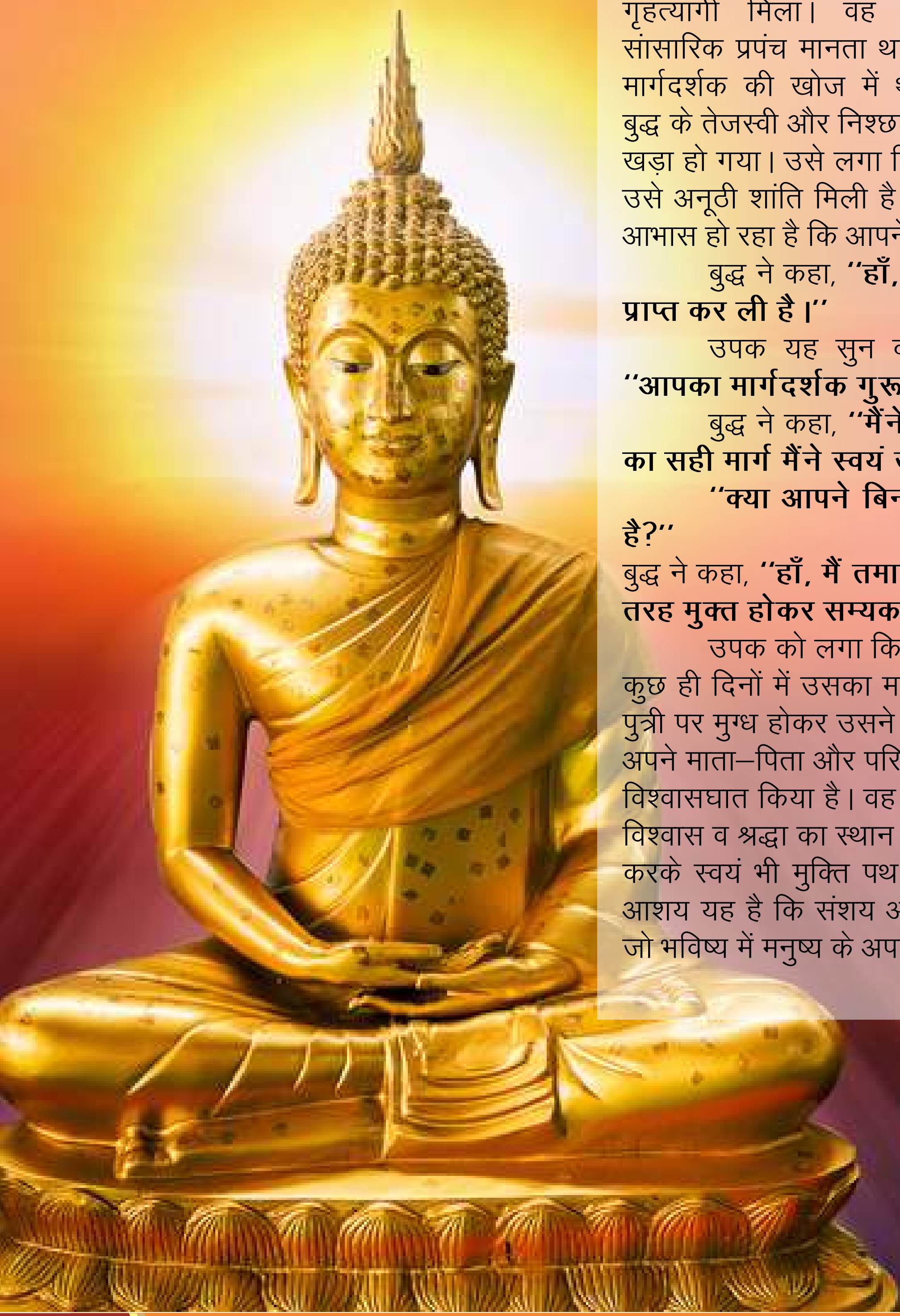

नियमानुसार वर्ष में चार हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना अपेक्षित है।

अधिक लालच का फल

महेन्द्र धनिया
अधीक्षक

एक समय सागर के मध्य में द्वीप पर एक टूटी–फूटी झोंपड़ी थी जिसमें एक मछुआरा अपनी पत्नी के साथ रहता था। वह नित्य जाल लेकर सागर तट पर जाता और मछलियाँ पकड़कर लाता। वह जो भी मछलियाँ पकड़ता, सिर्फ निर्वाह के लिए ही होती थी।

एक दिन उसने जाल डाला और जब उसे खींचा तो उसे उसमें फँसा हुआ कुछ भारी–सा महसूस हुआ। जाल को बाहर निकालने पर उसने देखा कि उसमें सिर्फ एक छोटी–सी सुनहरे रंग की मछली थी। लेकिन वह कोई साधारण मछली नहीं थी।

वह मनुष्य की आवाज में बोली, ''हे मानव! मुझे मत पकड़ो। मुझे नीले सागर की गहराइयों में ही रहने दो। मैं तुम्हारा उपकार कभी नहीं भूलूंगी। तुम्हारी यदि कोई इच्छा हो तो बताओ, मैं उसे पूरा करूंगी।''

मछुआरे ने कहा, ''मुझे तुमसे कुछ नहीं चाहिए। जाओ, निर्भय होकर नीले सागर में ही विचरण करो।'' यह कहकर उसने मछली को वापस सागर के जल में छोड़ दिया।

जब वह घर लौटा तो उसकी पत्नी ने पूछा, ''आज कितनी मछलियाँ पकड़ी?''

''कुछ नहीं। आज तो सिर्फ एक छोटी–सी सुनहरी मछली जाल में फँसी थी जिसे मैंने वापस सागर में छोड़ दिया। वह मनुष्य की आवाज में बोल रही थी– मुझे छोड़ दो, बदले में कोई इच्छा हो तो उसे पूरा करूंगी। मैंने उससे कुछ नहीं मांगा और उसे स्वतंत्र छोड़ दिया।'' मछुआरे ने कहा।

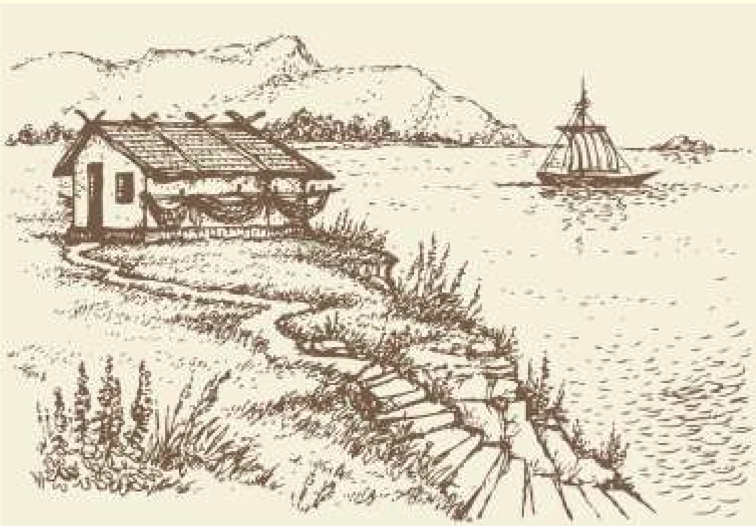

यह सुनकर उसकी पत्नी क्रोधित होकर बोली, ''अरे मूर्ख! भाग्य खुलने का अच्छा अवसर आया था और तुमने उसे व्यर्थ ही जाने दिया। मछली से अपनी झोंपड़ी की जगह नया घर मांगो।''

मछुआरा पत्नी के क्रोध से डरकर फिर से समुद्र किनारे पहुँचा और मछली को अपनी मांग बताई।

मछली बोली, ''जाओ! दुःखी मत हो, जैसी तुम्हारी पत्नी की इच्छा है, वैसा ही होगा।''

मछुआरा घर पहुँचा तो उसने देखा कि इस बार उसके पुराने घर के स्थान पर एक तीन मंजिला भव्य मकान था। उसने अपनी पत्नी से कहा, ''कैसी हो मेरी सुंदर पत्नी?''

पत्नी यह सुनकर गुस्से से आग–बबूला होकर चीख पड़ी, ''अरे बेशर्म! मेरे जैसी सुंदर स्त्री को अपनी पत्नी कहने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? नौकरों! इधर आओ, इस व्यक्ति को पकड़कर चालीस चाबुक लगाओ।''

कुछ समय बाद मछुआरे की पत्नी ने उसे पुनः बुलाया और कहा, ''सुनो! जाकर सुनहरी मछली से कहो कि मैं पूरे सागर की मालकिन बनना चाहती हूँ जिससे उसमें रहने वाली सभी मछलियाँ मेरा आदेश मानेंगी।''

वह पुनः तट पर गया और सुनहरी मछली को पत्नी की इच्छा बताई। यह सुनकर सुनहरी मछली कुछ न बोली। वह पीछे मुड़ी और सागर में जाकर विलुप्त हो गई। मछुआरा वापस अपनी पत्नी के पास आया। उसने देखा कि महल के स्थान पर अब पहले की तरह एक टूटी–फूटी झोंपड़ी है। नौकर–चाकर और सैनिक व बाग–बगीचे सभी गायब हो गए हैं। झोंपड़ी के अंदर उसकी पत्नी फटे–पुराने कपड़ों में दुःखी होकर बैठी थी। उसे अपने किए पर काफी पछतावा हो रहा था।

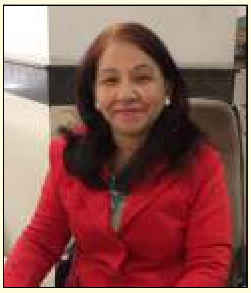

सुनीता रानी
सहायक

ईश्वर जो भी करता है अच्छा ही करता है

एक बच्चा अगर आग से तपते कोयले को उठाने की मांग करे तो माँ उसे नहीं उठाने देती क्योंकि वह जानती है कि अगर वह कोयले को हाथ लगाएगा तो उसके हाथ जल जाएंगे। इसी तरह ईश्वर के सामने हम सभी बच्चे एक समान हैं, हमें नहीं पता कि हमारे लिए क्या अच्छा है।

एक सिक्ख की गुरू ग्रंथ साहिब में बहुत आस्था थी। हर समय वह गुरूद्वारे में जाकर सेवा किया करता तथा वाहेगुरू का नाम जपता। किसी तरह का कोई लालच नहीं। अगर सेवा के बदले कोई उनको पैसे देता तो वो भी गुरूद्वारे में चढ़ा देता तथा यही सोचता कि जब मुझे जरूरत पड़ेगी वाहेगुरू दे देंगे। उसकी बेटी की शादी का समय आया, बारात आई, लड़के वालों ने कुछ पैसों की मांग की। उस भक्त को अपने गुरू पर पूरा विश्वास था कि वाहेगुरू कैसे भी पैसों का इंतजाम कर देंगे, परन्तु पैसों का इंतजाम नहीं हो पाया और बारात वापस लौट गई ।

अब वह बहुत दुःखी होकर गुरूद्वारे गया और गुरूग्रंथ साहिब के पास बैठकर उलाहने देने लगा कि सारी जिन्दगी मैंने निःस्वार्थ भाव से सेवा की, परन्तु आपने मेरे साथ क्या किया। मेरी बेटी की बारात वापस लौट गई। अभी वह गुरूद्वारे में ही था कि उसका पुराना मित्र, जिसको इस स्थिति का पता चला, दौड़ा आया और उसको पैसे देकर कहने लगा कि जाओ लड़के वालों से बात करके बेटी का ब्याह करो।

जब वह लड़के वालों के पास पहुँचा तो पता चला कि सुबह उस लड़के की छत से गिरकर मौत हो गई है जिसके साथ उसकी बेटी का ब्याह होना था। उस भक्त को सारी बात समझ में आ गई और वह वापस गुरूद्वारे में आ गया और अपनी गलती पर बहुत शर्मिंदा होकर रोने लगा। कहने लगा–वाहेगुरू को सब पता था कि अगर बेटी की शादी हो जाती तो आज वह विधवा होती। वाहेगुरू ने तो इसको बचा लिया। हम लोग थोड़ा दुःख आने पर ईश्वर को ताने देने लग जाते हैं, परन्तु वह जो करता है, अच्छा ही करता है।

ईश्वर हमारे साथ कभी कुछ गलत नहीं कर सकता। वो हम सभी को समान रूप से प्यार करता है। दुःख–सुख हमारे अपने कर्मों का फल होते हैं। अगर हम ईश्वर के साथ जुड़े होते हैं तो हमें दुख सहने की शक्ति मिल जाती है।

14 सितम्बर भारत का वो गौरवशाली दिन, जब हमने हिंदी को आधिकारिक रूप से राजभाषा के रूप में चुनते हुए एक अहम् निर्णय लिया था जो देश की एकता, अखांडता व विकास के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। उसी गौरवशाली दिन की स्मृति में हिन्दी दिवस के राजभाषा उत्सव को मनाने के कुछ चित्र–जहाँ हिन्दी है, गर्व है, उत्सव है और फिर से राजभाषा हिन्दी ही है...

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चंडीगढ़ के **सदस्य कार्यालयों के हिन्दी अनुवादकों** के लिए दिनांक 15.11.2018 को **विशेष हिन्दी कार्यशाला** का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न सदस्य कार्यालयों के **41 कार्मिकों** ने भाग लिया।

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चण्डीगढ़ में राजभाषा पखवाड़ा तथा हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन

मुख्यालय के निदेशानुसार राजभाषा के प्रचार व प्रसार के उद्देश्य को ध्यान में रखकर क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चंडीगढ़ में दिनांक 01.09.2018 से 15.09.2018 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़े के आरंभ होने से पहले ही परिपत्र जारी कर राजभाषा पखवाड़े का महत्व बताते हुए सभी अधिकारियों व कर्मचारियों से हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने व पखवाड़े के दौरान आयोजित की जाने वाली विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने के लिए अनुरोध किया गया था। 01 सितम्बर को ही क्षेत्रीय कार्यालय परिसर में प्रमुख स्थानों पर राजभाषा पखवाड़े के संबंध में आकर्षक बैनर लगा दिए गए थे। राजभाषा कार्मिकों ने विभिन्न शाखाओं में संपर्क कर हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग के संबंध में कार्मिकों को सहयोग दिया। राजभाषा पखवाड़े के दौरान निम्नानुसार हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया :–

1.	दिनांक 04.09.2018	...	हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता
	विषय		**निगम की सेवाओं को बेहतर बनाने के उपाय**
2.	दिनांक 06.09.2018	...	हिन्दी टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता
3.	दिनांक 10.09.2018	...	राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता
4.	दिनांक 12.09.2018	...	हिन्दी वाक् प्रतियोगिता

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ के अधिकारियों व कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

हिन्दी दिवस समारोह :–

क्षेत्रीय निदेशक श्री सुनील तनेजा की अध्यक्षता में दिनांक 14.09.2018 को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय कार्यालय, चण्डीगढ़ के मनोरंजन क्लब में समारोह का आयोजन किया गया। डॉ0 श्रीमती योजना रावत, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, ओपन लर्निंग यूनीवर्सिटी स्कूल, पंजाब विश्वविद्यालय समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सादर आमंत्रित की गई थी। समारोह का शुभारंभ पंचदीप प्रज्जवलन से हुआ। मुख्य अतिथि डॉ0 श्रीमती योजना रावत, श्री सुनील तनेजा, क्षेत्रीय निदेशक तथा गणमान्य अधिकारियों द्वारा पंचदीप प्रज्जवलित किया गया। तत्पश्चात् श्री संजय दास, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी की सुपुत्री सुश्री तोशानी ने गणपति वंदना कत्थक नाट्य शैली में प्रस्तुत की। इसके उपरांत श्रीमती सुमन शर्मा के नेतृत्व में महिला कर्मियों द्वारा प्रार्थना गान प्रस्तुत किया गया। प्रार्थना गान के पश्चात् क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने पुष्प गुच्छ भेंट कर मुख्य अतिथि का स्वागत किया।

श्री राजेश शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने मुख्य अतिथि डॉ0 श्रीमती योजना रावत का समारोह में परिचय देते हुए उनकी गरिमामयी उपस्थिति के लिए आभार व्यक्त किया तथा उनकी विशिष्ट उपलब्धियों से उपस्थित कार्मिकों को अवगत करवाया। तत्पश्चात् श्री श्याम कुमार, उप निदेशक (राजभाषा), उत्तरी अंचल ने समारोह परिचय प्रस्तुत करते हुए राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा को पावर प्वाइंट प्रस्तुति के माध्यम से दृष्टांतों सहित मनोहारी एवं सजीव ढंग से प्रस्तुत किया। श्री राजेश शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने राजभाषा शाखा द्वारा वर्ष के दौरान संचालित विभिन्न क्रियाकलापों तथा क्षेत्रीय कार्यालय, चण्डीगढ़ में वर्ष 2017–18 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति व उपलब्धियों पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति दी। उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय कार्यालय में प्रत्येक तिमाही में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया जाता है जिसमें राजभाषा नियमों के अनुपालन तथा लक्ष्यों की प्राप्ति की समीक्षा की जाती है। क्षेत्र में हिन्दी संबंधी कार्यों की सराहना करते हुए उन्होंने बताया कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वाराणसी में दिनांक 09/02/2018

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छः माही बैठक में कार्यालय अध्यक्ष का भाग लेना अनिवार्य है।

को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में 'ख' क्षेत्र में श्रेष्ठतम कार्यान्वयन के लिए क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब को शील्ड प्रदान की गई। मुख्यालय द्वारा भी क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब को वर्ष 2017–18 के लिए 'ख' क्षेत्र में श्रेष्ठतम कार्यान्वयन के लिए शील्ड प्रदान की गई है। उन्होंने श्री श्याम कुमार, उप निदेशक (राजभाषा), उत्तरी अंचल के साथ मुख्यालय द्वारा राजभाषा सम्मेलन में प्रदान की गई शील्ड व प्रमाण–पत्र को विधिवत् रूप से क्षेत्रीय निदेशक महोदय को सौंपा। इस पर सभाकक्ष में उपस्थित जनसमूह ने ज़ोरदार करतल ध्वनि से हर्ष व्यक्त किया। क्षेत्रीय निदेशक श्री सुनील तनेजा ने महानिदेशक महोदय द्वारा इस अवसर पर जारी संदेश को पढ़कर सुनाया। सभी ने इसे ध्यानपूर्वक संज्ञान में लिया।

क्षेत्रीय कार्यालय, पंजाब के कर्मचारियों द्वारा इस अवसर पर एक आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारंभ श्री दमनप्रीत सिंह सुपुत्र श्री हरविन्द्र सिंह, सहायक द्वारा प्रस्तुत गीत से किया गया। तत्पश्चात् श्रीमती सुमन शर्मा, सहायक, श्रीमती पूनम पासी, प्रवर श्रेणी लिपिक, सुश्री श्वेता, बहुकार्य स्टाफ व साक्षी शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक द्वारा मधुर गीत प्रस्तुत किए गए। सांस्कृतिक कार्यक्रम को अल्पविराम देते हुए हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता तथा हिन्दी टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेताओं को मुख्य अतिथि तथा क्षेत्रीय निदेशक महोदय द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने पर अंतर्शाखायी राजभाषा चल शील्ड इस बार सामान्य शाखा को प्रदान की गई जिसे राजेश शर्मा, शाखाधिकारी (सामान्य) तथा शाखा के अन्य कार्मिकों ने ग्रहण किया। मुख्य अतिथि तथा क्षेत्रीय निदेशक महोदय द्वारा सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी गई।

तत्पश्चात् मुख्य अतिथि डॉ0 श्रीमती योजना रावत को मंच पर आमंत्रित किया गया। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि आज पूरे देश में गौरवमयी राजभाषा उत्सव मनाया जा रहा है। आप सभी को हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ। उन्होंने कहा कि पंजाब विश्वविद्यालय में हिंदी की प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत होने के कारण मुझे हिंदी दिवस के अवसर पर विभिन्न केन्द्र सरकार के कार्यालयों द्वारा मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया जाता रहा है। आज मुझे आपके कार्यालय में आने का सुअवसर प्राप्त हुआ। किसी कार्यालय में हिंदी दिवस को इतना हर्षोल्लास के साथ मनाते हुए पहली बार देख रही हूँ। उन्होंने कहा कि मैं आपके कार्यालय की वार्षिक रिपोर्ट ध्यान से सुन रही थी। हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों की लंबी सूची को ध्यान से देख रही थी। कार्यालय को पूरे देश में कार्यान्वयन के क्षेत्र में पुरस्कार मिलना यह सब आप लोगों की हिंदी के प्रति निष्ठा को दर्शाता है और इस निष्ठा को देखकर मैं कह सकती हूं कि हमारे देश में हिंदी को कोई खतरा नहीं हैं। उन्होंने कहा कि हिंदी आज देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी पढ़ी और पढ़ाई जा रही है। विश्व के लगभग 150 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। विश्व के अन्य देशों को भारत के बाजारों में अपने उत्पादों को उतारने के लिए हिंदी का ज्ञान होना अनिवार्य है क्योंकि उपभोक्ताओं को उनकी ही भाषा में आसानी से समझाया जा सकता है। अतः हिंदी

आज वैश्विक परिवेश में वाणिज्य की भाषा के रूप में अपना स्थान बना रही है। उन्होंने कहा कि पश्चिमी देश हमारी भाषा, संस्कृति व रहन–सहन को आदर्श मान रहे हैं जबकि हम पश्चिम की संस्कृति को अपना बनाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने अपनी बात पर बल देते हुए कहा कि निःसंदेह हमारी भाषा और संस्कृति शाश्वत, निर्विकार, सर्वोपरि तथा अनुकरणीय है। अतः अपनी भाषा और संस्कृति का संरक्षण व विकास हमारा नैतिक दायित्व है। साथ ही, कार्यालयीन कामकाज में भी हमें हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए। अपनी भाषा में ही हम जन–जन तक सरकार की नीतियों का प्रसार आसानी से कर सकते हैं तथा एक साधारण व्यक्ति भी अपनी भाषा में इसे समझकर इसका लाभ उठा सकता है। मुख्य अतिथि ने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी और आशा व्यक्त की कि भविष्य में अधिकाधिक कर्मचारी व अधिकारी इन प्रतियोगिताओं में भाग लेंगे। क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न भेंट किया तथा कार्यालय में मुख्य अतिथि के रूप में उनका निमंत्रण स्वीकार करने के लिए आभार व्यक्त किया।

तत्पश्चात् श्री श्याम कुमार, उप निदेशक (राजभाषा), उत्तरी अंचल ने सांस्कृतिक कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए श्रीमती तृप्ति दीक्षित, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक को काव्य पाठ के लिए आमंत्रित किया। इसके बाद श्री दमनप्रीत सिंह सुपुत्र श्री हरविन्द्र सिंह, सहायक द्वारा सुमधुर गीत प्रस्तुत किया गया। श्री राजेश शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा प्रस्तुत कविता पाठ भी कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रहा। तत्पश्चात् श्रीमती सुमन शर्मा, सहायक तथा श्रीमती पूनम पासी, प्रवर श्रेणी लिपिक द्वारा एक युगल गीत प्रस्तुत किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का समापन श्रीमती सुमन शर्मा, सहायक, श्रीमती पूनम पासी, प्रवर श्रेणी लिपिक, साक्षी शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक तथा श्रीमती हरप्रीत कौर, सहायक द्वारा प्रस्तुत समूह गान के साथ किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान श्री श्याम कुमार, उप निदेशक (राजभाषा), उत्तरी अंचल ने मंच का संचालन किया जो अपने आप में ही एक आकर्षण था।

तत्पश्चात् राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता तथा हिन्दी वाक् प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को क्षेत्रीय निदेशक महोदय द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम के प्रतिभागियों को भी क्षेत्रीय निदेशक द्वारा स्मृति चिह्न प्रदान किए गए।

इसके बाद श्री एल. एन. मीणा, संयुक्त सचिव, अधिकारी संघ तथा श्री वजीर सिंह, सचिव, एसिक संघ पंजाब ने भी इस अवसर पर अपने विचार रखे। क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने इस अवसर पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि पंजाब क्षेत्र को श्रेष्ठतम कार्यान्वयन के लिए शील्ड मिलना गौरव की बात है। उन्होंने कहा कि श्री श्याम कुमार, उप निदेशक (रा.भा.) तथा श्री राजेश शर्मा, सहायक निदेशक (रा.भा.) के कुशल मार्गदर्शन में कर्मचारियों व अधिकारियों को हिन्दी का प्रयोग करने में हर प्रकार से प्रोत्साहित किया जा रहा है। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में राजभाषा शाखा के कार्मिकों का समर्पण एवं प्रयास अत्यंत सराहनीय है। उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन में, विशेषकर गृह पत्रिका 'सतलुज धारा' के प्रकाशन में, विशेष सहयोग देने के लिए श्री अश्वनी कुमार, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक को प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया। उन्होंने सभी कर्मचारियों व अधिकारियों से आग्रह किया कि वे अपना सम्पूर्ण कार्य हिन्दी में ही करें।

धन्यवाद ज्ञापित करते हुए श्री शिव गुप्ता, उप निदेशक ने समारोह के सफलतापूर्वक आयोजन के लिए सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के सहयोग की सराहना की ।

समारोह के अंत में सभी को अल्पाहार वितरित किया गया तथा राष्ट्रगान के साथ समारोह का समापन किया गया।

हिंदी दिवस समारोह 2018 की झलकियाँ

हिंदी दिवस समारोह 2018 की झलकियाँ

"सतलुज धारा" के गत दो अंकों को पढ़ने व डाउनलोड करने के लिए वेबलिंक व क्यू.आर. कोड की सुविधा भी दी गई।

विभिन्न वार्षिक प्रोत्साहन योजनाओं/प्रतियोगिताओं का परिणाम

हिंदी श्रुतलेखन प्रोत्साहन योजना 2017-18

क्र.सं.	अधिकारी का नाम व पदनाम	पुरस्कार राशि
1.	श्री एल.एन. मीणा, सहायक निदेशक	रु 5000/-

मूल हिंदी टिप्पण-आलेखन प्रोत्साहन योजना 2017-18

क्र.सं.	कर्मचारी का नाम व पदनाम	वर्तमान तैनाती का स्थान	पुरस्कार	पुरस्कार राशि
1.	श्रीमती मंगला देवी, सहायक	प्रशासन शाखा,	प्रथम	रु 5000/-
2.	श्री रामयश, सहायक	राजस्व शाखा	प्रथम	रु 5000/-
3.	श्री सुरिन्द्र सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक	वसूली शाखा	द्विवितीय	रु 3000/-

अंतर्शाखायी चल शील्ड प्रतियोगिता 2017-2018

सामान्य शाखा

राजभाषा पखवाड़ा 2018 के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं का परिणाम

हिंदी निबन्ध प्रतियोगिता दिनांक : 04.09.2018

1.	श्री अमित बहादुर, सहायक	प्रथम पुरस्कार
2.	सुश्री कृतिका शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय पुरस्कार
3.	सुश्री मनीषा, प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय पुरस्कार
4.	श्री पुनीत अरोड़ा, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन पुरस्कार-1
5.	श्रीमती सुमन लता, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन पुरस्कार-2

हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता दिनांक : 06.09.2018

1.	सुश्री मनीषा, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रथम पुरस्कार
2.	श्री अमित बहादुर, सहायक	द्वितीय पुरस्कार
3.	श्रीमती सुमन लता, प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय पुरस्कार
4.	श्री चन्द्र भूषण, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी	प्रोत्साहन पुरस्कार-1
5.	सुश्री कृतिका शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन पुरस्कार-2

राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता दिनांक : 10.09.2018

1.	श्री प्रेम वल्लभ, अवर श्रेणी लिपिक	प्रथम पुरस्कार
2.	सुश्री मनीषा, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय पुरस्कार
3.	सुश्री कृतिका शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय पुरस्कार
4.	श्री अजय शर्मा, सहायक	प्रोत्साहन पुरस्कार-1
5.	श्री पप्पू कुमार सिन्हा, अवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन पुरस्कार-2

हिंदी वाक् प्रतियोगिता दिनांक :12.09.2018

1.	श्री संजय कुमार दास, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी	प्रथम पुरस्कार
2.	श्री एल.एन.मीणा, सहायक निदेशक	द्वितीय पुरस्कार
3.	श्री वजीर सिंह, सहायक	तृतीय पुरस्कार
4.	श्री भारत भूषण वालिया, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन पुरस्कार-1
5.	श्री रोहित कुमार, सहायक	प्रोत्साहन पुरस्कार-2

यात्रा वृत्तान्त

अरुण यह मधुमय देश हमारा
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को
मिला एक सहारा.....

धरती गोल है। हिमालय की ऊँची हिमाच्छादित चोटियों से लेकर सागर की अथाह गहराइयों तक विश्व प्रकृति की सुंदरता से भरा पड़ा है।

आज दुनिया वाकई छोटी हो गई है। यातायात के तीव्रतम साधन उपलब्ध हैं। भारतवर्ष दुनिया के आकर्षण का केन्द्र है। यहाँ घूमने के लिए बहुत-बहुत-बहुत कुछ है।

आइए कुछ जानकारी प्राप्त करें......

सभी अधिकारियों व कर्मचारियों की ई–मेल का डेटाबेस बनाया गया है तथा
राजभाषा शाखा का समस्त पत्राचार, "आज का शब्द" आदि ई–मेल पर भेजा जाता है।

रोज गार्डन, चंडीगढ़

चन्द्र भूषण
समाजिक सुरक्षा अधिकारी

रोज गार्डन सन् 1967 में बनाया गया था। चंडीगढ़ के पहले कमिश्नर डॉ. एम.एस. रंधावा की ओर से इसका नामकरण किया गया था। माना जाता है कि लगभग 42.25 एकड़ भूमि में फैला यह रोज गार्डन एशिया के सबसे बड़े रोज गार्डनों में से एक है।

इसकी देखभाल के लिए 50 से अधिक माली रखे गए हैं। रोज गार्डन में गुलाबों की इतनी किस्मों को तैयार करना किसी चुनौती से कम नहीं है। गुलाबों की विभिन्न किस्मों को तैयार करने के लिए देसी खादों और उर्वरकों का इस्तेमाल किया जाता है।

फरवरी माह के अंत में यहाँ पर रोज फेस्टिवल का आयोजन किया जाता है। उस वक्त इन गुलाबों का रुतबा और भी बढ़ जाता है। तीन दिन तक चलने वाले इस रोज फेस्टिवल में देश ही नहीं, विदेशों से भी सैलानी इन गुलाबों को देखने के लिए पहुँचते हैं। रोज फेस्टीवल के समय चंडीगढ़ की शान रोज गार्डन की हवाओं में गुलाबों की खुशबू घुलने लगती है। इस समय रोज गार्डन में विभिन्न रंगों के गुलाब खिल कर अपने चरम यौवन पर होते हैं। इससे यहाँ फिर से पर्यटकों की चहल–पहल शुरू हो जाती है। खिली हुई धूप में पर्यटक यहाँ पर इन फूलों के साथ सेल्फी लेने में जुट जाते हैं।

लगभग 42.25 एकड़ में फैले रोज गार्डन में गुलाबों को देखने के लिए हर साल लाखों की संख्या में देश भर से सैलानी आते हैं।

रोज गार्डन में इनकी देखभाल करने वालों की तीन महीने की मेहनत के बाद यहाँ हर तरफ विभिन्न रंगों के गुलाब खिल जाते हैं। इस बार यहाँ पर 830 विभिन्न किस्मों के गुलाबों को लगाया गया है। रोज गार्डन में इस बार गुलाबों में कई प्रकार के गुलाब शामिल हैं। इनमें लाल रंग की कई वैराइटी हैं।

इसके साथ ही गुलाबी, येलो, मिल्की, ऑफ व्हाइट, स्काई ब्लू, ग्रीन और क्रीम किस्मों के गुलाब हैं। वहीं क्वीन एलिजाबेथ गुलाबी रंग का गुलाब और ब्लैक रूबी काले रंग का गुलाब सबके आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं। 5–8 इंच के ब्लैक रूबी और क्वीन एलिजाबेथ के ये फूल सबसे बड़े आकार के फूल हैं। गुलाबों की सुंदरता को शब्दों में वर्णित करना संभव नहीं है। अगर आप वास्तव में विभिन्न प्रकार के गुलाबों की महक और उनकी मनोहारी सुंदरता का आनंद लेना चाहते हैं तो आपको रोज गार्डन आना ही होगा।

ओडिशा–सूर्य, समुद्र और संस्कृति का समागम

श्याम कुमार
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)

पहली बार ओडिशा जाना हुआ। बहुत सुना था ओडिशा के बारे में और जब नीलांचल एक्सप्रेस से उतरे तो कुछ विशेष नहीं लगा परन्तु जब टैक्सी से होटल की ओर जा रहे थे तब पहली बार गहरा नीला समुद्र देखने को मिला और लगा कि नीलांचल नाम वास्तव में ही सार्थक है।

गहरा नीला समुद्र, चांदी सी चमकती रेत, दूर समुद्र में मछुआरों की नावें, नारियल के झूमते पेड़ और सरसराती हवा समूचे वातावरण को इतना मंत्रमुग्ध कर देती है कि बरबस ही मन आकर्षित हो उठता है। ओडिशा अपनी प्रकृति और सौन्दर्य के लिए ही प्रसिद्ध नहीं है, बल्कि अपनी संस्कृति और अपनी कला के लिए भी प्रसिद्ध है।

पूरब से सूर्य उदय होता है और पुरी में समुद्र के बीच से उठता हुआ समुद्र पूरे समुद्री जल को नीलांचल से पीताम्बर का रूप दे देता है और उस समय सम्पूर्ण जल स्वर्णिम हो जाता है और उनके बीच थिरकती स्वर्णिम लहरें और छोटी नौकाएँ एक ऐसा दृश्य उत्पन्न करती हैं मानो किसी चित्र के बीच बैठे हैं।

ओडिशा की भाषा, वहाँ के लोग, रहन–सहन, खान–पान, कुछ अलग होते हुए भी विशुद्ध भारत ही है। यहाँ की शिल्प कला, ऐतिहासिक धरोहरें, धार्मिक स्थल, संभलपुरी वस्त्र – एक अद्भुत सांस्कृतिक उन्नयन का परिचय देते हैं।

कैसे जाएँ– ओडिशा सड़क, रेल और वायु मार्ग से जुड़ा हुआ है। किसी भी माध्यम से भुवनेश्वर पहुँचा जा सकता है जबकि पुरी रेल और सड़क मार्ग से जुड़ा है।

क्या देखें – पूरा ओडिशा ही घूमने लायक है। पुरी में जगन्नाथ मन्दिर एक प्रमुख तीर्थ स्थान है। कोणार्क का सूर्य मन्दिर हमारे प्राचीन विज्ञान और शिल्पकला का उत्कृष्ट उदाहरण है जहाँ कहते हैं कि सूर्य की प्रथम किरण मन्दिर में ही पड़ती थी। आक्रमणकारियों ने मन्दिर को ध्वस्त कर दिया था जिसका बाद में जीर्णोद्धार करवाया गया। रथमन्दिर के बने 12 पहिए 12 राशियों का प्रतीक हैं और उन्हीं के बीच बनी रेखाएं धूप के अनुसार समय बताती

वर्ष 2017–18 में विज्ञापनों पर व्यय की गई राशि का 50.07 प्रतिशत व्यय नियमानुसार हिन्दी विज्ञापनों पर किया गया।

हैं। आज भी इसके अनुसार समय देख कर घड़ी मिलाई जा सकती है। संभलपुर में बना हीराकुंड डैम भारत का बहुत लम्बा बांध है जो महानदी पर बना है और इससे बिजली भी बनाई जाती है– देखने लायक है। भुवनेश्वर में लिंगराज मन्दिर ऐतिहासिक और धार्मिक धरोहर के रूप में आज भी सिर उठाए खड़ा है। उदयगिरि और खण्डगिरि की गुफाएं शिल्पकला और जैनधर्म के उस समय के विकास को साक्षात् दिखाती हैं। नन्दनकानन वन एक अच्छी सफारी है जहाँ पर वन्य पशुओं को उन्मुक्त विचरते देखा जा सकता है।

क्या खरीदें– ओडिशा की कला बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ पर लकड़ी के खिलौने, संभलपुरी सूती और सिल्क साड़ियाँ, सूट व संभलपुरी रुमाल अवश्य खरीदे जाने चाहिएँ। संभलपुरी डिजाइन और कला एक विशिष्ट कला है। पुरी में समुद्र के किनारे लगे बाजार से शंख, सीपियाँ, मोती व उनसे बने सामान खरीदे जा सकते हैं।

क्या खाएँ– ओडिशा में उत्तर भारतीय भोजन दाल, रोटी, चावल, सब्जी आसानी से उपलब्ध है। मांसाहार के शौकीन लोगों के लिए समुद्र होने के कारण सी–फूड आसानी से उपलब्ध है।

कहाँ ठहरें– ओडिशा में धर्मशालाओं से लेकर पांचतारा होटल तक उपलब्ध हैं। अनेक लॉज भी हैं। पुरी और भुवनेश्वर में निगम के कर्मचारियों के ठहरने के लिए अपनी व्यवस्थाएँ भी हैं।

पुरी में समुद्री स्नान करते समय घुटनों भर पानी में खड़े हो जाएँ और आती–जाती लहरें पूरा स्नान करा देती हैं। सूर्य की भूमि, संस्कृति की भूमि, धर्म की नगरी ओडिशा अपनी सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर के साथ भारत के पूर्वी भाग में शान से सिर उठाए खड़ा है और आपके स्वागत के लिए तत्पर है। एक बार यहाँ अवश्य आना चाहिए और यह एक साथ ही धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और मनोरंजन की खोज को सफलतापूर्वक पूरा कर सकता है।

पहाड़ चढ़ने का एक उसूल है कि झुक कर चलो, दौड़ो मत......।

साक्षी शर्मा
प्रवर श्रेणी लिपिक

जिंदगी को भरपूर जीने के लिए सबसे जरूरी है खुशी और मेरी खुशी का असली अहसास यात्रा में है। कहते हैं - जब तक जीना, तब तक सीखना। यानि अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है और यात्रा करने से आप ज्यादा सीखते हैं। बस, यात्रा करो और दुनिया की सारी सुंदरता देखो।

हजारों मील की यात्रा एक कदम से शुरू होती है और मैं ऐसी ही एक यात्रा का अनुभव आपके साथ बांटना चाहूँगी । जीवन के अलग अनुभव के लिए इस बार मैंने ट्रैकिंग का अनुभव लेना चाहा जिसके संदर्भ में मैंने यूथ हॉस्टल एसोसिएशन के प्रोग्राम को देखते हुए नेशनल हिमालयन विंटर ट्रेक डलहौजी का अनुभव लेने का निश्चय किया। यह कार्यक्रम पाँच दिन का था। इसकी शुरुआत मैंने चंडीगढ़ से पठानकोट और पठानकोट से डलहौजी तक की यात्रा के साथ की। वहाँ पहुँचने पर हम यूथ हॉस्टल, बेस कैंप, डलहौजी पहुँचे जहाँ हमारे फील्ड डारेक्टर ने हमारा स्वागत किया और हमारा पंजीकरण किया एवं हमें हॉस्टल के कमरे आबंटित किए। शाम का समय था तथा यात्रा लंबी होने के कारण हमने थोड़ा विश्राम किया और उसके बाद हमने वहाँ के खूबसूरत स्थानीय क्षेत्रों का भ्रमण किया। रात को सभी 50 प्रतिभागियों ने एक दूसरे के साथ परिचय किया। परिचय के पश्चात रात्रि भोजन किया एवं पुनः हम सब आपसी परिचर्चा के लिए एकत्र हो गए। अत्यंत कम तापमान में बॉन फायर की गर्मी तथा देश के अलग-अलग भागों से आए प्रतिभागियों का साथ, हमारे लिए यह अलग ही अनुभव था।

अगले दिन प्रारंभ होने वाली यात्रा के लिए अलग-अलग लीडर्स का चयन किया गया। उक्त में से एक ग्रुप लीडर, एक पर्यावरण लीडर तथा एक एंटरटेनमेंट लीडर चुना गया। मुझे एंटरटेनमेंट लीडर का दायित्व सौंपा गया। कार्यक्रम शुरू करने पर आकर्षक पहलू मुझे जो लगा वह यह था कि सब प्रतिभागी भारत के अलग-अलग राज्यों से हिस्सा लेने आए थे जिसमें गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश आदि के लोगों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए गाने गाए एवं अन्य सांस्कृतिक नृत्य प्रस्तुत किए। रात 9:00 बजे हमें सोने के आदेश दिए गए क्योंकि फील्ड डारेक्टर ने सुबह 5:00 बजे योग एवं व्यायाम के लिए तैयार होने को बोला था।

दूसरे दिन हम 4:00 बजे उठे। वहाँ का तापमान 2 डिग्री के लगभग था । हमने फील्ड डारेक्टर का अनुसरण करते हुए बेस कैंप से पंचपुला की आठ किलोमीटर की यात्रा की जिसमें हमें वातावरण के अनुकूल बनाया गया। सुबह का उगता हुआ सूरज आँखों के लिए अविस्मरणीय नजारा था। वापस बेस कैंप आने के बाद रात को कैंपफायर का प्रबंध था और हमारी टीम डीडब्लू-12 ने गरबा भांगड़ा का मजा लिया व सुबह के लिए स्लीपिंग बैग व अन्य सामान अगले दिन की ट्रैकिंग के लिए तैयार कर लिया।

तीसरे दिन ट्रेक की शुरुआत की जिसका विवरण इस प्रकार है-
स्रोत - डलहौजी - गंतव्य - कालाटोप
तय की गई दूरी - 12 कि.मी.
तय की गई ऊँचाई - 6000 फीट से 8000 फीट
तापमान - -3 (माइनस 3 डिग्री)

जैसे ही फील्ड डारेक्टर ने हरी झंडी दी, हमारी टीम डीडब्ल्यू 12 हिप हिप हुर्रे के नारे लगाते हुए निकल गई। हमने बीच में बर्फबारी का मजा लेते हुए, जंगलों का रास्ता पूरा करते हुए लंच किया जो कि हमें सुबह 5:00 बजे ही पैक करके दे दिया गया था। शाम 5:00 बजे तकरीबन कालाटॉप पहुँचे जहाँ चाय और सूप लेकर हम खुश हुए क्योंकि तापमान -3 (माइनस 3 डिग्री) था। रात का काम सबसे मुश्किल था क्योंकि हम सबको वहाँ पर स्लीपिंग बैग में सोना था। आज हमें अपने देश के जवानों की ज़िंदगी का 1% हिस्सा महसूस करने का मौका मिला। टीम का उत्साह देखते हुए हमारी थकावट दूर तो नहीं हुई लेकिन कम जरूर हुई। शाम 6:00 बजे के रात्रि भोजन के बाद रात 7:00 बजे हम सब को सोने के आदेश दे दिए गए।

चौथे दिन ट्रेक की शुरुआत की, जिसका विवरण इस प्रकार है-
स्रोत - कालाटोप - गंतव्य - खज्जियार
तय की गई दूरी - 12 कि.मी.
तय की गई ऊँचाई - 6500 फीट
तापमान - 1 डिग्री

हमने अपनी यात्रा को मिनी स्विट्ज़रलैंड आफ इंडिया की यात्रा का नाम दिया।

हमने पांचवें एवं आखिरी दिन की शुरुआत की जिसका विवरण इस प्रकार है-
स्रोत - खज्जियार- गंतव्य - मंगला (चंबा)
तय की गई दूरी - 11 कि.मी.
तय की गई ऊँचाई - 4000 फीट
तापमान - 7 डिग्री

आखिरी दिन बेस कैंप में वापस आने के बाद हमें फील्ड डारेक्टर ने प्रमाण-पत्र प्रदान किए। इस प्रकार मैंने विभिन्न परिस्थितियों से गुजरते हुए इस यात्रा के माध्यम से एक नया जीवंत अनुभव प्राप्त किया। अंत में मैं यही कहना चाहूंगी कि यात्रा जीवन का विशेष सुखद अनुभव है जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

हमें उड़ना चाहिए, हमें दौड़ना चाहिए, हमें गिरना भी चाहिए, लेकिन बस रुकना नहीं चाहिए।

स्वतंत्रता दिवस 2018 की झलकियाँ

स्वतंत्रता दिवस 2018 के अवसर पर आयोजित रंगोली प्रतियोगिता

नराकास (का.-1), चण्डीगढ़ के तत्वावधान में सदस्य कार्यालयों के राजभाषा कार्मिकों के लिए क्षेत्रीय कार्यालय चण्डीगढ़ द्वारा आयोजित कार्यशाला की झलकियाँ

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ द्वारा संदर्भ पुस्तिका "स्वामी हैंडबुक" की कुल 72 प्रतियाँ खरीदी गई जिनमें से 56 हिन्दी प्रतियों की खरीद की गई।

नराकास (का.-1), चण्डीगढ़ के तत्वावधान में सदस्य कार्यालयों के राजभाषा कार्मिकों के लिए क्षेत्रीय कार्यालय चण्डीगढ़ द्धारा आयोजित कार्यशाला की झलकियाँ

नौनिहालों की नज़र में–गणतंत्र दिवस

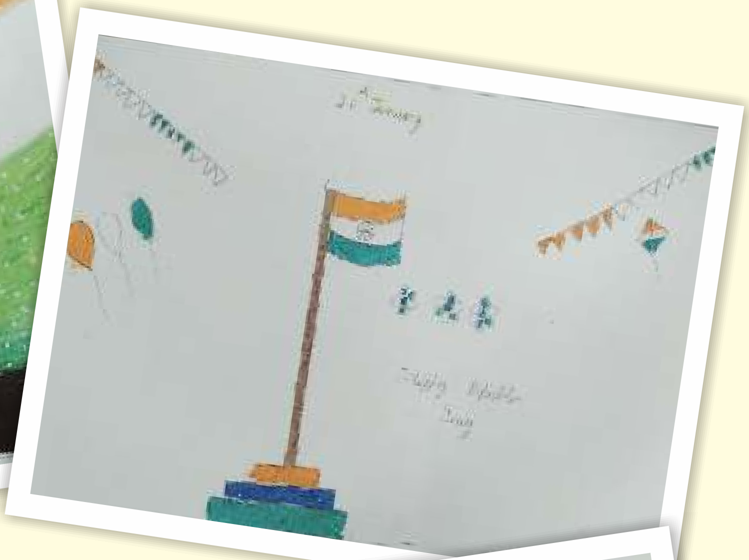

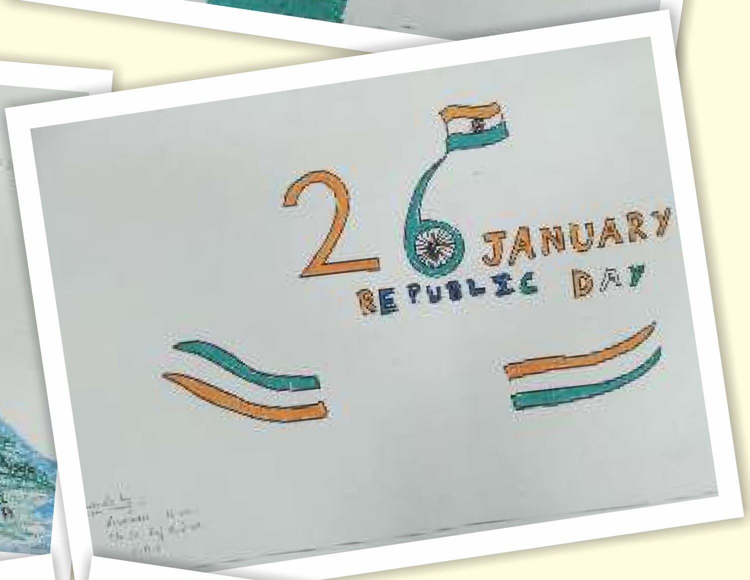

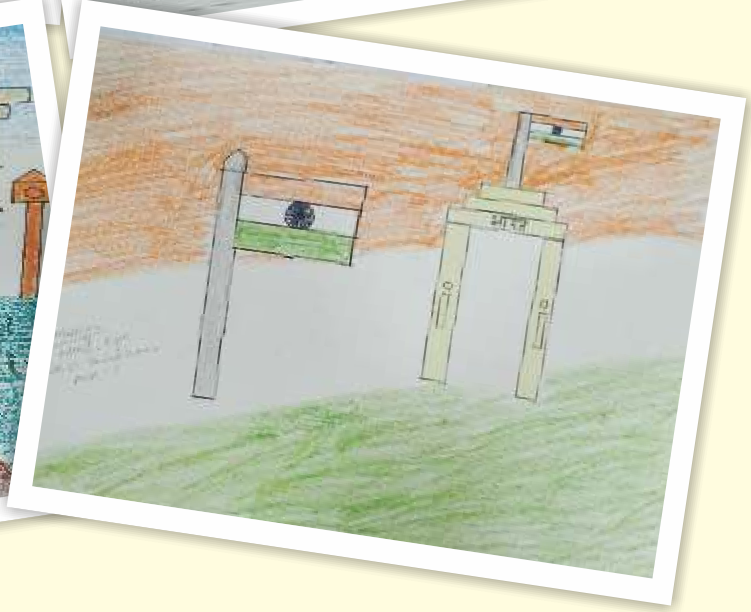

कैमरे की नज़र से–हमारे खिलाड़ी

महोदय,

उपरोक्त विषय पर आपके कार्यालय से प्रकाशित गृह पत्रिका **सतलुज धारा** वर्ष 2017–18 की प्रति प्राप्ति हुई। धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण सुंदर है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, रचनाएँ, कविताएँ रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक है। **मिलावट का कहर**, **चेहरा**, **बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान में जन सहभागिता का महत्व**, **चर्च ही नहीं मंदिर भी है गोवा में** इत्यादि लेख विशेषकर पठनीय हैं। पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र कार्यालय की विविध गतिविधियों पर विस्तृत प्रकाश डालते हैं। पत्रिका के प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को बधाई। आशा है कि भविष्य में भी पत्रिका की यात्रा अनवरत चलती रहेगी।

आगामी अंक के लिए शुभकामनाएं।

पूनम अरोरा
चिकित्सा अधीक्षक
क.रा.बी. निगम आदर्श अस्पताल, नरोड़ा, अहमदाबाद

महोदय/महोदया,

संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका **'सतलुज धारा'** की प्राप्ति हुई। अतः आभार स्वीकार करें।

इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पाठकों के लिए प्रभावशाली, रोचक, ज्ञानवर्धक, उच्च कोटि एवं मन को लुभाने वाली हैं। पत्रिका में प्रकाशित श्री श्याम कुमार जी की कविता **बावरा मन**, **बौराया मौसम**, श्री हर्ष जिंदल उर्फ हातीफ जी की कविता **कमाई**, श्री राजेश शर्मा जी की कविता **हरियाणे का नजारा**, श्री संदीप कुमार सांगवान जी का लेख **बकरा** और श्री अश्विनी कुमार जी का लेख **मिलावट का कहर** पत्रिका में विशेष रूप से सराहनीय है। पत्रिका की सजा–सज्जा भी उत्तम है।

हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका **'सतलुज धारा'** के उज्जवल भविष्य के लिए सुगंधा परिवार की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी अधिकारी
भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), पंजाब

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित गृह पत्रिका **सतलुज धारा** प्राप्त हुई। पत्रिका प्रेषण के लिए हार्दिक धन्यवाद।

विभिन्न विषयों पर रचनाकारों के रोचक एवं ज्ञानवर्धक लेखों और कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों के सुंदर छाया चित्रों से सुसज्जित पत्रिका का यह अंक बहुत ही सजीव एवं पठनीय है। पत्रिका की प्रस्तुति एवं साज–सज्जा आकर्षक एवं मनोहारी है। पत्रिका का मुद्रण एवं पृष्ठ संयोजन उच्च कोटि का है। पत्रिका में सम्मिलित सभी लेख रुचिकर, ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी हैं। रचनाकारों में **बावरा मन**, **बौराया मौसम**, **तुम**, **मां के लिए प्यार**, **मैं औरत हूँ**, **एक सैनिक का जज्बा**, **हरियाणे का नजारा**, **प्रेम का मान**, **मिलावट का कहर**, **मानव प्रकृति**, **बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ**, **दम घोटती दिल्ली**, **चर्च ही नहीं मंदिर भी हैं गोवा में** पत्रिका को जीवंत एवं रोचक बनाते हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए आपको तथा पत्रिका प्रकाशन समिति एवं सभी सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

हरशरण मीणा
उप निदेशक (राजभाषा प्रभारी)
क.रा.बी. निगम आदर्श अस्पताल, रामदरबार, चंडीगढ़

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके पत्र संख्या 12/ए/49/12/83/2016–राभा. दिनांक 17 मार्च 2018 के अंतर्गत हिंदी गृह पत्रिका **'सतलुज धारा'** वर्ष 2017–18 की प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। राजभाषा हिंदी में श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार एवं श्रेष्ठ गृह पत्रिका प्रकाशन के लिए प्रथम पुरस्कार हेतु आपको हार्दिक बधाई। विभिन्न क्षेत्रों की गतिविधियों के छायाचित्रों के संकलन से पत्रिका अत्यंत रोचक बन पड़ी है। पत्रिका का मुख्यपृष्ठ बहुत ही आकर्षक है। **बावरा मन**, **बौराया मौसम**, **मां के लिए प्यार भरे चंद शब्द**, **चेहरा**, **खरगोश की चतुराई**, **मिलावट का कहर**, **बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ** रचनाएँ अच्छी एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में संकलित अन्य रचनाएं रोचक हैं। पत्रिका से जुड़े सभी संपादक मंडल को साधुवाद एवं आगामी अंक के लिए शुभकामनाएं।

बलिराज
सहायक निदेशक (राजभाषा)
उप क्षेत्रीय कार्यालय, नोएडा

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका **सतलुज धारा** के 2017–18 अंक की प्राप्ति हुई। इस अंक के लिए आपको हार्दिक धन्यवाद। कृपया प्रतिक्रिया सादर स्वीकार करें।

बधाईः सतलुज धारा के 2017–18 अंक के सफल प्रकाशनार्थ, राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार एवं हिंदी पत्रिका को प्राप्त प्रथम पुरस्कार हेतु।

प्रशंसनीयः पत्रिका में श्री सुशील कुमार जी, श्री रामलाल, श्री सविंदर, श्री श्याम कुमार, श्री केदार सिंह, श्री दलबारा सिंह, श्री हरविंदर सिंह, श्री अमित बहादुर, श्रीमती कृष्णा कुमारी, श्री अश्वनी कुमार, श्री सुरेंद्र सिंह भट्टी, श्री राजेश शर्मा, श्री पप्पू कुमार सिन्हा, श्री मनोज कोटनाला, श्रीमती जसवंत कुमारी एवं श्री लक्ष्मी नारायण मीणा की रचनाएं।

विशेषः पत्रिका के प्रत्येक पृष्ठ के तल में हिंदी के संबंध में दी गई महत्वपूर्ण जानकारी अत्यंत उपयोगी है।

आकर्षक पत्रिका की भीतरी सजावट एवं विभिन्न आयोजनों के चित्र। संपादक मंडल को इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हमारी हार्दिक बधाइयाँ अगले अंक के लिए शुभेच्छाओं सहित।

मनोज कुमार यादव
सहायक निदेशक (प्रभारी राजभाषा)
उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ में रबड़ की **सभी मुहरें द्विभाषी** बनवाई जाती हैं।

आपका खत मिला

महोदय,

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका **सतलुज धारा** के नवीन अंक की प्राप्ति हुई। आप को सहृदय धन्यवाद। सर्वप्रथम वर्ष 2016–17 में उत्तर क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार तथा गृह पत्रिका **सतलुज धारा** के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने के लिए हार्दिक बधाइयाँ। पत्रिका का यह अंक भी बेहद रोचक एवं पठनीय लेखों, कविताओं से भरपूर है। पत्रिका का मुखपृष्ठ अपने नाम के अनुरूप है तथा मुद्रण कार्य उच्च कोटि का है। पत्रिका में छपे सभी लेख एवं कविताएं विविध मुखी एवं प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए समस्त रचनाकारों एवं संपादक मंडल को बधाई एवं आगामी अंक के लिए शुभकामनाएँ

बृजेश
उप निदेशक (प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय, अंबाला

महोदय,

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका **सतलुज धारा** के 2017–18 के अंक की प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम वर्ष 2016–17 में श्रेष्ठ कार्यान्वयन तथा श्रेष्ठ गृह पत्रिका के लिए पुरस्कारों की प्राप्ति पर बहुत–बहुत बधाई। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ इसकी साज–सज्जा तथा पृष्ठ संयोजन उच्च कोटि का है। जहां एक और उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक रचनाओं का संकलन है वहीं दूसरी ओर विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्र भी हैं जो पत्रिका की साज–सज्जा को एक नया रूप प्रदान कर रहे हैं। कुल मिलाकर यह अंक संग्रहणीय है।

आशा है कि आगे भी यह पत्रिका इसी तरह राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में योगदान देती रहेगी। पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन हेतु संपादक मंडल को बहुत साधुवाद। हमें इसके अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

प्रमोद कुमार निराला
सहायक निदेशक
क्षेत्रीय कार्यालय, बिहार

महोदय,

संदर्भः आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित पत्र संख्या 12.ए.49/12/83/2016/रा.भा./204, दिनांक 17 मई 2018।

उपरोक्त पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा भेजी गई गृह पत्रिका **सतलुज धारा** वर्ष 2017–18 की एक प्रति हमें प्राप्त हुई। आपके कार्यालय द्वारा वर्ष भर में आयोजित कार्यक्रमों के आयोजन की झलकियाँ सुंदर फोटो सहित इस पत्रिका को चार चाँद लगाती है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख उच्च कोटि के हैं। इस कार्य के लिए हम आपके संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देते हैं।

पत्रिका प्रेषण हेतु बहुत–बहुत धन्यवाद।

जग मोहन भारद्वाज
तकनीकी अधिकारी
हिम एवं अवधाव संस्थान, चण्डीगढ़

महोदय,

आपके कार्यालय की विभागीय हिंदी गृह पत्रिका **सतलुज धारा** की प्राप्ति हुई। पत्रिका प्रेषण के लिए आपका सहृदय धन्यवाद। आपके कार्यालय की पत्रिका के पिछले अंक को निगम मुख्यालय द्वारा 'ख' क्षेत्र में पुरस्कृत किया गया। इस हेतु संपादक मंडल से जुड़े सभी महानुभावों को असंख्य बधाइयाँ। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर, ज्ञानवर्धक, सूचनाप्रद एवं उपयोगी हैं। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, कहानियाँ, कविताएँ एवं अन्य रचनाएँ अधिकारियों एवं कर्मचारियों की प्रतिभा एवं राजभाषा हिंदी में उनकी व्यापक अभिरुचि दर्शाती हैं। विभिन्न कलेवरों से युक्त पत्रिका का यह अंक भी काफी उत्तम है। रचनाओं में **कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चेहरा, मिलावट का कहर,** राजभाषा हिंदी के विकास में भाषा प्रौद्योगिकी का योगदान, **भाग्य और पुरुषार्थ** तथा **चर्च ही नहीं मंदिर भी है गोवा में** विशेष रूप से पठनीय है। **सतलुज धारा** के सफल प्रकाशन हेतु तथा पत्रिका के आगामी अंक के लिए संपादक एवं संपादक मंडली को शुभकामनाएं।

एस.वी.शास्त्री
सहायक निदेशक (राजभाषा प्रभारी)
क्षेत्रीय कार्यालय, तृश्शूर

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित विभागीय हिंदी पत्रिका **सतलुज धारा** का वर्ष 2017–18 का अंक प्राप्त हुआ। हार्दिक धन्यवाद। सर्वप्रथम 'ख' क्षेत्र में वर्ष 2017–18 में राजभाषा हिंदी के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत किए जाने हेतु बधाई स्वीकार करें। पत्रिका का मुख्यपृष्ठ अत्यंत मनोरम है। पत्रिका की साज–सज्जा आकर्षक सुरूचिपूर्ण एवं मुद्रण उच्च कोटि का है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ स्तरीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं तथापि **बावरा मन, बौराया मौसम, मां के लिए प्यार भरे चंद शब्द, मैं औरत हूं, चेहरा, दम घोटती दिल्ली, चर्च ही नहीं मंदिर भी है गोवा में** आदि रचनाएं अत्यंत सराहनीय हैं।

पत्रिका निःसंदेह सभी दृष्टियों से राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने में सक्षम है। पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

गुंजन पांडे
सहायक निदेशक
क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका **सतलुज धारा** के नए अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद।

वर्ष 2016–17 में राजभाषा में श्रेष्ठ कार्यान्यवन के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने पर हार्दिक बधाई। कमाई, परख, अपना किरदार, सुहाना सफर, जिन्दगी, डूबता सूरज, माँ के लिए प्यार भरे चन्द शब्द, मैं औरत हूँ, एक सैनिक का जज्बा आदि रचनाएँ उल्लेखनीय व विचारोत्तेजक हैं। इसके अलावा चेहरा, आलस मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है तथा प्रसिद्ध कहानी खरगोश की चतुराई का कठपुतलियों के माध्यम से नए रूप में वर्णन अत्यंत जीवंत व रोचक है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

संगीता वशिष्ठ
प्रभारी (राजभाषा अनुभाग)
चण्डीगढ़

महोदय,

आपके कार्यालय की विभागीय हिंदी पत्रिका **सतलुज धारा** वर्ष 2017–18 का अंक सहर्ष प्राप्त हुआ।

सर्वप्रथम आपको वर्ष 2016–17 में राजभाषा के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए मिले विभिन्न पुरस्कारों हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका की साज–सज्जा व गेट अप बहुत ही आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित संपूर्ण रचनाएँ बहुत ही बढ़िया, ज्ञानवर्धक व उच्च कोटि की हैं।

पत्रिका के शानदार प्रकाशन हेतु संपूर्ण संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका निरंतर सफलता के पथ पर अग्रसर रहे ऐसी हमारी शुभकामनाएं है।

केसर सिंह
सहायक भविष्य निधि आयुक्त (राजभाषा)
कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, चण्डीगढ़

महोदय,

आपके कार्यालय से गृह पत्रिका **सतलुज धारा** वर्ष 2017–18 की एक प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद।

महोदय पत्रिका का मुख्य आवरण प्राकृतिक सौंदर्य की मनमोहक गाथा गाता सा प्रतीत हो रहा है। शहरी जीवन से इतर शान्त, स्वच्छ और शीतल वातावरण का मनोरम दृश्य बहुत ही मर्मस्पर्शी है। भारतीय धरा के ऐसे अद्भुत चित्रों के जरिए मानव जाति जीवित और दीर्घायु की आशा करती है। चंडीगढ़ के पारंपरिक चित्रों ने हम सब को राष्ट्रीय धरोहर की विशालता से पुनः परिचित करा दिया है। पत्रिका को निःसंदेह नए रूप व स्वरूप में प्रस्तुत करना हमारी मौलिकतामयी सृजनशीलता की पराकाष्ठा को प्रतिबिंबित करता है। पत्रिका की पृष्ठीय साज–सज्जा उच्च कोटि की है। पत्रिका में शामिल किए गए लेख एवं कविताएं ज्ञानवर्धक हैं। हमारे भारतीय समाज के विभिन्न संदर्भों को बड़े ही सरल ढंग से प्रस्तुत किया गया है जो कि हम सबके लिए बहुत ही प्रेरणादायी है। अधिकारी (वर्ग) के द्वारा प्रस्तुत किए गए विचार भी हम सबके लिए मार्गदर्शक हैं।

इस पत्रिका से जुड़े सभी मित्र बंधुओं को शुभकामनाएँ पहुँचे। आशा की जाती है कि भविष्य में भी प्रकाशित होने वाली पत्रिका हम सब के लिए प्रेरणादायक साबित होगी।

त्रिरत्न
उप निदेशक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका **सतलुज धारा** का 2017–18 अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका की संपूर्ण सामग्री प्रशंसनीय है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ व आंतरिक सज्जा भी आर्कषक है। 'ख' क्षेत्र में वर्ष 2016–2017 में श्रेष्ठ गृह पत्रिका **सतलुज धारा** को प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने पर 'सतलुज धारा परिवार' को बहुत–बहुत बधाई। चन्द्र भूषण की **माँ के लिए प्यार भरे चंद शब्द**, कृष्णा कुमारी की **मैं औरत हूँ**, राजेश शर्मा की **कठपुतली कला–खरगोश की चतुराई**, पप्पु कुमार सिन्हा की **राजभाषा हिन्दी के विकास में भाषा प्रोद्योगिकी का योगदान** मनोज कोटनाला की **भाग्य और पुरूषार्थ** तथा जसवंत कुमारी की **बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान में जनसहभागिता का महत्व** आदि रचनाएं विशेष तौर पर सराहनीय हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

विजय कुमार गर्ग
सहायक लेखा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी), चण्डीगढ़

उप निदेशक (राजभाषा), उत्तरी अंचल के पद से संयुक्त निदेशक (राजभाषा), मुख्यालय क.रा.बी. निगम के पद पर पदोन्नति उपरांत श्री श्याम कुमार के विदाई समारोह की भावपूर्ण यादें...

जापानी गार्डन, चण्डीगढ़

सतलुज धारा 2018-19

'सतलुज धारा' की अविरल यात्रा में हमारा सहयात्री बनने के लिए आपका हार्दिक धन्यवाद।

हमें आपके सुझाव, मार्गदर्शन एवं प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।